Called upon to rid the affected locality of the prowling man-eaters, Anderson the hunter rises to the occasion. Step by step he takes the reader through the adventure, explaining his modus operandi and the terrible excitement and lurking danger. Stirring tales of wild animal's cunning pitted against human wit and presence of mind told by the ace hunter and master story-teller himself.

Kenneth Anderson (1910-74) hailed from a Scottish family settled in India for six generations. His love for the denizens of Indian jungle led him to big game hunting and eventually to writing real-life adventure stories. His book are hailed as classics of jungle lore.

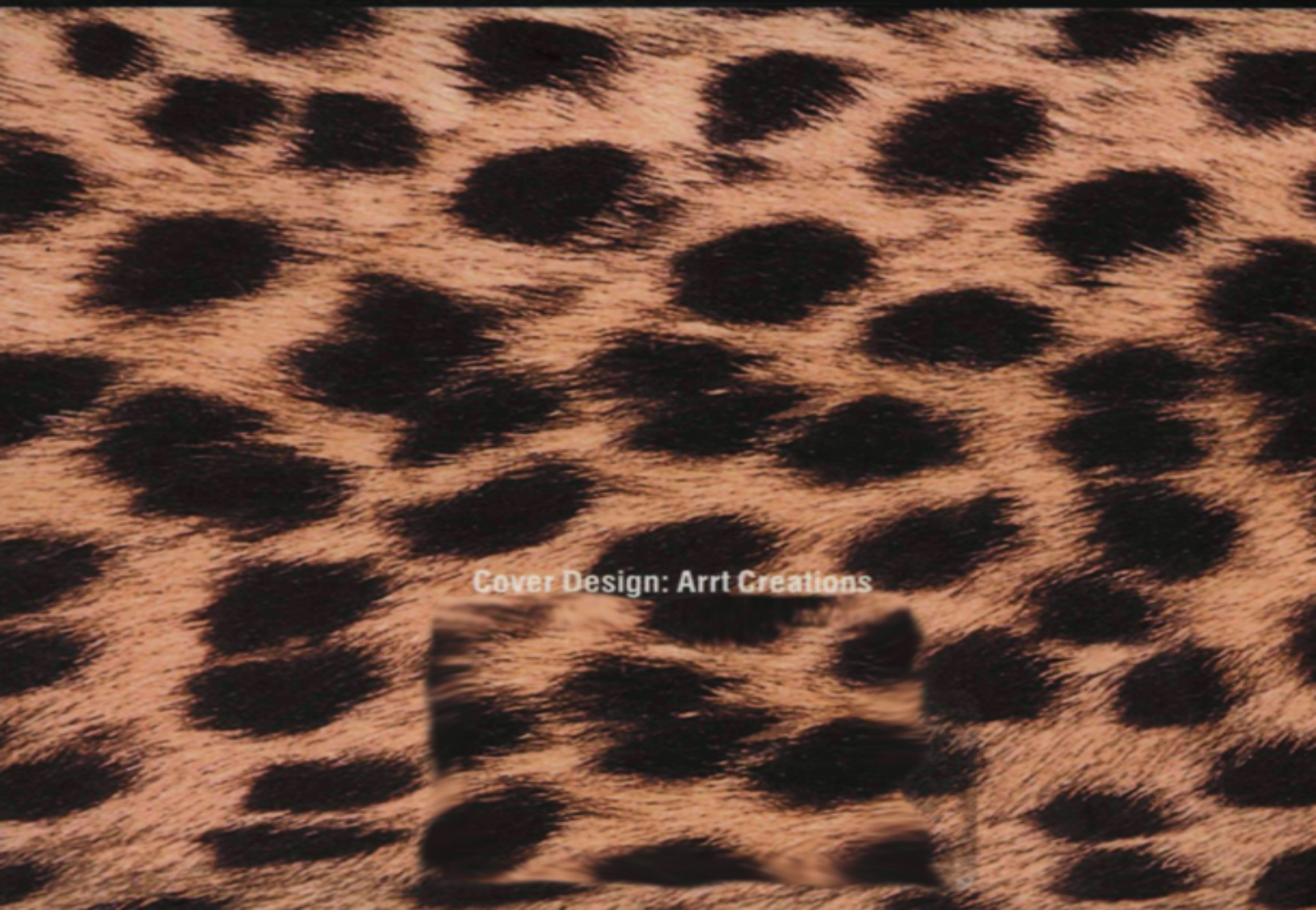

Copyrighted Material

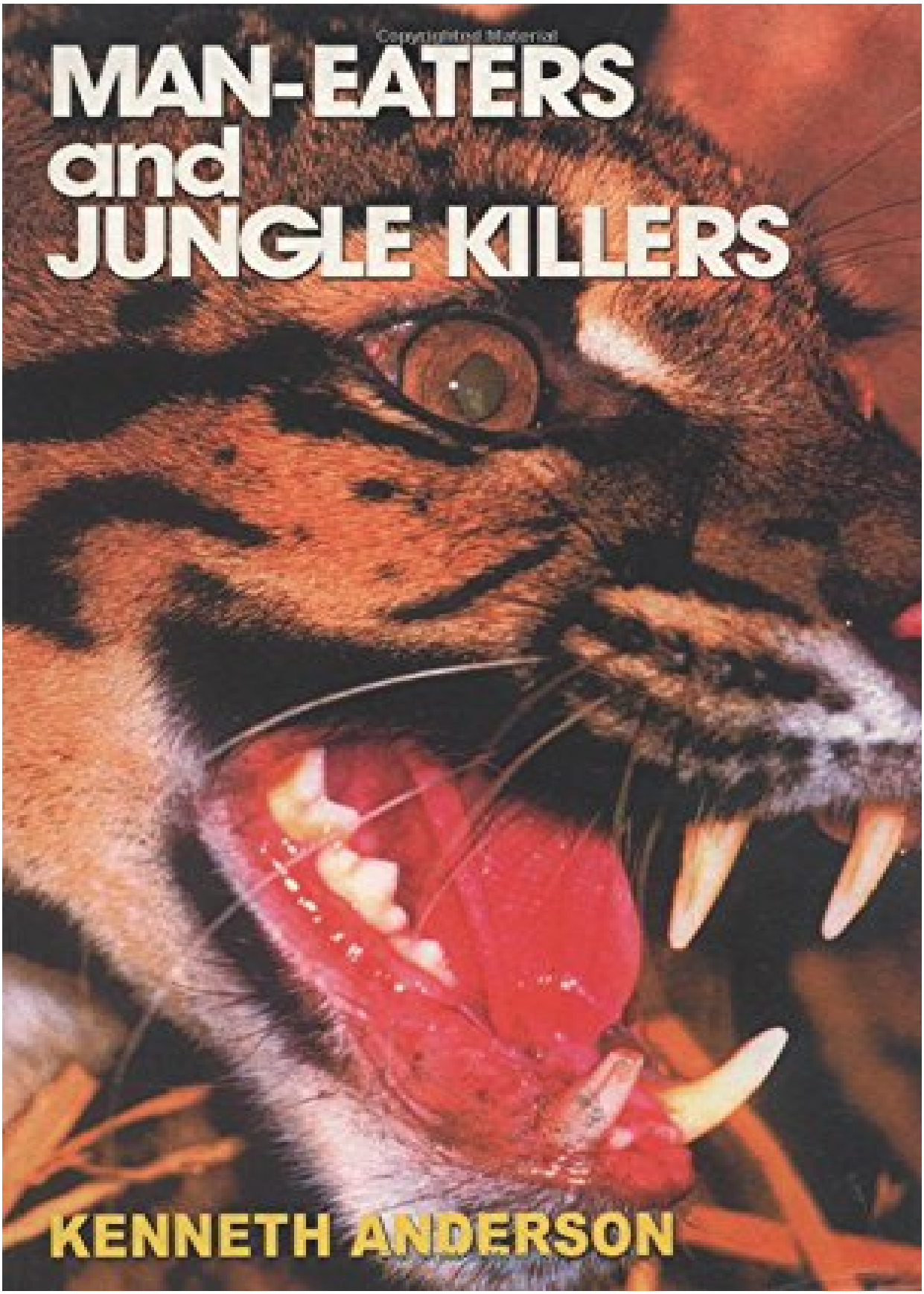

Table of Contents

शीर्षक पेज
कॉपीराइट पृष्ठ
अंतर्वस्तु
परिचय
कैम्पेकराई का लुटेरा
आलम बक्स और बड़ा काला भालू
मामदुर नरभक्षी
गैरहैट्टी का क्रॉस्ड-टस्कर
संगम पैंथर
The Ramapuram Tiger
मुदियानूर का महान पैंथर
रोजनगरि का हमलावर

आदमखोर और जंगल के हत्यारे

उसी लेखक द्वारा

भारतीय जंगल की कहानियाँ
आदमखोर की पुकार
शिवानीपल्ली का काला पैंथर
बाघ की दहाड़
बहुत पहले के जंगल

आदमखोर और जंगल के हत्यारे

केनेथ एंडरसन

Rupa & Co

टाइपसेटिंग कॉपीराइट © रूपा पब्लिकेशन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2002

यह रूपा पेपरबैक 2002 में पुनर्मुद्रित किया गया था।

प्रथम प्रकाशन 2002
चौथा संस्करण 2011

रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित, 7/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110 002

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा, पुन: प्रस्तुत, संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

अंतर्वस्तु

परिचय
केम्पेकराई का लुटेरा
आलम बक्स और बड़ा काला भालू
मामंदुर नरभक्षी
गेरहेट्टी का क्रॉस्ड-टस्कर
संगम पैंथर
The Ramapuram Tiger
मुदियानूर का महान पैंथर
राजनगर का हमलावर

परिचय

समय और सभ्यता निरंतर आगे बढ़ते जा रहे हैं, अपने साथ औद्योगीकरण, जीवन स्तर में सुधार और अधिक सुख-सुविधाएँ ला रहे हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि इसकी कीमत प्रकृति के प्रति घटती सराहना के रूप में चुकानी पड़ रही है। मानव निर्मित परियोजनाओं और निर्माणों ने प्रकृति के चेहरे को दागदार और विकृत कर दिया है। दिन के हर मिनट, सदियों पुराने जंगल के विशालकाय वृक्ष, जिनमें से कुछ सदियों पुराने हैं, मनुष्य के हाथों से काट दिए जाते हैं, या तो उनकी लकड़ी के लिए या यांत्रिक संस्कृति के निरंतर विस्तार के लिए जगह बनाने के लिए: एक ऐसी स्थिति जिसमें केवल कुछ ही लोग खुश हैं और जो कभी-कभी सबसे बर्बर अत्याचारों से भरी होती है।

वनों के विशालकाय वृक्षों के विनाश के साथ-साथ अन्य चीजें भी लुप्त हो रही हैं: जंगली जानवर, पक्षी और वे सभी जीव-जंतु जिन्होंने कभी हमारी धरती को सुशोभित किया था। वे सब लुप्त हो रहे हैं, और बहुत तेजी से!

कुछ समय पहले अमेरिकी मैदानों का भी यही हाल था, जो कभी अनगिनत बाइसन का घर हुआ करते थे और अब अपने प्राचीन निवासियों से पूरी तरह खाली हो चुके हैं। अफ्रीका भी तेज़ी से इसी राह पर चल रहा है। वे असंख्य जंगली जानवर कहाँ हैं जो कभी उस अद्भुत भूमि को सुशोभित करते थे? कुछ अभी भी बचे हैं; लेकिन बहुत पहले ही अधिकांश जानवरों की हड्डियाँ अफ्रीका की तेज़ धूप में सूख रही थीं, जो लालची, बेईमान और धन-लोभी शिकारियों की गोलियों से हज़ारों मील तक बिखरी पड़ी थीं—वे लोग जो कभी-कभी व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए हज़ारों की संख्या में विशाल हाथियों का भी शिकार करते थे।

भारत को भी बहुत कुछ खोना पड़ा है, क्योंकि यहाँ के वन्यजीवों की विविधता और संख्या में कमी चिंताजनक रही है। मैं ऐसे इलाकों को जानता हूँ जहाँ 1930 तक रात में बाघ की कराह या तेंदुआ की कर्कश आवाज़ें आम थीं, जिनके बाद हमेशा सांभर और हिरण परिवार के अन्य सदस्यों की चेतावनी भरी पुकार सुनाई देती थी। अब रात सन्नाटे में गुज़रती है, सिवाय शायद लगातार चहचहाते झींगुर के। जहाँ कभी बाघ के पदचिह्न और अन्य जंगली जानवरों के रास्ते सुबह उन जीवों की कहानी बयां

करते थे जो रात में वहाँ से गुज़रे थे, वहाँ आज कुछ खरगोशों के छोटे-छोटे पदचिह्न शायद यह संकेत देते हैं कि कम से कम वे विलुप्त नहीं हुए हैं।

मैं इस बात पर बहस में नहीं पड़ना चाहता कि किसी देश को उसके वन्य जीवन के लुप्त होने से इतना बड़ा नुकसान कैसे और क्यों होता है। जिसने कभी जंगल को जाना और उससे प्रेम नहीं किया, उसकी शांति और उसके निवासियों के महत्व को नहीं समझा, वह इन भावनाओं को कभी नहीं समझ सकता, न ही उस अपूरणीय क्षति और दुःख को महसूस कर सकता है जो उन लोगों को होता है जो कभी परिचित रूपों की तलाश करते हैं जो अब वहां नहीं हैं, या उन परिचित ध्वनियों को व्यर्थ ही सुनने की कोशिश करते हैं जो कभी उनके कानों को संगीत की तरह लगती थीं, लेकिन अंत में उन्हें एक विनाशकारी सन्नाटा ही मिलता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह समय आएगा जब आज जो कुछ जीवित प्राणी अपनी प्राकृतिक अवस्था में बचे हैं, वे भी विलुप्त हो जाएंगे, और मनुष्य को तब, और केवल तभी, बहुत देर से एहसास होगा कि उसने कितनी अनमोल संपत्ति को लापरवाही से खो दिया है।

मैं ये कहानियाँ न केवल इस आशा से लिखता हूँ कि ये साहसी लोगों को कुछ हद तक आनंद प्रदान कर सकें, बल्कि इसलिए भी कि ये भारत के विशाल जंगलों में और उसके आसपास रहने की परिस्थितियों को दर्शा सकें, और यह भी दिखा सकें कि किसी भी व्यक्ति के लिए अपने कौशल और दृढ़ता को 'शिकार' के उत्तम खेल में प्रदर्शित करने का जो सबसे बड़ा अवसर था, वह अब हमेशा के लिए लुप्त होने की प्रक्रिया में है।

एक

केम्पेकराई का लुटेरा

अगर आप दो समानांतर पर्वत श्रृंखलाओं की कल्पना करें, जिनकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई चार हजार फीट या उससे अधिक है, और उनके बीच लगभग पांच मील चौड़ी घाटी है, जो ऊबड़-खाबड़ चोटियों को छोड़कर घने जंगलों से ढकी है, तो आपके मन में मेरी कहानी की पृष्ठभूमि की छवि बन जाएगी। यह कहानी दक्षिण भारत में मद्रास प्रेसीडेंसी के उत्तरी सलेम जिले में घटित होती है।

पहाड़ उत्तर से दक्षिण की ओर फैले हुए हैं, और पूर्वी पर्वत श्रृंखला दोनों में अधिक ऊंची है, जिसका दक्षिणी छोर 4,500 फीट से अधिक ऊँची गुथेरायन चोटी पर जाकर समाप्त होता है। इसकी ढलानों पर एक सुंदर छोटा वन लॉज है, जिसे कोडेकराई बंगलो के नाम से जाना जाता है, जो दुनिया के कुछ सबसे खूबसूरत दृश्यों के बीच स्थित है। चारों ओर लहरदार पहाड़ियाँ और उभरी हुई चट्टानें दिखाई देती हैं। सुबह की धुंध के उमड़ते बादलों के ऊपर से सूरज गुलाबी रंग की छटा बिखेरता हुआ उगता है, और अंततः पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के पीछे नारंगी-कांस्य रंग की परछाइयों में अस्त हो जाता है। फिर चंद्रमा अपनी फीकी चमक के साथ उदय होता है, पहाड़ियों की चोटियों और बाद में गहरी घाटियों को अपनी प्रकाशमयी छड़ी से रोशन करता है। रात भर वह आकाश में विराजमान रहती है, नीचे के घने जंगलों में होने वाली कई त्रासदियों की मूक साक्षी बनी रहती है। मरते हुए सांभर की चीख या चित्तीदार हिरण की तीखी चीख अक्सर उसी पूर्णिमा की रात व्यर्थ ही गूंजती है, जब वे भूखे बाघ के पंजों के नीचे जंगल की ज़मीन पर अपना खून बहा देते हैं।

बीस वर्ष से भी अधिक समय पहले मुझे अफ़गानिस्तान के राजा अमानुल्लाह के भाई से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिन्हें उनके वतन से निर्वासित कर दिया गया था और वे कोडेकराई बंगले में रहते थे, जो उनका पसंदीदा निवास स्थान था। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें वह स्थान बहुत प्रिय था, वहाँ का नज़ारा उन्हें उनके प्रिय अफ़गानिस्तान की याद दिलाता था, बस फर्क इतना था कि कोडेकराई की पहाड़ियाँ जंगलों से ढकी थीं, जबकि उनके देश की पहाड़ियाँ बंजर थीं। लेकिन दोनों ही स्थान विशालता और स्वतंत्रता का प्रतीक थे।

केम्पेकराई पश्चिमी पर्वत श्रृंखला की निचली ढलानों पर बसा एक छोटा सा गाँव है। इसके चारों ओर कुछ खेत हैं और खेतों के पार घने बांस का जंगल है, जिसे एक पथरीली धारा काटती हुई घाटी के मध्य से बहती है।

इस घाटी को, जिसे मैंने 'मकड़ी घाटी' नाम दिया है क्योंकि यहाँ की संकरी पगडंडी पर विशाल मकड़ियाँ अपने जाले बुनती हैं, जो धारा के किनारे से होकर गुजरती है, दक्षिण की ओर फैलकर एक बड़े भूभाग में बदल जाती है जिसे मोरप्पुर घाटी के नाम से जाना जाता है, जहाँ पथरीली धारा अंततः कावेरी नदी से लगभग दस मील दूर सोपथी नामक स्थान पर चिन्नार नदी में मिल जाती है।

मैंने इस क्षेत्र का विस्तृत वर्णन इसलिए किया है ताकि पाठक थोड़ी कल्पनाशीलता से इसकी मनमोहक सुंदरता को महसूस कर सकें: सड़ती हुई वनस्पति की दुर्गंध, घने जंगल का धुंधलका, अपने शिकार की तलाश में भटकते आदमखोर बाघ की दूर से आती आधी दहाड़, आधी कराह, उन रोमांचकारी आवाज़ों के बाद छा जाने वाली भयानक और भयावह खामोशी, और अंत में झाड़ियों में होने वाली हल्की सरसराहट, वह अनिश्चित सी रेंगती हुई चीज़ जो आदमखोर बाघ की है, जो आपकी उपस्थिति से अवगत होते ही आपको देखता है और अपनी प्रजाति के सदियों पुराने शिकार कौशल को मनुष्य की सभ्य बुद्धि के विरुद्ध आजमाता है।

लेकिन चलिए मैं अपनी कहानी शुरू करता हूँ।

केम्पेकराई में भारी भय का माहौल था, क्योंकि एक आदमखोर बाघ प्रकट हुआ था, और उसके कुछ ही निवासियों में से तीन पहले ही उसका शिकार करने के लिए जा चुके थे।

पहला शिकार, एक बूढ़ा पुजारी, एक महीने पहले मुत्तूर (जो यहाँ से ग्यारह मील दूर है) से केम्पेकराई आया था। उसका फिर कभी पता नहीं चला। इन इलाकों में हाथी बहुतायत में पाए जाते हैं और कभी-कभार ही इंसानों को मार डालते हैं, इसलिए जब पुजारी केम्पेकराई नहीं पहुँचा, तो एक खोज दल मुत्तूर की ओर रवाना हुआ। शायद दल के सदस्यों को उम्मीद थी कि उन्हें किसी हाथी के थाली जैसे पदचिह्न मिलेंगे और कुचले हुए अवशेष मिलेंगे। लेकिन उन्हें न तो कुछ मिला और न ही कुछ। केम्पेकराई से लगभग पाँच मील दूर उन्हें एक नर बाघ के पदचिह्न, रास्ते के किनारे थोड़ा सा खून, बूढ़े आदमी की लाठी और उसकी धोती मिली—बस इतना ही।

लगभग दस दिन बाद, सूर्यास्त के समय, एक महिला रात के लिए अपना घड़ा भरने के लिए सामुदायिक कुएँ पर गई। वह कभी वापस नहीं लौटी। रात आठ बजे उसके पति और उसके कुछ दोस्त लालटेन और लाठियाँ लेकर उसे ढूँढ़ने कुएँ पर गए। पीतल का घड़ा, आधा भरा हुआ, कुएँ से लगभग बीस फीट दूर एक तरफ़ पड़ा था, जहाँ महिला ने गाँव लौटते समय उसे गिरा दिया था। उसका कोई पता नहीं चला।

अगली सुबह, एक तलाशी दल गठित किया गया, जिसने महिला की साड़ी, बाद में एक चांदी की पायल और अंत में उसके अवशेष बरामद किए। उसका सिर एक झाड़ी के नीचे पड़ा था; उसके हाथ और पैर इधर-उधर बिखरे हुए थे; उसके शरीर के शेष भाग में कुतरी हुई हड्डियों की अच्छी-खासी संख्या से पता चलता है कि बाघ वास्तव में भूखा था और उसने भरपूर भोजन किया था।

एक महीना घिसटता चला गया। केम्पेकराई एक घिरे हुए किले की तरह लग रहा था। न कोई अंदर आ सकता था, न कोई बाहर जा सकता था। कुछ झोपड़ियों के आस-पास का इलाका, और कुछ मामलों में तो उनके अंदरूनी हिस्से भी, इंसानी गंदगी से बदबूदार थे। क्या कोई हत्यारा आस-पास ही नहीं छिपा था, जो पहले शिकार का इंतज़ार कर रहा हो जो शौच के लिए भी बाहर निकलने की हिम्मत करे? रात के समय स्थिति और भी खतरनाक हो जाती थी; लोग, अपने मवेशियों और कभी-कभी

अपने कुत्तों के साथ, तंग झोपड़ियों में बंद रहते थे, जिनके दरवाज़े लकड़ी के लट्ठों या नदी से लाए गए गोल पत्थरों से बंद किए जाते थे। लोगों की दयनीय परिस्थितियों के कारण झोपड़ियाँ हर दिन और भी गंदी होती जा रही थीं।

लेकिन बेहतरीन सावधानियां भी कभी-कभी मनचाहा परिणाम देने में नाकाम रहती हैं। मेरे पुराने दोस्त बायरा, जो पुजारी थे, के दामादों में से एक, मारा, ऐसी अस्वच्छ परिस्थितियों में रहने से कतराता था। उसने अपनी पत्नी से कहा था कि चाहे आदमखोर बाघ हो या न हो, वह अपने घर के अंदर गंदगी नहीं फैलाएगा। वह हर रात शौच के लिए बाहर जाता और लौट आता था। फिर एक रात वह हमेशा की तरह उसी उद्देश्य से बाहर गया, लेकिन इस बार वह वापस नहीं लौटा। उसकी पत्नी, जो अंदर बेसब्री से इंतजार कर रही थी, मानती है कि उसने एक धीमी सी आवाज और एक कर्कश गड़गड़ाहट सुनी, लेकिन इससे ज्यादा कुछ नहीं।

पंद्रह मिनट बाद उसने शोर मचाया। कोई उसकी मदद के लिए नहीं आया, क्योंकि किसी की हिम्मत नहीं थी। दीवारों से घिरी झोपड़ियों में रहने वालों ने उसकी चीखें सुनीं। वे जानते थे कि अब मारा को बचाना नामुमकिन था। वह मर चुका था, लेकिन वे ज़िंदा थे! बाहर जाकर उसके साथ मृतकों में शामिल होने का क्या फ़ायदा! इसलिए वे अंदर ही रहे और उस लंबी रात के बाकी समय तक उसकी चीखें सुनते रहे।

अगली सुबह, मारा के अवशेषों को खोजने का एक अधूरा प्रयास किया गया, और यह प्रयास असफल ही रहता अगर बाघ गाँव से दो सौ गज की दूरी पर झाड़ियों में जाकर बेधड़क अपना पेट न भर लेता। कुएँ पर गई महिला की तुलना में मारा का थोड़ा अधिक अवशेष बचा था। शायद उसका मांस अधिक सूखा था, या शायद बाघ को भूख कम लगी थी। कौन जाने? कम से कम उसका सिर और धड़ तो साबुत थे।

अपने दामाद की दुखद घटना से दुखी होकर, मेरे पुराने मित्र बायरा, जो उस समय केम्पेकराई में थे, अगले दिन पेन्नाग्राम गाँव तक अठारह मील की जोखिम भरी यात्रा पर निकल पड़े। कोई भी उनके साथ नहीं गया, इसलिए वे अकेले ही गए और आदमखोर को देखे या उसकी आवाज़ सुने बिना ही यात्रा पूरी की। पेन्नाग्राम पहुंचकर उन्होंने अपने पुराने परिचित रंगा से मुलाकात की और दोनों बस से बेंगलोर आ गए। उसी रात 9 बजे मुझे दरवाजे पर कुछ आवाज़ें सुनाई दीं और बाहर जाकर मैं अपने पुराने जंगल के साथियों को फिर से देखकर आश्चर्यचकित और प्रसन्न हुआ।

इस बीच, सलेम जिले ने शारीरिक, नैतिक और निस्संदेह आध्यात्मिक उत्थान के लिए 'शराबबंदी' को मार्गदर्शक नीति के रूप में अपना लिया था। लेकिन मेरे दोनों आगंतुक, जो सीधे-सादे, ईमानदार वनवासी थे और शारीरिक, नैतिक या आध्यात्मिक रूप से इतने ऊंचे दावे नहीं करते थे, उन्होंने आधा गिलास शुद्ध ब्रांडी पीकर आनंद लिया। इस प्रकार तरोताज़ा होकर, उन्होंने शुरुआत से बात शुरू की, या यूँ कहें कि बायरा ने शुरू की, और आदमखोर के आने और उसके कारनामों का संक्षिप्त इतिहास सुनाया, जैसा कि मैंने आपको बताया है, और अंत में यह स्पष्ट रूप से कहा कि उसके दामाद, मारा का बदला लिया जाना चाहिए और यह काम मुझे करना है।

उस तर्क और मुझ पर उसके बचकाने भरोसे के सामने, मुझे कोई ठोस जवाब नहीं सूझा। तीन दिन बाद मैं पेन्नाग्राम के रास्ते पर था, जहाँ मैंने स्टूडेबेकर कार छोड़ दी। हमने स्थानीय बाज़ार से कुछ सामान खरीदा और कुछ ही घंटों में हम तीनों अठारह मील पैदल चलकर केम्परकाराई नामक छोटे से गाँव की ओर चल पड़े, जहाँ कार नहीं जा सकती थी।

अपनी मंज़िल से कुछ मील पहले हमें पगडंडी पर बाघ के ताज़े पदचिह्न मिले। कई दिनों से इस रास्ते से कोई भी यात्री नहीं गुज़रा था, और पदचिह्न साफ़ थे। मैंने

ध्यान से नाप लिया और पाया कि ये पदचिह्न औसत आकार के नर बाघ के थे। इससे यह पता नहीं चला कि पदचिह्न बनाने वाला जानवर बूढ़ा था या सामान्य वयस्क था, और न ही उस समय हममें से कोई यह कह सकता था कि वह आदमखोर बाघ था या महज़ कोई और बाघ जो वहां से गुज़र रहा था।

केम्पेकराई के कुछ निवासी बायरा द्वारा मुझे दी गई जानकारी में कोई अतिरिक्त जानकारी नहीं दे सके। उनका मानना था कि आदमखोर एक विशालकाय जानवर था, लेकिन ज़ाहिर है, जब आम लोग घोर आतंक की स्थिति में होते हैं, जैसा कि पिछले कुछ हफ्तों से इन बेचारे लोगों के साथ हो रहा था, तो वे अपने उत्पीड़क को अमानवीय चालाकी और अकल्पनीय शारीरिक शक्ति और आकार का मानने लगते हैं।

अब समस्या यह थी: आगे कैसे बढ़ा जाए और क्या किया जाए? जवाब था: शिकार का इंतज़ार करना, या किसी जीवित जानवर को चारा बनाना। इस बाघ ने ग्रामीणों की एक भी गाय या अन्य पालतू जानवर को नहीं मारा था। कम से कम अभी तक तो इसने केवल मनुष्यों को ही मारा था। सवाल यह था: क्या यह किसी जानवर को चारा बनाएगा, या फिर चारा मनुष्य होना चाहिए? जिसका एकमात्र जवाब यही था कि अगर चारा मनुष्य हो, तो वह मेरे अलावा कोई और नहीं हो सकता, एक ऐसा जवाब जिसके बारे में सोचना भी मुझे बेहद नापसंद था।

बायरा, रंगा और मैंने लगातार चाय पीते हुए गहन विचार-विमर्श किया और अंततः एक समाधान निकलने लगा। मैंने सोचा कि हमें जानवरों को चारा बनाकर देखना चाहिए, लेकिन उनका मानना था कि इंसान को चारा बनाकर—यानी मुझे—तुरंत परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। मेरी दिली इच्छा थी कि वे किसी और निष्कर्ष पर पहुँचे होते।

तीन सदस्यीय समिति में, उनमें से कोई भी दो सदस्य भारी बहुमत बना लेते हैं। तीसरे सदस्य को झुकना ही पड़ता है, लेकिन मैं अपनी बात मनवाने में कामयाब रहा और इस बात पर सहमत हो गया कि मानव चारा के साथ-साथ, कुछ चुनिंदा स्थानों पर कुछ युवा बैलों को अतिरिक्त आकर्षण के रूप में आज़माने में कोई बुराई नहीं है।

केम्पेकराई में भैंसें नहीं मिलीं, इसलिए मैंने दो बैल खरीदे। एक को हमने उस जगह बांध दिया जहाँ हमें जानवरों के पैरों के निशान मिले थे, और दूसरे को घाटी के निचले हिस्से में बहने वाली धारा के किनारे बांध दिया। मैं कुएँ की पत्थर की मुंडेर पर बैठ गया, मेरी पीठ उस लकड़ी के खंभे से टिकी थी जिस पर पानी निकालने के लिए रस्सी लगी थी। मैंने रस्सी के एक सिरे पर एक धातु का घड़ा बांध दिया, जिसे मैंने अपने पास मुंडेर पर रखा। ताज़ा पानी पीना हमेशा बोतल के पानी से बेहतर होता है।

कुएँ से लगभग पचास गज की दूरी पर जंगल चारों ओर फैला हुआ था, सिवाय एक दिशा के। यहाँ किसी ने एक दर्जन या उससे अधिक पपीते के पेड़ लगाए थे। कुएँ से कभी-कभार पानी मिलने से इन पेड़ों के चारों ओर घास की झाड़ियाँ उग आई थीं, जिनमें कहीं-कहीं कुछ छोटी झाड़ियाँ भी थीं। दिन के उजाले में ये झाड़ियाँ नगण्य प्रतीत होती थीं, लेकिन जैसे-जैसे शाम ढलती और अंधेरा होने लगता, मुझे लगने लगा कि ये आदमखोर सांप के लिए आने का एक आसान रास्ता बन गई हैं, जो आसानी से पेट के बल रेंगते हुए मेरे पास आ सकता है, और मुझे उसकी मौजूदगी का पता भी नहीं चलेगा।

जब यह विचार मेरे मन में आया, तो मैंने कुएं के दूसरी तरफ अपनी स्थिति बदल ली, और सामने वाले लकड़ी के सीधे खंभे को पीठ के सहारे के रूप में इस्तेमाल किया, ताकि अब मेरा मुख पपीतों की ओर हो।

मैंने खुद को सबक सामने लाने का फ़ैसला इसलिए किया क्योंकि हम सौभाग्य से पूर्णिमा से ठीक पहले वहाँ पहुँचे थे। चाँद का उदय लगभग सूर्यास्त के समय ही हुआ, लेकिन मैं भूल गया था कि उस अंधेरे कुएँ पर अपनी रोशनी बिखेरने से पहले चाँद को पूरब की पहाड़ियों की चोटी तक पहुँचना था। ऐसा रात 8 बजे के बाद ही हो पाता और मैंने अपने जीवन के सबसे बुरे नब्बे मिनट उस बहुप्रतीक्षित चाँद की पहली किरणों का इंतज़ार करते हुए बिताए—मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता कि मैं कितना बेसब्र और बेचैन था।

इस अनुभव ने मुझे गुम्मलपुर की झोपड़ियों के सामने उस भयानक पैंथर की प्रतीक्षा में बिताए उन खौफनाक पलों की याद दिला दी, और उस दिन की भी याद दिला दी जब मैं सुदूर चमाला वन क्षेत्र में सागौन के पेड़ की ओर पीठ करके बैठा था, उसी तरह के आदमखोर की एक झलक पाने की उम्मीद में;* और मैं सोचने लगा कि आखिर किस मूर्खता ने मुझे फिर से ऐसी मुश्किल स्थिति में डाल दिया था। फिर मेरी समझ ने मुझे बताया कि शायद यही एकमात्र रास्ता था।

अंधेरा सन्नाटा पसरा हुआ था, और जानी-पहचानी चिड़िया भी मेरे पास नहीं आई। कुछ चमगादड़ कुएँ में उतरकर, दिनभर की गर्मी के बाद अपनी प्यास बुझाने के लिए, साफ़ पानी को हल्के-हल्के चुम्बनों की तरह पी रहे थे। मैंने अपनी आँखें गड़ाकर न केवल पपीते के पेड़ों की ओर, बल्कि चारों ओर देखा। कल्पना ने आदमखोर सांप की आकृति गढ़ दी, जो धीरे-धीरे रेंगता हुआ, चुपके से मेरी ओर आ रहा था, मेरी दृष्टि सीमा से ठीक बाहर। मैं दीवार की मुंडेर पर चिपका बैठा रहा, मेरी .405 पिस्तौल तैयार थी, और अंगूठा टॉर्च के स्विच पर था।

ऐसे समय में मनुष्य के मन में उठने वाले विचार अक्सर विचित्र और समझ से परे होते हैं, लेकिन मैं आपको उनसे क्यों परेशान करूँ? बाघ ने पहले तो संभावित प्रतिशोधी भाग्य की भूमिका निभाई। अन्य समयों में वह लगभग चेतना से ओझल हो गया।

आठ बजने के कुछ ही देर बाद पूर्वी पर्वत श्रृंखला के ऊपर का क्षितिज अधिक स्पष्ट होने लगा; आकाश में एक हल्की सी चमक फैल गई, जिससे तारे धुंधले पड़ गए, और फिर चंद्रमा प्रकट हुआ, जिससे आसपास का वातावरण और मेरी घबराहट दोनों ही शांत हो गईं। जैसे-जैसे चंद्रमा आकाश में ऊपर चढ़ता गया, दृश्य और भी उज्ज्वल होता गया, यहाँ तक कि मैं पपीते के पेड़ों के तनों के बीच से लगभग सब कुछ स्पष्ट रूप से देख पा रहा था। रात के लगभग आधे हिस्से तक मेरी निगरानी की शांति में किसी भी आवाज ने खलल नहीं डाला।

रात 11 बजे के कुछ ही देर बाद, एक सांभर हिरण ने नदी के किनारे से, जहाँ मैंने अपने एक बैल को बाँधा था, अपनी तीखी आवाज निकाली। मैंने उसकी आवाज में घबराहट और डर का भाव पहचान लिया, क्योंकि वह बार-बार पुकार रहा था, और अंत में दूर जाकर उसकी आवाज धीमी हो गई, जब हिरण सामने की पहाड़ियों की प्राचीर पर चढ़कर सुरक्षित स्थान पर पहुंच गया।

फिर सन्नाटा छा गया, और रात अपने आखिरी पलों को लंबा खींचती चली गई। तभी मुझे ख्याल आया कि अगर बाघ एक मील के दायरे में कहीं भी हो, तो शायद मैं कुएं के ऊपर लगे पुली-पहिया को चलाकर उसकी तेज़ सुनने की शक्ति का फायदा उठा सकूं। मैंने दोपहर में पहले ही देखा था कि वह अपनी धुरी पर घूमते हुए ज़ोर से चरमराहट और चीखने की आवाज़ कर रहा था। शायद वह आवाज़ सुनकर आकर्षित हो जाए, यह सोचकर कि कोई दूसरा संभावित शिकार कुएं से पानी निकाल रहा है।

तो मैं कुएँ के चारों ओर घूमकर उस जगह पहुँचा जहाँ पानी का घड़ा ज़मीन पर रखा था। सबसे पहले मैंने बंदूक को दीवार के सहारे खड़ा किया, फिर घड़े को पानी

में डुबोया, और धीरे-धीरे उसे ऊपर-नीचे करता रहा। रात के सन्नाटे में पुली ज़ोर से चरमरा उठी, और मैं लगभग एक घंटे तक यही करता रहा, बीच-बीच में रुककर अपने आस-पास के वातावरण का ध्यान से जायज़ा लेता रहा, खासकर हर झाड़ी की गहरी छायाओं का। पर कुछ भी नहीं हिला, और उस सन्नाटे में एक पत्ता भी नहीं हिला, यहाँ तक कि कोई चूहा भी पास के पपीतों के नीचे ज़मीन पर बिछी सूखी पत्तियों को नहीं हिला पाया। देखा जाए तो, झोपड़ियों में बंद दरवाजों के पीछे सुरक्षित बैठे लोगों के अलावा, उस इलाके में मैं ही अकेला जीवित प्राणी था।

सुबह 3 बजे के बाद चंद्रमा पश्चिमी पहाड़ी श्रृंखला के पीछे डूबने लगा, और मौसम पिछली शाम जैसा ही हो गया। अंधेरा बढ़ता ही गया, और जल्द ही मैं अपने आसपास कुछ ही गज की दूरी देख पा रहा था, और वह भी तारों की चमक से जो डूबते चंद्रमा के गायब होने के साथ ही चमकने लगे थे।

अब सिर्फ नब्बे मिनट का अंधेरा बचा था और मुझे बहुत नींद आ रही थी। फिर भी मुझे अब और भी सतर्क रहना था। क्या मैं पिछले एक घंटे से बाघ को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश नहीं कर रहा था? चूंकि वह पूरी रात उस रास्ते से नहीं गुजरा था, इसलिए हो सकता है कि वह अब गुजर जाए। इसके अलावा, अचानक हमले के लिए सारी परिस्थितियां उसके पक्ष में थीं, क्योंकि पपीते के पेड़ अब धुंधले से दिखाई देने लगे थे, बस मेरी दृष्टि में मौजूद अन्य छायाओं के बीच एक गहरे धब्बे की तरह दिख रहे थे।

मुझे एहसास हुआ कि अगर वह आदमखोर हमला करने का फैसला करता है, तो मैं पूरी तरह से उसके रहमो-करम पर हूंगा। अगर वह दहाड़ते हुए आगे बढ़ता है, तो कम से कम मैं उस पर एकदम करीब से अपनी राइफल से गोली चला सकता हूँ। दूसरी ओर, अगर वह चुपके से मेरे पास आता है, तो मुझे उसके आने का तब तक पता नहीं चलेगा जब तक कि वह मुझ पर हमला न कर दे।

उसी समय, सारे चूहे, खरगोश और अन्य छोटे जानवर, जो पूरी रात गायब रहे थे, मानो कुएँ के पास इकट्ठा होने के लिए यही क्षण चुन रहे हों। वे इधर-उधर भागने लगे और सूखी पत्तियों को सरसराने लगे, कभी शोर मचाते हुए, कभी धीमी आवाज़ में, जबकि मेरी उत्तेजित कल्पना ने मुझे यह संदेश दिया कि 'आदमखोर आ रहा है'।

कुल मिलाकर मेरा समय बहुत ही भयानक बीता। झूठी सुबह आई और चली गई, और फिर सुबह 5:45 बजे पूर्वी पर्वतमाला के ऊपर क्षितिज पर एक बार फिर से उजाला होने से मुझे पता चला कि आखिरकार दिन का उजाला हो गया है और उबाऊ प्रतीक्षा लगभग समाप्त हो गई है। सूरज के पूर्वी पहाड़ियों से झाँकने में सात बज चुके थे, और मैं उठा और अपने सतर्क, नींद से भरे कदमों को घसीटते हुए गाँव के दक्षिणी छोर पर लगाए गए तंबू तक पहुँचा।

गरम चाय पी और साढ़े दस बजे तक झपकी ली। फिर, रंगा और बायरा के साथ, मैं सबसे पहले नदी के तल में बंधे चारे को देखने गया। वह जीवित और स्वस्थ था। करीब से देखने पर पता चला कि एक बाघ उसके 15 फीट करीब तक आया था और सरसरी तौर पर निरीक्षण करने के बाद मर गया था।

रात में मैंने जिस सांभर हिरण की आवाज़ सुनी थी, उसने निस्संदेह इस बाघ को देखा या उसकी गंध पहचान ली थी और ज़ोर से चेतावनी दी थी। बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से उसी जानवर के थे, जिनके पदचिह्न मैंने पश्चिमी पर्वतमाला के रास्ते पर आते समय देखे थे, जहाँ ज़मीन अधिक ठोस थी और आकार बहुत बड़ा नहीं था। फिर भी, मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि यह असली आदमखोर बाघ ही था, क्योंकि एक सामान्य बाघ आसानी से किसी आकर्षक, असुरक्षित शिकार को ज़िंदा नहीं छोड़ता।

फिर हम दूसरे बैल को देखने गए, जहाँ हमें एक चौंकाने वाली बात पता चली। उसे एक बाघ ने मार डाला था, जिसके पदचिह्न ठीक वैसे ही थे जैसे मैंने पिछले दिन रास्ते के ठीक उसी स्थान के पास सावधानीपूर्वक नापे थे।

अब सवाल यह था: क्या आस-पास दो बाघ थे, या दूसरे बैल को आदमखोर बाघ ने मार डाला था? यदि बाद वाला मामला था और केवल एक ही बाघ था—और वह आदमखोर बाघ—तो उसने नदी के किनारे बंधे हुए बैल को क्यों नहीं मारा, बल्कि उसे देखकर दूसरे को मारने का फैसला क्यों किया?

मुझे पक्का यकीन हो गया था कि आस-पास दो बाघ थे, और आदमखोर बाघ ने ही नदी किनारे बैल को अनदेखा किया था। रंगा मुझसे सहमत था, लेकिन बायरा किसी भी राय पर पक्का यकीन नहीं कर पा रहा था। उसने सुझाव दिया कि आदमखोर बाघ शायद उस इलाके का इकलौता बाघ हो, और उसने पहले बैल को शायद इसलिए नहीं मारा क्योंकि वह सफेद था। दूसरा बैल गहरे भूरे रंग का था, इसलिए उस पर शक नहीं किया जा सकता था।

जीवित चारे के रंग के बारे में मेरा दृष्टिकोण बहुत खुला है। मेरे अपने अनुभव के अनुसार, बाघ के लिए रंग से कोई खास फर्क नहीं पड़ता, और कुछ अन्य शर्तें पूरी होने पर वह आपके चारे को खा लेगा। उसे भूखा होना चाहिए, क्योंकि बाघ शायद ही कभी बेवजह शिकार करता है। इसके अलावा, उसे किसी भी तरह के जाल का संदेह नहीं होना चाहिए। आजकल जब बाघों का शिकार बढ़ रहा है, बाघ जल्दी ही सबक सीख रहे हैं। प्रकृति उस प्रजाति को बचाने का प्रयास कर रही है जो तेजी से विलुप्त हो रही है।

इस प्रकार, रस्सी से गर्दन में बांधे गए चारे के बाघ द्वारा छुए जाने की संभावना बहुत कम होती है। बाघ तर्क नहीं कर सकता, लेकिन उसकी सहज प्रवृत्ति या आत्मरक्षा की भावना उसे बताती है कि ग्रामीणों द्वारा अपने मवेशियों को रात के लिए जंगल में बांधना अस्वाभाविक है। सींगों में बंधी रस्सी से बंधे चारे के मारे जाने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि जानवर अपने सींगों से झाड़ियों में उलझ सकता है। पिछले पैर में बंधा चारा भी आसानी से ले लिया जाता है। याद रखने वाली मुख्य बात यह है कि बाघ और तेंदुआ दोनों ही अपने शिकार के गले पर हमला करते हैं, इसलिए हमले की इस विधि को रोकने के लिए कोई स्पष्ट बाधा नहीं होनी चाहिए, अन्यथा हमलावर को संदेह हो जाता है।

इस मामले में पैंथर आमतौर पर बाघों की तुलना में कम सावधान होते हैं और अधिक जोखिम उठाते हैं। व्यक्तिगत रूप से, मुझे पैंथर के लिए कुत्तों को चारा बनाकर बांधना पसंद नहीं है; मुझे लगता है कि यह प्रथा अत्यंत क्रूर है, क्योंकि कुत्ता एक बहुत ही समझदार जानवर है और वह अच्छी तरह जानती है कि उसे किस उद्देश्य से बांधा जा रहा है। ऐसे में, उसे अपने हमलावर के आने तक भयानक मानसिक पीड़ा सहनी पड़ती है। जब मैं छोटा था, और, मैं स्वीकार करता हूँ, मुझमें नैतिकता की कमी थी, तो मैंने कुत्ते की जान बचाकर अपने अंतरात्मा को शांत करने की कोशिश की। इसके लिए मैंने चमड़े के दो टुकड़ों का उपयोग करके लगभग चार इंच चौड़ा एक पट्टा बनाया, जिसमें कई दो इंच लंबे, नुकीले नाखून एक पंक्ति में बाहर की ओर निकले हुए थे, जिनके सिरे चमड़े की दोनों पट्टियों के बीच में आते थे। उन बीते दिनों में, मुझे यह देखकर मज़ा आता था कि पैंथर कुत्ते का गला पकड़ने की कोशिश करता था, और फिर नुकीले नाखूनों के उसके मुंह में चुभते ही वह स्पष्ट रूप से घबराकर पीछे हट जाता था। इससे पहले कि वह इस पहेली को सुलझा पाता, उसे गोली मार दी जाती थी। लेकिन बाघ पर इस तरह की साधारण चालें नहीं चली जा सकतीं।

बीमार जानवर को ज़िंदा चारा बनाकर बांधना भी सफलता के लिए घातक होता है। नीलगिरी पर्वतमाला में रहने वाली बडागा जनजाति स्वस्थ जानवरों को चारा के लिए बेचने से सख्त परहेज़ करती है, चाहे उनकी कितनी भी कीमत क्यों न मिले। वे एक अच्छे बैल की जान कुर्बान करना पाप समझते हैं। वे हमेशा इस काम के लिए केवल बीमार जानवर को ही पेश करते हैं, जिसके दिन वैसे भी गिने-चुने होते हैं। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने एक बैल को पैर-मुंह रोग की आखिरी अवस्था में बांधा था। रेत पर बने पैरों के निशानों से पता चला कि लगातार तीन रातों तक बाघ उस जगह पर आया, चारे के चारों ओर घूमा, यहां तक कि उसके सामने बैठ भी गया, और फिर उसने तय किया कि वह इतना बीमार है कि उसे मारा नहीं जा सकता। चौथी रात, मेरा बेटा बीमार जानवर के पास बैठा रहा, लेकिन आठ बजे तक उसकी जीवन अवधि समाप्त हो रही थी। वह गिर पड़ा और पूरी रात उसे मरने में लग गई। उस रात बाघ दिखाई भी नहीं दिया।

अनुभवी शिकारी जीवित चारे के रंग के बारे में अलग-अलग राय रखते हैं, और मैंने कुछ ऐसे लोगों से मुलाकात की है जो सफेद जानवरों, चाहे गाय हो या बकरी, का इस्तेमाल करने से बचते हैं, क्योंकि उनका दावा है कि इनके शिकार होने की संभावना सबसे कम होती है। पुराने समय के एक प्रसिद्ध पैंथर शिकारी, जिन्होंने सौ से अधिक पैंथर मारे थे, काले रंग की बकरी को बांधने के सख्त खिलाफ थे, क्योंकि उनका दावा था कि इससे पैंथर सतर्क हो जाता है।

मैंने इन बिंदुओं पर कुछ विस्तार से चर्चा की है, क्योंकि मुझे लगता है कि आपमें से कई लोग जो ये कहानियां पढ़ते हैं, बाघ और तेंदुआ के शिकार की तकनीक के कुछ पहलुओं के बारे में जानने में रुचि रखेंगे। बैठक-गृह में अक्सर हम किसी शिकारी या बड़े जानवरों के शिकारी की असाधारण 'अच्छी किस्मत' के बारे में सुनते हैं। वास्तव में, इस 'अच्छी किस्मत' का बहुत बड़ा हिस्सा उनके पिछले अनुभव के कारण होता है, जिसमें उन असंख्य कारकों का ज्ञान होता है जो किसी सफल शिकार को संभव या असफल बना सकते हैं।

अब वापस अपनी कहानी पर आते हैं। ज़ाहिर है, करने के लिए एक ही काम था, और वो था अधखाए भूरे बैल के ऊपर मचान लगाना। अनुभव से पता चला था कि हमारे दोनों चारे उपयुक्त पेड़ों के पास बंधे थे; इसलिए जब मैं थोड़ी देर और झपकी लेने के लिए तंबू में वापस गया, तो रंगा और बायरा, जो दोनों ही इस काम में माहिर थे, ने मेरे साथ लाई हुई कैनवास की कुर्सी को करीने से मोड़कर टांगने का बढ़िया काम किया। चारपाई या भारतीय रस्सी के पलंग के बाद, एक तह करने वाली कुर्सी एक अच्छा मचान बन जाती है। यह चारपाई जितनी आरामदायक या विशाल तो नहीं होती, लेकिन इसका फ़ायदा यह है कि इसे आसानी से अलग-अलग हिस्सों में बाँटा जा सकता है।

शाम 5 बजे वापस आकर, मैंने अपनी जगह ले ली और पूरी रात की निगरानी के लिए तैयार हो गया।

कैम्पेकराई गाँव के ऊपर पश्चिमी पर्वत श्रृंखला पर स्थित इस रास्ते पर उगते चाँद की किरणें गाँव और उस कुएँ की तुलना में बहुत पहले पहुँच जाती थीं, जहाँ मैंने पिछली रात बिताई थी। इसलिए, सूरज के पश्चिमी पहाड़ियों के पीछे डूबने के तुरंत बाद, चाँद पूर्वी पर्वत श्रृंखला के ऊपरे से झाँकने लगा और चारों ओर दृश्यता साफ़ हो गई।

आठ बजने के कुछ देर बाद तक कुछ नहीं हुआ, फिर अचानक मुझे एहसास हुआ कि बाघ मेरे ठीक नीचे खड़ा है। वह कैसे और कहाँ से आया, यह मैं कभी नहीं जान पाया। निश्चित रूप से उस रास्ते से तो नहीं आया होगा जो जंगल में दूर तक फैला

हुआ दोनों दिशाओं में साफ दिखाई दे रहा था। मुझे पता चला कि बाघ मेरे नीचे है, क्योंकि उसने अपने शरीर को उस पेड़ के तने से रगड़ा जिससे हल्की सी आवाज़ निकली, जिस पर मैं बैठा था, और ऐसा करते हुए उसने ऊपर देखा और मेरी मौजूदगी का एहसास हुआ!

फिर घटनाएँ तेज़ी से घटने लगीं। एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ, बाघ तुरंत पेड़ के तने पर चढ़ने लगा। सौभाग्य से, हमने एक ऐसा पेड़ चुना था जिसका तना ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर, जहाँ मैं कैंप की कुर्सी पर बैठा था, पहले जोड़ तक काफ़ी सीधा था। मैं जानता था कि यह आदमखोर बाघ है, क्योंकि आम तौर पर एक बाघ किसी इंसान को अपने ऊपर बैठे हुए देखकर तुरंत भाग जाता है।

मैंने सहज ही अपने दोनों पैरों को जितनी हो सके ऊपर उठा लिया और कुर्सी से थोड़ा झुककर बाईं ओर निशाना साधने की कोशिश की। दुर्भाग्यवश, मैं गलत दिशा में झुक गया था, क्योंकि बाघ मेरे दाहिनी ओर पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। मैंने तुरंत खुद को संभाला, लेकिन अब मुझे राइफल को अपने बाएं कंधे पर टिकाना पड़ा।

पिछले दो पैराग्राफ पढ़ने में आपको जितना समय लगा, उस रात की घटनाओं में लगे वास्तविक समय से कहीं अधिक समय लगा। जैसा कि मैंने कहा, मैं ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर बैठा था। एक सामान्य बाघ नाक से पूंछ तक लगभग नौ फीट लंबा होता है। उसकी पूंछ की लंबाई घटाकर और उसके आगे के पंजे की लंबाई जोड़कर, हम लगभग आठ फीट की अनुमानित लंबाई तक पहुँच सकते हैं, जो किसी भी बाघ या आदमखोर बाघ की 'फैलने की सीमा' को दर्शाती है। पंद्रह फीट की मूल ऊंचाई में से इन आठ फीट को घटाने पर लगभग सात फीट का अंतर आता है, जो लगभग उतनी ही दूरी थी जितनी बाघ उस रात पेड़ के तने पर चढ़ने में सफल हुआ था। मुझे पकड़ने की हड़बड़ी में उसने अपना एक पंजा बढ़ाया, और जैसे ही उसके नुकीले पंजे कैंप-चेयर की सीट के कैनवास और संयोगवश मेरी पैंट को चीरते हुए अंदर घुसे, बाघ अपना संतुलन खो बैठा और पीछे की ओर ज़मीन पर गिर पड़ा। वहीं, अपनी पीठ बचाने की चिंता में, मैंने सहज रूप से खुद को कुर्सी से आधा ऊपर उठा लिया। मैं भाग्यशाली था कि मैंने अपनी राइफल नहीं गिराई और बाघ के पीछे नहीं भागा।

आदमखोर जानवरों, चाहे बाघ हों या तेंदुआ, के बारे में एक अनोखी बात यह है कि वे देखने में कायर लगते हैं, हालांकि वे इंसानों पर हमला करके उन्हें खा जाते हैं। लगभग हमेशा ही, ऐसे हमले पीछे से किए जाते हैं, और तब होते हैं जब शिकार अपने हमलावर की मौजूदगी से अनजान होता है। दरअसल, बहुत कम ही ऐसा हुआ है कि किसी आदमखोर जानवर ने सामने से हमला किया हो या किसी ऐसे व्यक्ति पर झपट्टा मारा हो जो उसकी मौजूदगी से वाकिफ हो और उसका सामना कर रहा हो।

उस रात ऐसा ही हुआ, जैसे ही वह पीछे की ओर धरती पर गिरा, नरभक्षी को एहसास हुआ कि उसकी उपस्थिति का पता चल गया है, और ज़मीन पर उतरते ही, एक छलांग और गुर्राहट के साथ, वह आसपास की लैंटाना झाड़ियों में गायब हो गया।

मैं यह नहीं कह सकता कि यह हमारे सौभाग्य का ही परिणाम था कि उसने ऐसा किया, क्योंकि यद्यपि मुझे उसकी उपस्थिति का आभास हो चुका था और मैं उसके लिए तैयार था, फिर भी उस बेहद कठिन कोण से, ठीक मेरे नीचे, निशाना लगाने की कोशिश में मेरा संतुलन बिगड़ सकता था या राइफल गिर सकती थी। खैर, वह पलक झपकते ही चला गया, उतनी ही अचानक और अप्रत्याशित रूप से जितना वह आया था।

मेरी मौजूदगी का पता चल जाने के बाद, अब चुपचाप या बिना हिले-डुले रहने का कोई फायदा नहीं था। नुकसान का जायज़ा लेते हुए मैंने कुर्सी के कैनवास पर तीन पंजे के निशान देखे, हर एक लगभग पाँच इंच लंबा था, जहाँ बाघ के अगले पंजे ने खरोंचा था। इनमें से दो निशान मेरी पैंट की सीट को भेद गए थे—और कुछ हद तक मेरे शरीर को भी। त्वचा में तेज़ दर्द हो रहा था, जो मुझे इस बात का एहसास दिला रहा था।

आम तौर पर, ऐसी घटना हंसमुख लोगों के मन में हंसी पैदा कर देती, लेकिन मैं उन्हें याद दिलाता कि सभी मांसाहारी जानवरों के पंजे सड़े हुए मांस से निकले जहरीले बैक्टीरिया से भरे होते हैं, और नरभक्षी भी इस नियम का अपवाद नहीं है, क्योंकि यह मांस इंसान का होता है। कुर्सी का कैनवास और मेरी पैंट का कपड़ा इतना मोटा नहीं था कि इस सारे जहरीले पदार्थ को सोख सके, इसलिए मेरे घाव में संक्रमण होने की कुछ संभावना थी।

मैं अपने साथ प्राथमिक उपचार की कई सामग्रियाँ लाया था, जिनमें प्रोकेन पेनिसिलिन का अच्छा स्टॉक और मेरी पाँच सीसी की हाइपोडर्मिक सिरिंज शामिल थीं। लेकिन ये सभी सामग्रियाँ केम्पेकराई स्थित मेरे तंबू में थीं, जो लगभग दो मील दूर था। इसलिए मुझे या तो तुरंत वापस लौटकर चिकित्सा सावधानी बरतने का विकल्प चुनना था, या सुबह तक रुकने का—जो कम से कम दस घंटे दूर थी—क्योंकि तब तक ज़हर घावों में फैल चुका होता। एक स्थिति में मुझे आदमखोर सांप के हमले का सामना करना पड़ता, जो केम्पेकराई तक फैले दो मील के रास्ते में कहीं भी हमला कर सकता था। दूसरी ओर, मुझे सेप्सिस के अधिक निश्चित खतरे का सामना करना पड़ता, और आदमखोर सांप का पीछा करने में असमर्थ होने के कारण लंबे समय तक अक्षम रहना पड़ता।

इसलिए मैंने बाघ से खतरा मोल लेना बेहतर समझा, क्योंकि यह दो खतरों में से कम खतरनाक था। मैंने जल्दी से अपनी राइफल को उस रस्सी पर लटका दिया जो इसी उद्देश्य से लाई गई थी, और मैं भी तेजी से नीचे उतर गया, मन ही मन प्रार्थना कर रहा था कि आदमखोर बाघ दोबारा हमला करने के लिए ठीक उसी क्षण को न चुने। जमीन पर पहुंचकर मैं पेड़ के तने की ओर पीठ करके खड़ा हो गया, और राइफल को उस रस्सी से छुड़ाया जिससे मैंने उसे नीचे उतारा था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था, जंगल के किसी भी हिस्से से कोई आवाज नहीं आ रही थी जिससे मुझे अपने हालिया हमलावर के ठिकाने का कोई संकेत मिल सके। संभवतः वह दस मील दूर हो सकता था, या पास की किसी झाड़ी के पीछे! चमकीली चाँदनी ने जंगल को अपनी अलौकिक चमक से नहला दिया था, जिससे हर पत्ता और घास का तिनका दिखाई दे रहा था, जो रात की हल्की हवाओं के साथ धीरे-धीरे हिल रहे थे। ये हवाएँ जंगल के मैदानों में रात के फूलों की सुगंध बिखेर रही थीं, या अनगिनत पेड़ों के बीच से तेज झोंकों के साथ बह रही थीं।

कुछ क्षण बाद, मैं केम्पेकराई तक दो मील की पैदल यात्रा के लिए रास्ते पर चल पड़ा। यह रास्ता मिट्टी की प्रकृति और वनस्पति के प्रकार के अनुसार चौड़ाई में भिन्न होता है, अधिकतम पंद्रह फुट से लेकर मुश्किल से एक गज तक। कुछ स्थानों पर यह लंबी घास से घिरा है और अन्य स्थानों पर लैंटाना की झाड़ियों सेा कई छोटी-छोटी धाराओं को पार करना पड़ता है, जहां बांस बहुतायत में उगते हैं, उनके लंबे लहराते तने हल्की हवा में चरमराते हैं, जबकि पत्तियां चांदनी को ढकते हुए सामने जमीन पर भूतिया, चौकोर पैटर्न बनाती हैं।

ऐसे हालात में आपका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कता है, मानो पिंजरे से बाहर निकल आएगा; आपकी नसें बुरी तरह तनावग्रस्त हो जाती हैं और हर हल्की सी

सरसराहट भी आदमखोर बाघ के हमले का संकेत देती है। भागने की इच्छा होती है, या यूं कहें कि दौड़ पड़ें। आपकी नसें आपको इधर-उधर देखने का इशारा करती हैं, क्योंकि बाघ पीछे से या दोनों तरफ से हमला कर सकता है!

इन सभी भावनाओं को कड़े नियंत्रण में रखना चाहिए, क्योंकि इनके प्रति ज़रा सा भी झुकाव घबराहट का कारण बनेगा, और घबराहट से आप अपना होश खो देंगे, जिसके परिणामस्वरूप अंततः निश्चित रूप से विनाश होगा।

इस बात का विशेष ध्यान रखें कि बाघ आपके सामने घात लगाकर न बैठा हो और आपके बिल्कुल करीब न आ जाए। पीछे से हमला करने के लिए उसे झाड़ियों में कम से कम कुछ शोर मचाना होगा ताकि चलते समय वह आपकी सामान्य चाल का अनुसरण कर सके।

इसलिए, सिर को इधर-उधर घुमाने के बजाय, सामने देखना ही सबसे समझदारी भरा कदम है, भले ही आपकी आंखें हर परछाई को ध्यान से देखें। अपनी राइफल को तैयार रखें और उसे अपनी कोहनी में दबाकर रखें, क्योंकि आपको कमर से ही गोली चलानी होगी और अपने निशाने पर पूरी तरह से सटीक निशाना लगाना होगा। राइफल को कंधे पर उठाकर निशाना लगाने का समय नहीं मिलेगा, क्योंकि बाघ एक शिकारी है, और चाहे जानवर हो या इंसान, शिकारियों की यह आदत नहीं होती कि वे अपनी मौजूदगी का ऐलान करें। अगर वे ऐसा करेंगे, तो वे जल्द ही शिकारी नहीं रहेंगे, बल्कि खुद 'मारे' जाएंगे।

यदि आपका शिकार घायल है, तो शायद आपको गुर्राहट या घुरघुराहट सुनाई दे, लेकिन संभवतः आपको उसकी आक्रमणकारी शक्ति के दौरान धरती को हिला देने वाली भयानक 'भौंकने' की आवाज़ सुनाई देगी। यदि वह घायल नहीं है और आदमखोर है, तो आप कुछ भी सुनने की उम्मीद न करें, क्योंकि वह पलक झपकते ही आप पर हमला कर देगा।

केम्पेकराई से मुश्किल से एक चौथाई मील पहले रास्ते के दोनों ओर पत्थरों का एक छोटा सा टीला है। घर वापसी के रास्ते में यह सबसे खतरनाक जगह है, क्योंकि बाघ इनमें से किसी भी पत्थर के पीछे छिपा हो सकता है। हालांकि, जब वह भागा तो उसे दूसरी तरफ जाते देखकर मुझे लगा कि उसे वापस लौटने का पर्याप्त समय नहीं मिला। इसी भरोसे के साथ मैंने पत्थरों को पार किया और जल्द ही केम्पेकराई और अपने तंबू तक पहुंच गया।

रंगी और बायरा जाग रहे थे, जैसा कि वे हमेशा तब जागते थे जब मैं अकेले बाहर जाता था, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे मेरी मदद कर सकें। मैंने उन्हें आग जलाने और पानी गर्म करने के लिए कहा और पहले से तैयार रखी हुई कॉफ़ी पी ली, फिर अपनी इंजेक्शन वाली सुई निकाली और उसे गर्म पानी में भिगोकर स्टेरलाइज़ किया। इसके बाद, मैंने प्रोकेन पेनिसिलिन की आठ लाख यूनिट की दो शीशियों को मिलाकर सिरिंज से इंजेक्शन लगाया।

मैंने रंगा और बायरा से बचे हुए गर्म पानी में पोटेशियम परमैंगनेट घोलकर घावों को अच्छी तरह साफ करवाया, फिर सल्फोनोमाइड मरहम से पट्टी बांधी। घाव पर पट्टी या प्लास्टर नहीं लगाया जा सकता था, इसलिए मैं यह उम्मीद करते हुए सो गया कि घावों पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

कई रातों तक नींद न आने के कारण मैं थका हुआ था, और अगली सुबह लगभग नौ बजे तक मेरी नींद खुली। जंगल में इतनी देर से उठना बहुत अजीब बात है, क्योंकि आमतौर पर लोग सूर्योदय से पहले ही उठकर निकल जाते हैं। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि घावों में ज्यादा दर्द नहीं था।

पोनोसोलेन की चार लाख की एक और खुराक लेने और घावों पर पट्टी बांधने के बाद, मैंने दलिया, बेकन और अंडे का शानदार नाश्ता किया, और कुएं के किनारे वाले बगीचे से एक बहुत बड़ा, पका हुआ पपीता खाया, जहां मैंने पहली रात बिताई थी।

फिर मैं नदी के किनारे रखे अपने शिकार को देखने के लिए चल पड़ा, जो मुझे पिछली सुबह की तरह ही ज़िंदा और तंदुरुस्त मिला। पिछली रात जहां मैं बैठा था, वहां वापस दो मील चलने पर मैंने पाया कि बाघ न तो लौटा था और न ही उसने उस बैल को छुआ था जिसे उसने दो रात पहले मारा था। पेड़ के पास आते समय उसके पदचिह्नों से उसकी पहचान उसी बाघ के रूप में हुई जिसके पदचिह्न मैंने सबसे पहले देखे थे।

नीलगिरी, कोयंबटूर और चित्तूर जिलों के जंगलों के विपरीत, सलेम के जंगल अधिकतर कांटेदार होते हैं, जिनमें लैंटाना और 'वेट-ए-बिट' कांटे प्रमुख हैं। घाटियों और नदी-नालों के किनारे ये कांटेदार झाड़ियाँ घनी कतारों में फैली हुई हैं। दोनों ही स्थितियों में, प्रभाव एक ही होता है, यानी घूमना-फिरना या शिकार करना लगभग असंभव हो जाता है।

एक मांसाहारी जानवर चुपचाप चलता है, और एक सफल शिकारी के रूप में उसकी सफलता का रहस्य इस बात में निहित है कि वह सहज रूप से देखता है कि वह अपना अगला पंजा कहाँ रख रहा है ताकि कोई आवाज़ न हो। फिर वह अपना पिछला पंजा ठीक उसी जगह पर रखता है, और अगला पंजा आगे बढ़कर अगला कदम बढ़ाता है। मानव शिकारी को भी चुपचाप चलना चाहिए। उसे ध्यान से देखना चाहिए कि वह अपना हर कदम कहाँ रख रहा है, क्योंकि सबसे छोटा सूखा पत्ता भी कुचलने पर चरमराहट पैदा कर देगा; सबसे छोटी टहनी भी टूट जाएगी। उन चुभने वाले कांटों से भी बचना चाहिए जो आपको रोक सकते हैं, क्योंकि एक कांटा भी इतना मजबूत होता है कि अगर वह आपके कपड़ों में कहीं भी फंस जाए तो आपकी प्रगति रोक सकता है, और अगर आप शॉर्ट्स पहनने की मूर्खता करते हैं तो वह निश्चित रूप से आपका मांस फाड़ देगा।

इन सब बातों से आपका ध्यान बाघ की तलाश करने से हट जाएगा, और अगर वह बाघ आदमखोर है, जो कांटों से नहीं डरता, तो आप स्पष्ट रूप से नुकसान में होंगे।

उस स्थान का जंगल अत्यंत कंटीला था, इसलिए हम गाँव के वरिष्ठ नागरिकों के साथ युद्ध परिषद् आयोजित करने के लिए कैम्पेकराई लौट आए। तथ्यों के आधार पर, जहाँ तक हमें अब तक जानकारी थी, यह पता चला कि:

आदमखोर एक औसत कद का नर था।

वह विशेष रूप से पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के रास्ते पर अक्सर जाया करता था।

उन्हें बैल का मांस खास पसंद नहीं था।

हमें अभी भी यह निश्चित नहीं था कि आसपास कोई दूसरा बाघ मौजूद है या नहीं।

इस चर्चा के बाद जो स्पष्ट निष्कर्ष निकला, वह लगभग वही था जो रंगा, बायरा और मैंने केम्पेकराई आने के पहले दिन निकाला था: या तो अगले मानव शिकार का इंतज़ार किया जाए, या किसी जीवित मानव को चारा बनाया जाए, अधिमानतः कैम्पेकराई जाने वाले पश्चिमी पहाड़ी मार्ग पर कहीं। आदमखोर बाघ को लुभाने के लिए जंगल में कहीं और कुछ बैल भी बांधे जा सकते थे, लेकिन मुख्य रूप से यह पता लगाने के लिए कि क्या उसी क्षेत्र में कोई दूसरा बाघ भी सक्रिय है।

बाघ के घावों की वजह से, जहाँ वे थे, वहाँ मेरे लिए पंद्रह मिनट से ज़्यादा देर तक एक जगह बैठना नामुमकिन था। इस वजह से, सचमुच में, 'सीधे बैठने' की कोई

गुंजाइश नहीं थी। सच है, अगर मुझे चारा बनना होता तो मुझे एक जगह बैठने की ज़रूरत ही नहीं होती। दरअसल, बाघ को आकर्षित करने के लिए हिलना-डुलना ज़रूरी होता। दूसरी तरफ, बैठना न सिर्फ़ असहनीय होता, बल्कि घावों के भरने में भी देरी करता, जिन्हें मैं स्वाभाविक रूप से जल्दी ठीक करना चाहता था।

हमारे पास खड़े रहने या लेट जाने के दो ही विकल्प बचे थे। रात भर जागकर निगरानी करने के लिए खड़े रहना स्वाभाविक रूप से उचित नहीं था, इसलिए इन परिस्थितियों में लेट जाना ही एकमात्र व्यावहारिक उपाय था।

हमने उस दिन बहुत सोच-विचार किया और अंततः एक ऐसी योजना पर पहुँचे जिसे हम सभी ने बहुत ही चतुराईपूर्ण समझा। यह योजना वास्तव में कितनी चतुराईपूर्ण साबित हुई—या यूँ कहें कि कितनी नहीं—यह आपको बहुत जल्द पता चल जाएगा।

मैंने पहले ही बताया है कि पश्चिमी पर्वतमाला से केम्पेकराई तक जाने वाला पैदल मार्ग कई स्थानों पर छोटी-छोटी धाराओं से घिरा हुआ था, जिनके किनारे घनी झाड़ियाँ और बांस के झुंड थे। इन छोटी धाराओं के तल पथरीले थे और मेरे उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे।

संयोगवश, केम्पेकराई जाने के रास्ते में, जिस पेड़ पर मैं पिछली रात बैठा था, वहाँ से पार करने वाली छोटी धाराओं में से पहली धारा सबसे चौड़ी थी, और साथ ही वह हर आकार के गोल पत्थरों से घनी तरह ढकी हुई थी। मेरी योजना थी कि केम्पेकराई गाँव में मौजूद केवल दो बैलगाड़ियों में से एक से एक बैलगाड़ी का पहिया निकाल लूँ, धारा के तल में एक गड्ढा खोदूँ, उसमें घुस जाऊँ, पहिया ऊपर रखूँ और उसे चारों ओर बड़े पत्थरों से मज़बूती से गाड़ दूँ। छोटे पत्थर और सूखे पत्तों की आड़ में पहिया छिपा रहेगा। मैं एक मानव पुतला भी बनाऊँगा और उसे पगडंडी पर कहीं रख दूँगा जहाँ वह धारा को पार करती है। बैलगाड़ी के पहिये को एक सिरे से ज़मीन से ऊपर उठा दूँगा, ताकि मुझे उस दिशा में निशाना लगाने की सुविधा मिल सके।

यह मेरी सामान्य योजना थी। जो लोग भारत नहीं गए हैं, उनकी सुविधा के लिए मैं समझाना चाहूँगा कि भारतीय बैलगाड़ी का पहिया—मैं बड़ी बैलगाड़ी की बात कर रहा हूँ—औसतन पाँच फ़ुट व्यास का होता है। इसकी परिधि लकड़ी की होती है, लगभग छह इंच चौड़ी और तीन इंच मोटी, जिस पर लोहे का एक घेरा टायर का काम करता है। इसमें बारह मजबूत लकड़ी की तीलियाँ होती हैं, जो सभी एक विशाल केंद्रीय लकड़ी के हब पर आकर मिलती हैं। लकड़ी के हब में बना केंद्रीय छेद लगभग डेढ़ इंच मोटे लोहे के धुरी पर घूमता है। पहिए को गिरने से रोकने के लिए धुरी के बाहरी सिरे से होकर गुज़रने वाली चपटी लोहे की कील लगी होती है। इसी प्रकार, पहिए को गाड़ी के फ्रेम की ओर खिसकने से रोकने के लिए धुरी स्वयं होती है, जो हब पर धुरी की भार वहन सतह के ठीक बाद अचानक मोटी हो जाती है, जिसकी चौड़ाई शायद एक फ़ुट से थोड़ी अधिक होती है। कुछ मॉडलों को विलासितापूर्ण कहा जा सकता है, जिनमें लकड़ी के हब के छेद को लोहे या गैल्वनाइज्ड पाइप से ढककर बेहतर भार वहन सतह प्रदान की जाती है। गाँव के नज़रिए से, 'उच्च-स्तरीय स्नेहन' के लिए, कॉटर-पिन और पहिया हटाकर धुरी के सिरों पर लगभग हर पखवाड़े में एक बार पुराना मोटर तेल लगाया जाता है। तेल को गाड़ी के नीचे कहीं लटकाए गए एक पुराने बैल के सींग के खोल में स्थायी रूप से रखा जाता है, और 'मरम्मत का समय' आने पर, आस-पास पड़ी किसी भी लकड़ी के टुकड़े के सिरे से धुरी पर लगाया जाता है।

उस दिन करतब दिखाने का समय नहीं था, इसलिए हम गाँव वालों से पुराने कपड़े इकट्ठा करने में जुट गए। ऐसे इलाकों में पैंट का चलन नहीं है, इसलिए मैंने

अपना एक पैंट दे दी, जिसमें हमने बॉस की दो टांगें ठूंस दीं और उन्हें भूसे से लपेट दिया। कहीं बाघ को पैंट अपरिचित न लगे, इसलिए हमने पैंट के ऊपर एक धोती (जो सारोंग और लंगोटी का मिश्रण होती है) डाल दी। पुतले का शरीर एक पुराने बोरे में भूसा ठूंसकर बनाया गया था, जिसके ऊपर हमने दो फटी हुई कमीज़ें और एक बहुत ही पुराना कोट डाल दिया। पुतले का सिर कला का एक नमूना था; इसे एक बड़े आकार के नारियल से बनाया गया था, जिसमें उसके रेशे भी लगे हुए थे।

खास मौकों पर भारतीय महिलाएं अपने प्राकृतिक बालों को कृत्रिम बालों से सजाती हैं, जिन्हें वे सिर के पीछे जूड़े या कुंडे में बांधती हैं और उनमें फूल, खासकर चमेली के फूल लगाती हैं। सौभाग्य से केम्पेरकराई में एक सुंदरी थी जो ऐसे ही बालों की एक लट की मालकिन थी। हमने उसे उधार लिया, कंघी की और नारियल के चारों ओर इस तरह बांध दिया जैसे किसी ग्रामीण के लंबे बाल हों। फिर नारियल के चारों ओर देहाती शैली की एक बेतरतीब पगड़ी लपेटी गई और नकली नारियल के पैरों में चप्पलें पहना दी गईं।

जैसा कि मैंने कहा है, बाघों में सूंघने की क्षमता नहीं होती है, इसलिए वह पुतला इतना यथार्थवादी लग रहा था कि किसी आदमखोर को आकर्षित कर सके, बशर्ते वह उसे इतनी देर तक न देखता रहे कि उसकी विचित्र स्थिरता पर आश्चर्य करने लगे।

उस रात मैंने अपने घावों पर नई पट्टी बांधी और अगली सुबह पेनिसिलिन का एक और इंजेक्शन लगवाया। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि अभी तक कोई असामान्य सूजन नहीं हुई थी।

सुबह 8 बजे तक, छह इच्छुक सहायकों और मैंने मिलकर गाड़ी को उस जगह तक घसीट लिया जहां से मैंने पुलिया बनाने का सोचा था। वहां पहुंचकर हम लगभग चार फुट चौड़ा और चार फुट गहरा गड्ढा खोदने में जुट गए। यह काम आसानी से हो गया, क्योंकि हम नदी के तल की नरम रेत में खुदाई कर रहे थे। फिर कुछ घास काटकर गड्ढे में डाल दी गई ताकि खुदाई के साथ-साथ बढ़ती हुई रेत की नमी को कुछ हद तक सोख सके।

अंदर बैठकर मैंने पाया कि मैं केवल अर्धझुकी हुई स्थिति ही अपना सकता था, जो वास्तव में बहुत असुविधाजनक होने वाली थी। इसका एकमात्र फायदा यह था कि इसने मुझे बैठने की स्थिति से बचा लिया, जो कि, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, मेरे हाल के घावों को देखते हुए बहुत असुविधाजनक होती।

हमने एक नकली पुतला लगभग पंद्रह फीट दूर एक इमली के पेड़ की ओर पीठ करके रखा, जो उस नाले के पश्चिमी किनारे पर खड़ा था जहां से केम्पेकराई जाने वाला रास्ता गुजरता था; इसे इस तरह रखा गया था कि इसके पैर रास्ते पर पैंतालीस डिग्री के कोण पर निकले हुए थे। इस प्रकार, यदि बाघ किसी भी दिशा से गुजरता, तो नाले के किसी भी बिंदु से या रास्ते के किसी भी हिस्से से यह पुतला उसे तुरंत दिखाई देता। अंत में, हमने कुछ बड़े-बड़े पत्थर इकट्ठा किए, और जब मैं अपनी राइफल लेकर पहरा दे रहा था, तब रंगा और बायरा ने पहिये को छिपाने के लिए झाड़ियाँ और मलबा इकट्ठा किया।

जब मैं आखिरकार गड्ढे में घुसा, तो पहिया मेरे सिर से बस कुछ इंच ऊपर था। ज़मीन और पहिये के बीच छह इंच की जगह थी, जहां से मैं डमी की दिशा में निशाना लगा सकता था; यह जगह दो पत्थरों को लगभग तीन फुट की दूरी पर परिधि के नीचे रखकर बनाई गई थी, जिससे हवा आने-जाने के लिए बीच का हिस्सा खुला रहता था। पत्थरों के बीच झाड़ियाँ और मलबा बिखरा हुआ था; इससे मुझे चेतावनी भी मिल जाती अगर वह पीछे से आता, क्योंकि जब वह मलबे से टकराता या उस पर पैर रखता तो वह चटकने की आवाज़ करता।

सुरक्षा के लिहाज़ से, मैंने यह व्यवस्था की थी कि सभी लोग एक साथ कैम्पेकराई लौटें और अगली सुबह फिर से एक साथ ही लौटें। मुझे पूरी रात उस गड्ढे में कैद रहना पड़ेगा, क्योंकि पहियों और उनके ऊपर रखे पत्थरों का वज़न इतना ज़्यादा था कि मैं उन्हें अकेले अंदर से उठा नहीं सकता था।

शाम के 4:30 बज रहे थे जब मैं अपनी बनाई हुई जेल में दाखिल हुआ। पहियों पर पत्थरों को रखने और छलावरण करने में लगभग आधा घंटा और लग गया, इसलिए जब मैंने खुद को अकेला पाया तो लगभग पाँच बज चुके थे। ऊपर खुला होने के बावजूद, गड्ढे के अंदर गर्मी दम घोंटने वाली थी। मैंने अपना कोट और कमीज़ उतार दी, और बाकी के कपड़े भी उतार देता, लेकिन मैं नहीं चाहता था कि रेत मेरे घावों में जाए।

ज़मीन से थोड़ा ऊपर झाँककर देखने पर मुझे पुतला और आसपास का काफ़ी बड़ा इलाका साफ़ दिखाई दे रहा था। पुतले के पीछे ढलान पर बीच में मेहंदी की झाड़ियाँ उगी हुई थीं। उस दिशा में हल्की सी हलचल ने मेरा ध्यान खींचा, जो एक सुंदर चित्तीदार हिरण के कान के फड़कने और फैलने के कारण थी। वह हिरण उत्सुकता से उस स्थिर पुतले को देख रहा था। जंगल में शांत बैठे रहने का महत्व मुझे तब समझ आया, क्योंकि हिरण पूरे दस मिनट तक उस पुतले को देखता रहा। फिर जैसे उसकी दिलचस्पी उस अनोखी चीज़ में कम हो गई, वह खुले रास्ते पर आ गया, जिसे पार करके वह दूसरी तरफ जंगल में गायब हो गया। पुतले और हिरण के बीच की दूरी बीस फीट से ज़्यादा नहीं रही होगी, फिर भी हिरण बिल्कुल भी नहीं डरा। अगर पुतले की जगह कोई इंसान बैठा होता, तो वह ज़रूर हिलता, भले ही पलक ही क्यों न झपकाता, और इससे हिरण डरकर भाग जाता।

तभी मोर का एक जोड़ा पगडंडी पर इतराता हुआ आया। नर मोर रुका, अपनी पूंछ फैलाई और अपनी मादा मोर को लुभाने के लिए अपने पंख फड़फड़ाए। मादा मोरनी की तरह, उसने एक आँख उस पर और दूसरी कहीं और रखी! खैर, उसने नकली मोरनी को देखा, थोड़ी दौड़ लगाई और हवा में उड़ गई। नर मोरनी को अपनी सुंदरता की सराहना न करने पर निराशा हुई, उसने अपनी पूंछ नीचे की और नकली मोरनी को देखा। मादा मोरनी से कहीं अधिक भारी होने के कारण, वह उड़ने की कोशिश में बेतहाशा फड़फड़ाने लगा, शाम की शांत हवा में उसके पंख ज़ोर से फड़फड़ा रहे थे, आखिरकार वह आसपास की झाड़ियों से थोड़ा ऊपर उठने में कामयाब हुआ और अपनी सतर्क मादा मोरनी के पीछे-पीछे सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया।

अंधेरा होने से पहले नदी के किनारे कुछ दाने चुगने के लिए निकले भूरे जंगली मुर्गों ने चारों दिशाओं में 'कुक-काया-काया-खुक' की आवाज़ें निकालीं। छोटे-छोटे लड़ाकू पक्षी, कुकुरुकू-वैक-कुकुरुकू-वैक, 'कुकुरुकू-वैक-कुकुरुकू-वैक' की आवाज़ें निकाल रहे थे, क्योंकि नर मुर्गे जंगल में मादा मुर्गे का दिल जीतने के लिए आपस में लड़ रहे थे। देखने में वह भले ही साधारण और नीरस लगे, लेकिन उस शाम उनके लिए दुनिया में बस एक ही मकसद था, उसका दिल जीतना।

अंधेरा छा गया, और मोर के जोड़े की विदाई की आवाज सुनाई दी, जो रात भर के लिए जंगल के किसी ऊंचे पेड़ पर बसेरा बनाने जा रहे थे, जो शायद एक चौथाई मील दूर था। 'मिया-आ-ऊ-आओ' की आवाजें गूंजीं, जैसे ही सूरज पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के पीछे डूब गया।

आपमें से जो लोग भारतीय जंगलों में गए हैं, उन्हें सूर्यास्त के समय होने वाला वह अद्भुत परिवर्तन याद होगा, जब दिन के पक्षी चहचहाना बंद कर देते हैं और रात के पक्षी चहचहाना शुरू कर देते हैं। 'चक-चक-चक-चुको' की आवाज़ें निकालते हुए

रात्रि पक्षी अपने पंख फैलाकर कीड़ों की तलाश में ऊपर उड़ते हैं या रेत की पृष्ठभूमि में पत्थरों की तरह ज़मीन पर बैठ जाते हैं।

जहां मैं बैठा था, वहां घना अंधेरा था और यहां तक कि पुतला भी इमली के पेड़ की छाया में छिपा हुआ था, जिसके नीचे उसे रखा गया था। मुझे लगा कि चांदनी दस बजे के बाद ही वहां पहुंचेगी। नौ बजे मैंने एक सुस्त भालू की तेज़ सूंघने और गहरी गड़गड़ाहट सुनी, जो लड़खड़ाते हुए नाले से मेरी तरफ़ आ रहा था। वह लगभग उस मलबे पर गिर पड़ा जो हमने बाघ के आने की चेतावनी देने के लिए नाले के तल पर रखा था, और फिर उसने गाड़ी के पहिये पर रखे नए पत्थरों को देखा! मैं उसके घने काले बालों के नीचे उसके छोटे से दिमाग में चल रहे विचारों को पढ़ सकता था! 'यहां कुछ स्वादिष्ट मोटे कीड़े, या एक-दो भृंग ढूंढ़ने का मौका है; शायद दीमकों का घोंसला, या सबसे उम्मीद की बात, उन छोटी पीली मधुमक्खियों का छत्ता जो मुझ जैसे बड़े भालू को डंक नहीं मार सकतीं।'

इन्हीं विचारों के साथ, भालू उन पत्थरों को हटाने के काम में जुट गया, जिन्होंने मेरे कार्टव्हील को बड़ी सावधानी से टिका रखा था।

'भाग जा!' मैंने दबी आवाज़ में फुसफुसाया। 'दूर हट जा, तुम दखलंदाज़...!'

भालू ने मेरी आवाज़ सुनी और रुक गया। 'यह आवाज़ कहां से आई?' वह सोच रहा था। कुछ मिनटों की खामोशी छाई रही, फिर उसने पत्थरों को घूरना शुरू कर दिया। 'दूर हटो! भागो!' मैंने फुसफुसाते हुए कहा। भालू रुका, पत्थरों के ऊपर से चढ़ा और पत्थरों के बीच से नीचे मेरी तरफ देखा।

'आ-र, व्र-र!' वह गुर्राया। 'निकल जा बेवकूफ!' मैं गुर्राया। 'व्र-ऊफ! व्र-ऊफ! व्र-ऊफ!' उसने जवाब दिया और पत्थरों पर बेतरतीब ढंग से चढ़ता हुआ, मलबे पर ठोकर खाता हुआ, किनारे पर चढ़ता हुआ सूखे बांसों के बीच से गिर पड़ा।

भालू के शोर मचाते हुए चले जाने के मुश्किल से दस मिनट ही बीते थे कि मुझे एक बहुत ही हल्की सी आवाज़ सुनाई दी, किसी भारी जानवर के गद्देदार पैर की धीमी आहट। उस आवाज़ को शब्दों में बयान करना लगभग नामुमकिन है, और कागज़ पर तो और भी मुश्किल। मैं उसका सबसे सटीक वर्णन ऐसे कर सकता हूँ जैसे किसी मुलायम तकिए को सोफे पर फेंके जाने पर आने वाली हल्की सी आवाज़।

बाघ आ चुका था और चुपचाप मेरे पीछे नदी के किनारे बिखरे मलबे के ढेर के किनारे से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहा था। वह बड़ी सावधानी से उस पर से अपना रास्ता बना रहा था।

क्या वह डमी पर हमला करेगा? क्या वह मेरे सामने से गुजरेगा? ये सवाल मेरे दिमाग में घूम रहे थे, जैसे-जैसे मैं आगे की स्थिति का इंतजार कर रहा था। मेरी नसें उत्सुकता से तनावग्रस्त थीं।

चाँद निकल चुका था, लेकिन उसकी किरणें इमली के घने पत्तों की छाया तक नहीं पहुंच पा रही थीं। पुतला मुझे दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन मुझे पता था कि बाघ उसे साफ देख सकता था।

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा—कितनी देर तक, यह मैं नहीं कह सकता। फिर मेरे सिर के ऊपर से एक पत्थर के लुढ़कने की खनक सुनाई दी। किसी ने भी उस दिशा से हमले की उम्मीद नहीं की थी; लेकिन मेरे हाल ही के मेहमान, भालू ने पहले ही दिखा दिया था कि अप्रत्याशित भी हो सकता है। अब मेरे ऊपर बाघ की मौजूदगी से अप्रत्याशित घटना फिर से दोहराई जा रही थी। किस बात ने उसे नकली वस्तु को नज़रअंदाज़ करके सीधे उस जगह पर आने के लिए प्रेरित किया जहां मैं लेटा था, यह एक रहस्य था। बहुत संभव है कि बाघ भालू को देख रहा था, उसके अजीब व्यवहार को देखा था, उसकी जल्दबाजी में जाने पर ध्यान दिया था और जांच

करने आया था। इससे भी अधिक संभव है कि भालू के व्यवहार ने बाघ को मानव हस्तक्षेप का संदेह पैदा किया हो, जिसकी पुष्टि करने के लिए वह स्वयं आया हो। या शायद पहिया संयोगवश उस सबसे छोटे रास्ते पर स्थित था जिसका अनुसरण करते हुए बाघ नकली वस्तु तक पहुंच रहा था।

कारण चाहे जो भी हो, बाघ अब मुझसे केवल दो गज की दूरी पर था और मेरे ठीक ऊपर था।

ये सारे विचार मेरे मन में दौड़ रहे थे, तभी मुझे बाघ की साँसों की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। फिर वह बड़ी फुर्ती से पहिए को थामे रखने वाले बड़े-बड़े पत्थरों में से एक के ऊपर से गुज़रा और मेरी तरफ नीचे देखने लगा।

इस बीच मैं निष्क्रिय नहीं बैठा था। जितना हो सका, मैंने खुद को समेटते हुए, आधा पीठ के बल लेटकर बाघ को ऊपर की ओर देखा। मैंने राइफल को अंदर और पीछे की ओर तब तक खींचा जब तक कि उसका बट छेद के किनारे से न टकरा गया। मैंने आपको पहले ही बताया है कि यह छेद लगभग चार फीट चौड़ा और लगभग उतना ही गहरा था। इसलिए राइफल को पूरी तरह ऊपर की ओर निशाना लगाना असंभव था। मैं ज़्यादा से ज़्यादा छेद के तल से साठ डिग्री से थोड़ा अधिक का कोण ही बना पाया। दुर्भाग्य से, बाघ उस दिशा में नहीं था जिस दिशा में राइफल का मुंह था, बल्कि वह उसके पीछे और ठीक उस जगह के ऊपर खड़ा था जहाँ राइफल का बट छेद के किनारे से टकरा रहा था।

फिर घटनाएँ तेज़ी से घटीं। बाघ ने भालू की तरह प्रतिक्रिया नहीं दी। मेरे ऊपर धुंधले से दिखाई दे रहे उसके चेहरे पर एक भयानक गुर्राहट छा गई। उसकी गहरी गड़गड़ाहट की आवाज़ें लगातार निकलती रहीं, और गाड़ी के पहिए पर लेटकर उसने अपने अगले पैर के पंजों से मुझे खरोंचने की कोशिश की, जिसे उसने पहिए की तीलियों के बीच फंसा दिया था।

मुझे पता था कि अगर उसके पंजे मेरे चेहरे और सिर को छू भी लेते तो वे उसे चीर-फाड़ कर देते, इसलिए जितना हो सके गड्ढे में नीचे झुककर, मैंने राइफल का मुंह बाघ की ओर मोड़ने के लिए जी-जान से संघर्ष किया।

यह सब कुछ पल भर में हो गया। बाघ गुर्राया और थोड़ा और आगे बढ़कर पहिये के पास आ गया। मेरी राइफल की नली उसके कंधे से टकराई और मैंने ट्रिगर दबा दिया।

उस तंग जगह में धमाका इतना भयानक था कि कान बहरे हो गए। बाघ भयानक दहाड़ते हुए पीछे की ओर उछल पड़ा। अगले तीस सेकंड तक वह पत्थरों, पहिए और यहाँ तक कि रेत को भी दांतों से काटता रहा, दर्द से कराहते हुए लगातार दहाड़ता रहा। फिर मैंने उसे मलबे के बीच गिरते, उठते, फिर गिरते, फिर उठते और अंत में छोटी सी धारा के किनारे उगी झाड़ियों में जा टकराते सुना। वह अभी भी दहाड़ रहा था, और लगभग पंद्रह मिनट तक लड़खड़ाते हुए जंगल की ओर बढ़ता रहा।

अंततः, जंगल में घोर सन्नाटा छा गया। अभी-अभी मचे उस भयानक कोलाहल के बाद, कीड़े-मकोड़ों समेत हर प्राणी ने यही समझदारी समझा कि समय बीतने के साथ-साथ वे अपना भय भूल जाएं, तब तक छिप जाना ही बेहतर होगा।

घंटे बीतते गए। सुबह एक बजे पहाड़ियों पर तेज़ हवा चलने लगी, काले तूफ़ानी बादल आसमान में छा गए, चाँद को पूरी तरह से ढक लिया, और जल्द ही पश्चिमी पर्वतमाला से आती बारिश की दूर की आवाज़ मेरे कानों तक पहुँची। कुछ ही देर बाद, बारिश की बड़ी-बड़ी बूँदें पेड़ों की तीलियों के बीच से निकलकर मुझ पर गिरीं।

फिर मूसलाधार बारिश शुरू हो गई, ऐसी बारिश जो केवल उष्णकटिबंधीय देशों, विशेषकर घने जंगलों में ही हो सकती है। मैं पूरी तरह भीग गया था और पानी गड्ढे के किनारों से रिसने लगा। तभी मुझे अचानक एहसास हुआ कि सूखी पड़ी यह धारा जल्द ही सैकड़ों सहायक नदियों से चारों ओर से बहकर आ रहे बारिश के पानी से भर जाएगी। मैं गड्ढे में चूहे की तरह डूब जाऊंगा।

मैं घबराकर हरकत में आ गया, हाथों और घुटनों के बल बैठ गया, अपनी पीठ पहिये से टिकाई और पूरी ताकत से ऊपर की ओर धकेलने लगा। पहिया रत्ती भर भी नहीं हिला! मेरे सहायकों ने मुझे बाघ से बचाने का अपना काम बखूबी कर दिया था! उन्होंने पहिये के चारों ओर सबसे भारी पत्थर रख दिए थे जो उन्हें मिल सके और मैं उन्हें अकेले हिला नहीं पा रहा था।

अब बस एक ही मौका बचा था, और वो था खुद को उस छह इंच चौड़े छेद से बाहर निकालना जो हमने मेरे लिए गोली चलाने के लिए बनाया था। हताशा में, मैंने दोनों हाथों से मिट्टी को गड्ढे में नीचे की ओर धकेला, जो पहले से ही आधा पानी और रेत से भरा हुआ था; गीले किनारे ढह रहे थे, जिससे यह साफ हो गया था कि अगले कुछ मिनटों में, अगर मैं जल्दी से बाहर नहीं निकला, तो मेरे ऊपर पत्थर और चट्टानें एक साथ गिर जाएँगी।

जब मुझे लगा कि मेरे शरीर के निकलने के लिए पर्याप्त जगह है, तो मैंने राइफ़ल को पहिये के स्पोक्स के बीच धकेल दिया और फिर उसे उन पर टिका दिया। इसके बाद मैंने अपने द्वारा खोदे गए छेद से खुद को निचोड़ना शुरू किया, रेत और पानी में एक फंसी हुई मछली की तरह रेंगता हुआ, जब तक कि मैं आखिरकार संघर्ष करते हुए नदी के तल पर नहीं पहुंच गया।

बारिश लगातार तेज़ होती जा रही थी। मुझे नहीं पता था कि बाघ कितनी दूर चला गया है या किस दिशा में गया है, इसलिए मैंने राइफ़ल उठाई और पहले नकली बाघ को नदी के किनारे से उठाकर पश्चिमी तट पर ऊँचाई पर रख दिया। फिर मैं केम्पेकराई लौटने के लिए नदी पार करने लगा, और ऐसा करते समय मुझे पहाड़ियों की दिशा से नदी में बहते बारिश के पानी की धीमी गर्जना सुनाई दी।

कुछ ही मिनटों में वह आ गई, तीन फुट से भी ऊँची झागदार जलधारा, जो अपने साथ सब कुछ बहा ले गई। लकड़ी के लट्ठे, उखड़े पेड़, सूखे बांस और हर तरह का बहकर आया कचरा, झागदार पानी में मिल गया। वह गाड़ी के पहिये तक पहुँचा और उसे ढक लिया; फिर गाड़ी का पहिया और बड़े-बड़े पत्थर तेज धारा के साथ बहते हुए नीचे की ओर चले गए। पाँच मिनट से भी कम समय में धारा एक उग्र नदी में बदल गई, जिसकी गहराई चार फुट से भी अधिक थी।

मुझे जो राहत मिली थी, उसकी सराहना करते हुए मैंने केम्पेकराई की वापसी यात्रा शुरू की। बारिश की बूंदों की आवाज़ के अलावा और कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। अंधेरा घना था, मेरी टॉर्च से बस एक गोलाकार रोशनी निकल रही थी। ऊपर से, मेरे पहने हुए मुलायम रबर के जूतों के लिए ज़मीन बेहद फिसलन भरी थी। मुझे तीन और छोटी-छोटी धाराओं को पार करना था, जो उस धारा से थोड़ी छोटी थीं जहाँ मैं बैठा था, लेकिन सभी में पानी उफान पर था।

केम्पेकराई के आधे रास्ते में, मुझे आती हुई एक रोशनी की झलक दिखाई दी। थोड़ी देर बाद, मेरी मुलाकात उसे ले जा रहे लोगों के समूह से हुई—रंगा, बायरा और गाँव के कुछ बहादुर लोग। पानी का स्तर बढ़ने पर उन्होंने मेरी स्थिति का अंदाज़ा लगा लिया था और आदमखोर सांप से मुठभेड़ का जोखिम उठाकर मेरी मदद के लिए आए थे।

अगली सुबह घने जंगल पर सूरज की तेज़ रोशनी पड़ रही थी। हम पिछली रात के अपने साहसिक कार्य के स्थान पर वापस लौटे। सभी नदियाँ तेज़ी से बह रही थीं, हालाँकि अब उनकी गहराई दो फीट से ज़्यादा नहीं थी। पुल के पास कहीं भी गाड़ी के पहिये का कोई निशान नहीं था। ज़ाहिर है, बाढ़ के पानी के साथ बहकर वह शायद चकनाचूर हो गया था। इसके बाद हमने दोनों किनारों की छानबीन की, लेकिन बाघ का कोई सुराग नहीं मिला। मूसलाधार बारिश ने खून के निशान या पंजों के निशानों को पूरी तरह मिटा दिया था।

दो घंटे बाद, निराश और हताश होकर हम केम्पेकराई लौट आए। वहाँ मैं तीन और दिन रुका रहा, बाघ के बारे में खबर सुनने की उम्मीद में, लेकिन मुझे निराशा ही हाथ लगी। बायरा और रंगा दोनों को लगा कि बाघ अपने घावों के कारण मर गया होगा, लेकिन मुझे इस पर बहुत संदेह था, क्योंकि मैं जानता था कि मेरा निशाना इतना सटीक नहीं था कि मैं एक साधारण तीर से ज़्यादा कुछ मार सकूँ।

इस जानवर का शिकार करने के उद्देश्य से ली गई मेरी छुट्टी की अवधि अब समाप्त हो चुकी थी, इसलिए मैं चौथे दिन सुबह केम्पेकराई से रवाना हो गया और रंगा को निर्देश दिया कि वह बायरा की मदद के लिए वहीं रुके जाए। फिर उन्हें पेन्नाग्राम आना था और वहाँ से धर्मपुरी जाना था, जहाँ एक टेलीग्राफ कार्यालय था जहाँ से वे मुझे संदेश भेज सकते थे। उन्हें वहाँ मेरे उत्तर की प्रतीक्षा करनी थी।

बैंगलोर लौटने के दस दिन बाद, वह प्रतीक्षित टेलीग्राम आया जिसमें बताया गया था कि कोडेकराई फॉरेस्ट लॉज के एक वन रक्षक के घोड़े की हत्या कर दी गई है। टेलीग्राम से यह अनुमान लगाते हुए कि मेरे वहाँ पहुँचने तक चार दिन बीत चुके होंगे, मैंने जवाब भेजा और अपने साथियों को केम्पेकराई लौटने और वहाँ आगे की घटनाओं का इंतज़ार करने के लिए कहा, जिनकी सूचना टेलीग्राम द्वारा ही दी जानी थी।

छह दिन और बीत गए, जब मुझे दूसरा टेलीग्राम मिला जिसमें बताया गया था कि चिनार नदी पर स्थित मोरप्पुर नामक छोटे से गाँव से सोपथी की ओर जा रहे एक काफिले के आखिरी बैलगाड़ी चालक पर एक बाघ ने हमला कर दिया था।

यह निस्संदेह वही आदमखोर सांप था। एक घंटे के भीतर मैं कार से धर्मपुरी के लिए रवाना हो गया, जहाँ मैंने अपने दो साथियों को साथ लिया। हम पेन्नाग्राम तक गए, जहाँ हमने कार छोड़ दी और लगभग बारह मील की पैदल यात्रा करके मोरप्पुर पहुँचे, रास्ते में चिनार नदी और सोपथी से गुज़रे।

इसी बीच मुझे पता चला कि बाघ के हमले का शिकार हुए गाड़ीवाले ने अपनी जान बचाने के लिए गाड़ी से कूदकर जुए पर छलांग लगाई और फिर गाड़ी खींच रहे दो बैलों के बीच आ गया। उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया और उसकी चीखों में गाड़ी के दूसरे गाड़ीवालों ने भी साथ दिया। इसके बाद बाघ भाग गया।

मैंने मोरप्पुर में एक गाड़ीवाले से बात की। उसने बताया कि बाघ अचानक उसकी गाड़ी के पीछे प्रकट हुआ, जो कतार में सबसे पीछे थी, और पीछे से उस पर कूदने की कोशिश की। तब वह अपने बैलों के बीच छिप गया। जब मैंने उससे पूछा कि बाघ गाड़ी में चढ़ने के अपेक्षाकृत आसान काम में सफल क्यों नहीं हुआ, तो उसने बताया कि वह आधा ही अंदर कूदा था और उसने आगे देखने का इंतजार नहीं किया।

इसी बीच, सोपथी से हमारा पीछा करते हुए आए यात्रियों के एक समूह ने खबर दी कि उन्हें चिनार नदी की ओर जाने वाले ताजे बाघ के पदचिह्न मिले हैं, जो पिछली रात के हैं।

यह सुनकर हम जल्दी से सोपथी लौट आए, और हमें पदचिह्न ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा। चिनार नदी में पानी चांदी की धारा की तरह बह रहा था, किनारों से

किनारों तक लहराता हुआ, और नरम, गीली रेत में हमने साफ देखा कि जिस बाघ ने ये निशान बनाए थे, वह बुरी तरह लंगड़ा रहा होगा। शरीर का लगभग सारा भार बाएं अगले पैर पर था, दाहिना पैर हर कदम पर रेत पर बहुत हल्का रखा जा रहा था।

मैंने पहले भी कहा है कि 'स्पाइडर वैली' इसी स्थान पर चिनार नदी से मिलती है। आधा मील नीचे की ओर, और जिस दिशा में बाघ गया था, उसी दिशा में नदी के मध्य में एक छोटी, लंबी चट्टान थी। यह नदी के तल से लगभग चार फीट ऊपर उठी हुई थी और लगभग चालीस फीट लंबी और आठ फीट चौड़ी थी। मैंने उस रात उस चट्टान पर बैठने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि बाघ चिनार नदी के ऊपर वापस आ सकता है और मुझे मेरी ऊँची जगह पर देख सकता है।

रंगा की पगड़ी, पुराना भूरा कोट और धोती उधार लेकर, मैंने तीनों को पहन लिया, धोती को अपने कपड़ों के ऊपर पहना, और शाम 5:30 बजे तक चट्टान पर बैठ गया। चूंकि रंगा और बायरा अकेले मोरप्पुर लौटने से डर रहे थे, इसलिए उन्होंने इस इलाके में चिनार के किनारे उगने वाले विशाल मुट्ठी वृक्षों की ऊँची डालियों पर आराम से रात बिताने का फैसला किया।

उस समय रातें अंधेरी होती थीं, लेकिन चट्टान पर मेरी स्थिति से, और चूंकि चिनार का जंगल उस स्थान पर लगभग 100 गज चौड़ा था, मैं सफेद रेत पर भरोसा करता था कि वह तारों की रोशनी को प्रतिबिंबित करके बाघ की आकृति को किसी भी दिशा से प्रकट कर देगी। लंगड़ापन के कारण थोड़ी परेशानी के अलावा, मैं जानता था कि बाघ पचास गज की दूरी से अपने शिकार पर हमला नहीं करेगा, बल्कि अंतिम हमला करने से पहले जितना संभव हो सके मेरे करीब आने की कोशिश करेगा।

अपने प्रकाश उपकरणों का परीक्षण करने के बाद, मैंने सावधानीपूर्वक .405 पिस्तौल लोड की और उसे कॉक किया, जिसे मैंने अपने दाहिनी ओर चट्टान पर रख दिया, जहां बाघ उसे देख न सके और उसे शक न हो। मैंने एहतियात के तौर पर अपनी .12 बोर की दोहरी बैरल वाली जेफ्रीज़ पिस्तौल भी अतिरिक्त हथियार के रूप में साथ रखी थी। चोक बैरल में एल.जी. स्लग और दाहिनी बैरल में घातक गोली डालकर, मैंने जेफ्रीज़ को अपने बाईं ओर चट्टान पर रख दिया। चाय की मेरी थर्मस, सुबह की भूख मिटाने के लिए कुछ चपातियाँ और मेरा पाइप रात भर के लिए मेरी ज़रूरतों को पूरा कर रहे थे। मैं अपने ओवरकोट पर बैठ गया, क्योंकि वह उस कठोर चट्टान से मुझे आराम दे रहा था; अगर रात ज़्यादा ठंडी हो जाती तो मैं उसे पहन लेता।

जंगल से आने वाली जानवरों और पक्षियों की सामान्य आवाजों ने दिन को विदाई दी, जबकि रात के निवासियों ने अपनी कम मधुर और अधिक भयावह चीखों के साथ अपनी गतिविधि की बारी का स्वागत किया।

साढ़े सात बजे अंधेरा हो चुका था; चिनार के रेगिस्तान की रेत की परावर्तित सफेदी ने मेरी चट्टान को इस तरह घेर रखा था मानो वह एक द्वीप हो।

नौ बजने के ठीक बाद तेज़ शोर और हलचल हुई और एक हाथी नदी के किनारे से नीचे आया, रेत पर चलता हुआ उस चट्टान के पास से गुजरा जहाँ मैं बेसुध बैठा था, और आगे बढ़ गया। वहाँ उसे नदी के किनारे बहती हवा का झोंका मिला और उसने मेरी गंध पहचान ली। अपनी सूंड का सिरा ज़मीन पर पटकते हुए, और एक अजीब सी आवाज़ निकालते हुए, जैसे जस्ता की चादर तेज़ी से बीच से मुड़ रही हो, वह मुड़ा, मेरी गंध को और सूंघा और तेज़ी से नदी के किनारे घनी झाड़ियों की ओट में चला गया। जब हाथी शरारती नहीं होता, तो उसका व्यवहार ऐसा ही होता है।

ग्यारह बज रहे थे और मैं सूर्यास्त से ही चारों दिशाओं पर नज़र रख रहा था। तभी, मेरे ठीक पीछे और बाईं ओर, मुझे कुछ हलचल महसूस हुई, दिखाई नहीं दी। ध्यान से देखने पर भी कुछ नहीं दिखा। अरे नहीं! क्या वह नदी की हल्की भूरी-सफेद

रेत की चादर पर धुंधला सा कुछ तो नहीं था? मैंने नज़र हटाई और फिर उसी जगह पर वापस देखा जहाँ मुझे धुंधलापन दिखा था। वह वहाँ नहीं था!

मैंने सोचा, 'यह तो अजीब बात है। क्या मेरी आंखों को धोखा हो रहा है, या वे बस थक रही हैं?'

ध्यान से देखने पर मुझे वह फिर से दिखाई दिया। लेकिन इस बार वह मेरे बहुत करीब था, पहले की तुलना में। दरअसल, वह दूर वाले किनारे और उस चट्टान के ठीक बीच में था जिस पर मैं बैठा था।

जब तक मैं इस विचित्र वस्तु को परिभाषित करने में सफल नहीं हो जाता, तब तक मैं किसी और दिशा में देखने का जोखिम नहीं उठा सकता था। और जैसे-जैसे मैं उसे देखता गया, वह फैलती हुई, मेरी ओर तैरती हुई प्रतीत हुई, कभी लंबी तो कभी छोटी होती हुई, लेकिन कोई आवाज़ नहीं कर रही थी।

फिर अचानक मुझे समझ आया कि यह क्या है। बाघ चुपचाप, छोटे-छोटे तेज़ कदमों से, पेट के बल रेंगता हुआ मेरी ओर आ रहा था, जब तक कि उसे यह महसूस नहीं हुआ कि वह अपने अंतिम, घातक हमले के लिए पर्याप्त दूरी पर है।

मेरे चेहरे और गर्दन से पसीना बह रहा था; मैं भय और उत्तेजना से कांप रहा था। लेकिन यह काफी नहीं था; इसलिए मैंने गहरी सांस ली और उसे रोककर कांपना बंद किया, अपने ईश्वर से मौन प्रार्थना की और राइफल को अपनी गोद में रखकर कंधे पर उठा लिया।

लगभग बीस गज दूर खड़ा बाघ, मेरी हलचल देखकर समझ गया कि उसकी मौजूदगी का पता चल गया है। एक पतली काली लकीर की तरह, उसकी पूंछ उसके पीछे हिल रही थी। हमला करने के लिए तैयार होते ही उसका धुंधलापन और भी स्पष्ट हो गया। मेरी टॉर्च की रोशनी सीधे उसके गुर्राते, चपटे सिर पर पड़ी। तभी राइफल चली, उसके छलांग लगाने से ठीक एक पल पहले।

मेरी गोली लगते ही वह उछला और आगे की ओर भागा। मेरी जान इसलिए बच गई क्योंकि मशाल बुझी नहीं थी और मैं दूसरी गोली चला सका। तब तक वह चट्टान तक पहुँच चुका था।

उसके पहले के घाव या मेरी हालिया गोलियों की वजह से—उस समय मैं यह नहीं बता सकता था कि कौन सी वजह थी—वह ऊपर नहीं चढ़ पाया। मेरी तीसरी गोली, जो बिल्कुल किनारे से चलाई गई थी, उसकी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से में जाकर लगी, और उसे हमले को रोक दिया जो लगभग मुझ तक पहुँचने ही वाला था, और वह चिनार की रेत पर लुढ़क गया, उसका अंत हो गया।

सोपथी लौटते समय सीटी बजाते हुए, मैंने रंगा और बायरा को मुट्ठी के पेड़ों से नीचे उतारा, जिन पर वे बैठे थे। मेरी गोलियों की आवाज सुनकर और नदी के किनारे से मुझे आते देख, वे समझ गए कि मैंने बाघ को मार गिराया है।

अगली सुबह हमने उसे औसत कद-काठी का, कुछ दुबला-पतला नर बाघ पाया। सत्रह दिन पहले गाड़ी के पहिए के नीचे से चलाई गई मेरी गोली ने अनुमान से कहीं अधिक नुकसान पहुंचाया था, क्योंकि वह उसके दाहिने कंधे से होकर गुज़री थी, हड्डी को तोड़ते हुए बाहर निकल गई थी। लेकिन घाव अच्छी हालत में था, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह अंततः ठीक हो जाता, हालांकि बाघ अपंग ही रहता। पिछली रात चलाई गई मेरी पहली गोली उसके खुले मुंह से होकर गर्दन से बाहर निकल गई थी, जिससे एक बड़ा छेद हो गया था। फिर भी, वह लड़ता रहा। दूसरी गोली ऊपर की ओर गई, बाएं कंधे के पीछे से अंदर घुसी, फेफड़ों से नीचे की ओर गुज़री और फिर बाहर निकल गई। फिर भी, वह लड़ता रहा। केवल मेरी आखिरी

गोली, जो उसकी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से से होकर गुज़री, ने उसके उस मास्तिष्क को चकनाचूर कर दिया था जो उसकी अदम्य भावना को शक्ति प्रदान करता था।

इस बाघ को आदमखोर किसने बनाया? यह वह पहेली है जिसे हर शिकारी किसी आदमखोर जानवर, चाहे वह बाघ हो या तेंदुआ, को मारने के बाद सुलझाने की कोशिश करता है, न केवल अपनी जानकारी के लिए, बल्कि आम जनता को शिक्षित करने के लिए भी। और यह जानवर भी इस अटल नियम का अपवाद नहीं था कि मानव जाति ही बाघ को आदमखोर बनाती है। उसके दाहिने पैर में, उसी जगह पर एक पुराना गोली का घाव था जहाँ मुझे हमारी पहली मुठभेड़ में चोट लगी थी, बस थोड़ा नीचे; कोहनी के जोड़ में एक चपटी सीसे की गोली फंसी हुई थी, जो एक साल या उससे भी पहले किसी बंदूक से चलाई गई थी।

उस सबसे महत्वपूर्ण जोड़ में फंसी इस बाहरी वस्तु ने न केवल बाघ को असहनीय पीड़ा दी, बल्कि जंगली जानवरों और मवेशियों जैसे अपने वैध भोजन को मारने में उसकी गति को भी काफी हद तक बाधित कर दिया। इसने उसके दाहिने पैर के उपयोग को कमजोर कर दिया था, जो उसके सामान्य शिकार को पकड़ने और नीचे खींचने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निस्संदेह, यही एकमात्र कारण था जिसने बाघ को भूख से बचने के लिए मनुष्यों को भोजन के रूप में अपनाने के लिए मजबूर किया।

---

* नौ नरभक्षी और एक बदमाश देखें

दो

आलम बक्स और बड़ा काला भालू

अब मैं जो कहानी सुनाने जा रहा हूँ, वह एक सुस्त भालू के बारे में है। एक काफी बड़ा, काला और खूंखार भालू।

जैसा कि मैंने अन्य कहानियों में भी उल्लेख किया है, सभी भालू उत्तेजित, अविश्वसनीय और चिड़चिड़े स्वभाव के जानवर होते हैं। वे बिना किसी स्पष्ट कारण के लोगों पर हमला करने के लिए जाने जाते हैं, बशर्ते कि कोई व्यक्ति उनके बहुत करीब से गुजरे, चाहे भालू सो रहा हो, खाना खा रहा हो या बस टहल रहा हो। इसलिए स्थानीय लोग भालुओं से दूरी बनाए रखते हैं; हाथी के साथ-साथ, वे जंगल में रहने वाले लोगों के बीच सबसे अधिक सम्मान के पात्र होते हैं।

यह विशेष भालू अपने बेवजह और असाधारण रूप से गुस्सैल स्वभाव और आक्रामकता के कारण अपनी प्रजाति में सबसे अलग था। वह लोगों पर हमला करने के लिए हर संभव प्रयास करता था, यहाँ तक कि जब वह उन्हें काफी दूर से देखता था तब भी।

उसके असामान्य व्यवहार का कारण समझाना कठिन था। उसके बारे में कई कहानियां प्रचलित थीं, जो जितनी अलग-अलग थीं उतनी ही असाधारण भी। सबसे सरल कहानी यह थी कि वह पूरी तरह पागल था। अन्य कहानियों में कहा गया कि वह एक मादा भालू थी जिसके बच्चे उससे छीन लिए गए थे और उसने मानव जाति से बदला लेने की कसम खाई थी। मुझे लगता है कि किसी समय किसी इंसान ने उस भालू को घायल कर दिया था। शायद सबसे अविश्वसनीय कहानी यह थी कि लगभग एक साल पहले, इस भालू ने एक भारतीय लड़की को साथी बनाने के लिए अगवा कर लिया था, जब वह उस पहाड़ी पर बकरियों का झुंड चरा रही थी जहां वह रहता था। कहानी आगे कहती है कि पूरा गांव लड़की को बचाने के लिए एकजुट हो गया था, और अंततः वे उसे बचाने में सफल हो गए, जिससे भालू बहुत नाराज हो गया; इसके बाद उसने प्रतिशोध में मनुष्यों पर हमला करना शुरू कर दिया।

कारण चाहे जो भी हो, इस भालू के नाम पीड़ितों की एक लंबी सूची दर्ज थी; मुझे बताया गया कि लगभग बारह लोग मारे गए थे और दो दर्जन अन्य घायल हुए थे।

अन्य भालुओं की तरह, वह भी हमेशा शिकार के चेहरे पर हमला करता था, जिसे वह अपने बेहद लंबे और शक्तिशाली पंजों से नोंच-नोंच कर फाड़ देता था। इसके अलावा, वह जानबूझकर बेरहमी से काटता भी था ताकि अपने काम में सफल हो सके। घायलों में से लगभग आधे लोगों की एक या दोनों आंखें चली गई थीं; कुछ की नाक कट गई थी, जबकि कुछ के गाल बुरी तरह से नोंच दिए गए थे। मारे गए लोगों के चेहरे लगभग धड़ से अलग हो गए थे। स्थानीय अफ़वाहों के अनुसार, भालू अपने शिकारों को खाने लगा था, जिनमें से आखिरी तीन को उसने आधा खा लिया था।

मुझे इन अफवाहों की सच्चाई की पुष्टि करने का अवसर नहीं मिला, लेकिन मुझे लगा कि ये कुछ हद तक सच हो सकती हैं, क्योंकि भारतीय सुस्त भालू कभी-कभी सड़े-गले मांस को भी खा लेता है, हालांकि आम तौर पर वह पूरी तरह शाकाहारी होता है और केवल जड़ वाली सब्जियां, फल, शहद, दीमक और इसी तरह के स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ ही खाता है। इसलिए ताजा मांस, यहां तक कि मानव मांस भी, उसके लिए शायद अवांछित न हो।

यह भालू मूल रूप से नागवारा पहाड़ियों में रहता था, जो बैंगलोर से लगभग 105 मील उत्तर-पश्चिम में स्थित अरसिकेरे नामक बड़े शहर के पूर्व में और मैसूर राज्य में स्थित हैं।

इन्हीं पहाड़ियों पर उसने अपने पहले अपराध किए थे। फिर, जैसे-जैसे उसका मनुष्यों का भय कम होता गया और वह अधिक साहसी होता गया, बिना किसी स्पष्ट कारण के वह मैदानों में उतर आया और भोर और शाम के समय खेतों में लोगों को परेशान करने लगा। वह इधर-उधर बिखरी हुई असंख्य छोटी-छोटी चट्टानों से भरी पहाड़ियों में से किसी एक से भोजन की तलाश में निकलता था।

लगभग एक साल से मैं इस जानवर के बारे में कभी-कभार कहानियां सुनता आ रहा था, लेकिन मैंने उन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था, क्योंकि मुझे लगता था कि भारत में जंगली जानवरों द्वारा किए गए हमलों और हत्याओं की लगभग सभी कहानियों की तरह, ये कहानियां भी बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई थीं। इसके अलावा, जैसा कि मुझे लगता है कि मैंने कहीं और भी ज़िक्र किया है, ब्रूइन मेरा काफी पुराना दोस्त है, जिसके प्रति मेरे मन में कोई द्वेष नहीं है। इसलिए मैं उसके पीछे जाने के लिए बिल्कुल भी इच्छुक नहीं था।

लेकिन एक ऐसी घटना घटी जिसने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर कर दिया। मेरा एक पुराना दोस्त है, आलम बक्स नाम का एक बुजुर्ग मुस्लिम, जो अरसिकेरे से होकर शिमोगा जाने वाली मुख्य सड़क पर स्थित एक मुस्लिम दरगाह का रखवाला है। यह दरगाह लगभग पचास साल पहले रहने वाले एक मुस्लिम संत का दफन स्थान है, और भारत भर में फैली सैकड़ों ऐसी ही दरगाहों की तरह, मुस्लिम समुदाय द्वारा इसे संरक्षित और पवित्र माना जाता है। हर दरगाह का अपना रखवाला या देखभाल करने वाला होता है; आमतौर पर कोई बुजुर्ग व्यक्ति होता है जो दरगाह की साफ-सफाई और देखभाल के लिए वहीं रहता है। उसका एक विशेष कर्तव्य दरगाह के ऊपर एक दीपक जलाना है, जो रात भर जलता रहता है, यह दर्शाने के लिए कि संत की स्मृति श्रद्धालुओं के हृदय में सदा प्रज्वलित रहे।

मेरी पहली मुलाकात आलम बक्स से एक अंधेरी रात में हुई थी, जब मैं बाघ के शिकार के लिए बैंगलोर से शिमोगा जा रहा था। मेरी स्टडबेकर कार का पिछला पहिया निकल गया और ब्रेक का ड्रम ज़ोर से सड़क पर टकराया। उस समय मैं अकेला था और कार से बाहर निकलकर मैंने बड़ी घृणा और झुंझलाहट के साथ यह सब देखा। सौभाग्य से, यह घटना लगभग मंदिर के सामने ही हुई थी, और ब्रेक के ड्रम

के टकराने और सड़क पर घिसटने की आवाज़ सुनकर बूढ़े आलम बक्स जाग गए और देखने आए कि आखिर हुआ क्या है। मेरी परेशानी देखकर, उस बूढ़े ने मेरी मदद करने की पेशकश की, और उन्होंने काफी हद तक मेरी मदद की। वे अपने घर से लालटेन लाए, कार का एक्सल उठाते समय सहारा देने के लिए पत्थर इकट्ठा किए, और अंत में, मुझे गर्म चाय पिलाई। मैंने उस बूढ़े आदमी को धन्यवाद दिया, जब उसने गाड़ी का पहिया वापस लगा दिया था, और वादा किया कि जब भी मैं उसकी छोटी सी झोपड़ी के पास से गुजरूंगा, उससे मिलूंगा। मैंने अपना वादा निभाया, और जब भी मैं उसके पास से गुजरता, तो हमेशा उसके लिए कुछ न कुछ सामान जरूर लाता था।

मंदिर से लगभग चार सौ गज आगे पत्थरों का एक छोटा सा टीला था, जिसके बीच लैंटाना की झाड़ी उगी हुई थी। इस टीले के चारों ओर, मंदिर और उससे सटी सड़क तक, खेत थे जिनमें ग्रामीण मानसून की बारिश के बाद मूंगफली उगाते थे। भालुओं को मूंगफली बहुत पसंद होती है और हमारा बूढ़ा काली भालू भी इसका अपवाद नहीं था। पत्थरों से ढका यह टीला उसके लिए सुविधाजनक ठिकाना था और मूंगफली के खेत उसे बहुत आकर्षित करते थे। इसलिए उसने चट्टानों के बीच अपना डेरा जमा लिया।

उसने एक लटकते हुए बड़े पत्थर के नीचे एक गहरी गुफा में अपना ठिकाना बनाया था। सूर्यास्त तक भूख से बेहाल होकर वह अपनी गुफा से बाहर निकलता दिखाई देता था, और जैसे-जैसे शाम ढलकर रात होती जाती, वह पहाड़ी से नीचे उतरकर मूंगफली के खेतों में आ जाता। यहाँ वह पूरी रात व्यस्तता से बिताता, खाता-पीता, उखाड़ता और रात भर इधर-उधर घूमता रहता। भोर होते ही वह तृप्त हो जाता, उसका पेट जड़ों, मूंगफली, दीमकों, कीड़ों और अन्य तरह के चारे से भरा होता, जो उसे भोजन की तलाश में मिला होता। आलस से वह वापस अपने ठिकाने पर चढ़ जाता, और दिन के गर्म घंटे गहरी और हल्की नींद में बिताता। मैं बताना भूल गया कि पहाड़ी के दूसरी ओर एक छोटा सा तालाब था, जिसे भारतीय भाषा में प्राकृतिक झील कहते हैं, जिससे हमारे इस प्यारे भालू को किसी चीज की कमी नहीं होती थी।

लगभग इसी समय, छोटे से मंदिर के पास से गुजरने वाली मुख्य सड़क के किनारे लगे अंजीर के पेड़ों में फल लगने का मौसम आ जाता था। पके हुए लाल फलों के गुच्छे शाखाओं पर भर जाते थे और नीचे ज़मीन पर गिरकर एक मुलायम, लाल, स्पंजी परत बना देते थे। दिन के समय, सैकड़ों तरह के पक्षी अंजीर खाते थे। रात में, बड़ी संख्या में उड़ने वाली लोमड़ियाँ, जो आकार और रूप में प्रसिद्ध 'पिशाच' चमगादड़ जैसी दिखती हैं, अपने चमड़े जैसे पंखों को फड़फड़ाती हुई, चीखती-चिल्लाती, एक-दूसरे को नोचती और आपस में लड़ती हुई पके हुए फलों को चट कर जाती थीं।

दिन-रात आने वाले ये असंख्य आगंतुक, जितने अंजीर खाते थे, उससे दोगुने अंजीर गिरा देते थे, जिससे ज़मीन पर बिखरे हुए फलों की बहुतायत और बढ़ जाती थी। ये फल हवा से उड़कर अक्सर अपने वजन से ही गिर जाते थे। यह सब भालू के लिए और भी आकर्षक था, क्योंकि अब उसे अपने भोजन में एक सुखद बदलाव मिल गया था। यह सब प्रचुर मात्रा में मौजूद था, बस खाए जाने की प्रतीक्षा कर रहा था।

इसलिए वह खेतों से अंजीर के पेड़ों के पास जाया करता था, और इस तरह भोजन की तलाश में वह मंदिर परिसर में पहुँच जाता था। यहीं से मुसीबत शुरू हुई।

आलम बक्स का एक बेटा था, जिसकी उम्र लगभग बाईस वर्ष थी। वह अपने संरक्षक की बूढ़ी पत्नी और छोटी बहन के साथ दरगाह में रहता था। एक रात परिवार ने लगभग नौ बजे भोजन किया और सोने की तैयारी कर रहे थे, तभी लड़का किसी कारणवश बाहर चला गया। रात काफ़ी अंधेरी थी और भालू भी पास ही अंजीर खा

रहा था। अचानक किसी इंसान को देखकर भालू को लगा कि यह बेवजह की घुसपैठ है और उसने तुरंत लड़के पर हमला कर दिया। जानबूझकर नहीं, बल्कि अनजाने में भालू ने लड़के के गले पर काट लिया, न कि उसके चेहरे पर, जो आमतौर पर उसका पहला निशाना होता था। लड़के ने चीखने की कोशिश की, लात मारी और संघर्ष किया। भालू ने उसे फिर से काटा, इस बार नाक और एक आँख पर, और उसके सीने, कंधों और पीठ पर बुरी तरह से खरोंचें मारीं। फिर उसने उसे छोड़ दिया और अँधेरे में भाग गया।

खून से लथपथ लड़का लड़खड़ाते हुए अपने माता-पिता के पास लौटा। उसकी गर्दन की नस फट गई थी, और हालाँकि उन्होंने उपलब्ध कपड़ों से खून रोकने की कोशिश की, लेकिन वे उसकी जान बचाने में असफल रहे। अंधेरे में उसकी जान धीरे-धीरे निकल गई, क्योंकि एक-एक कपड़ा उसके खून से भीगता चला गया।

भोर होते ही युवक की मृत्यु हो गई, जबकि अंजीर और मूंगफली से लबालब भरा बूढ़ा भालू चट्टानों के बीच बनी अपनी गुफा में वापस चढ़ गया।

आलम बक्स एक गरीब आदमी था और उसके पास मुझे टेलीग्राम भेजने के लिए पैसे नहीं थे, यहाँ तक कि ट्रेन या बस से बैंगलोर जाने का किराया भी नहीं था। लेकिन उसने मुझे एक पोस्टकार्ड भेजा जिस पर दुख भरी कहानी लिखी थी; पेंसिल से, काँपती हुई उर्दू लिपि में। वह उसके आँसुओं से भीगा हुआ था। पोस्टकार्ड दो दिन बाद पहुँचा और मैं तीन घंटे के भीतर आसिकेरे के लिए निकल गया।

मुझे लगा था कि इस भालू का शिकार करना आसान होगा और इसमें ज़्यादा से ज़्यादा एक-दो घंटे लगेंगे। इसलिए, मैंने लंबी यात्रा की तैयारी नहीं की थी। मैं अपने साथ सिर्फ़ एक टॉर्च, .405 विंचेस्टर राइफ़ल और एक जोड़ी कपड़े लेकर गया था। मैं शाम पाँच बजे के कुछ देर बाद आलम बक्स पहुँचा और उसने मुझे अपनी कहानी सुनाने में ज़्यादा समय नहीं लगाया।

उस समय चांदनी नहीं थी। फिर भी, जो योजना अपनानी थी वह सरल प्रतीत होती थी; अर्थात, पूरी तरह अंधेरा होने तक प्रतीक्षा करना और फिर अपनी टॉर्च की सहायता से भालू की खोज में निकलना।

इस प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए, आलम बक्स ने मुझे सूर्यास्त के समय अपने घर में प्रवेश करने दिया और यह दिखाने के लिए दरवाज़ा बंद कर दिया कि सब कुछ शांत है। उस छोटे से अंधेरे कमरे में हम एक छोटे से तेल के दीपक की टिमटिमाती रोशनी में बातें कर रहे थे, जबकि वह बार-बार अपने बेटे की मृत्यु पर विलाप कर रहा था। वास्तव में, कुछ ही मिनटों में पूरा परिवार रोने-धोने लगा। मुझे मजबूरी में आठ बजे तक लगातार यह सब सुनना पड़ा, जब मैं इसे और सहन नहीं कर सका और भालू की तलाश में बाहर जाने का फैसला किया।

अपनी राइफल में गोलियां भरकर और टॉर्च को ठीक से काम करते देख, मैं बाहर निकला। आलम बक्स ने मेरे पीछे दरवाजा बंद कर दिया और कुंडी लगा दी। अंधेरा घना था, और जैसे ही मैंने राइफल के मुंह के पास लगी टॉर्च का बटन दबाया, उसकी तेज रोशनी मेरे बाईं ओर मूंगफली के खेतों और दाईं ओर सड़क के किनारे लगे अंजीर के पेड़ों की घनी कतार पर पड़ी।

भालू कहीं नज़र नहीं आया, इसलिए मैंने अंजीर के पेड़ों से उसकी तलाश शुरू की। ये पेड़ सड़क के दोनों ओर उगे हुए थे, इसलिए मैंने सोचा कि सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि मैं सड़क के किनारे-किनारे चलूँ और अपनी राइफल को सड़क के एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ घुमाता रहूँ। मैं इसी तरह आसिकेरे से लगभग डेढ़ मील दूर चला, लेकिन भालू का कोई निशान नहीं दिखा। फिर मैं मंदिर वापस आया और

विपरीत दिशा में डेढ़ मील और चला, लेकिन फिर भी भालू का कोई निशान नहीं मिला। इसलिए मैं मंदिर वापस आया और मूंगफली के खेतों में तलाश शुरू कर दी।

टॉर्च की रोशनी से परावर्तित होकर कई आंखों की चमकीली झलकें मेरी ओर चमक रही थीं। लेकिन वे खरगोशों और तीन-चार सियार की आंखें निकलीं। मैंने टीले का चक्कर लगाया और तालाब के किनारे-किनारे दूसरी तरफ चलने लगा; जहां मुझे जंगली सूअरों का एक छोटा झुंड कीचड़ में लोटता हुआ मिला। लेकिन बूढ़े भालू का अभी भी कोई निशान नहीं था। फिर मैं टीले के पास गया और उसके चारों ओर दो-तीन बार घूमकर अपनी टॉर्च ऊपर और चारों दिशाओं में चमकाई। यह थका देने वाला काम था, और बूढ़ा भालू दिखाई नहीं दिया। तीसरी बार तो मैं लगभग एक बहुत बड़े रसेल वाइपर पर पैर रखने ही वाला था जो मेरे रास्ते में दो चट्टानों के बीच कुंडली मारकर बैठा था। भालू की आंखों की परावर्तित चमक को ढूंढने में व्यस्त होने के कारण मैंने अपने सामने की ज़मीन पर ध्यान नहीं दिया। मेरा पैर वाइपर से कुछ ही इंच दूर था जब उसने हमला करने की तैयारी में ज़ोरदार, कर्कश फुफकार के साथ अपना शरीर फुला लिया। सहज ही मैंने उसकी चेतावनी को माना और पास नहीं आया, और पीछे की ओर छलांग लगाई। साथ ही, मैंने टॉर्च की रोशनी सीधे सांप पर डाली। सांप ने अपने जबड़े फैलाकर उस जगह पर काटने के लिए झपट्टा मारा, जहां कुछ ही पल पहले मेरे पैर थे। बाल-बाल बच गया, और उस पल मुझे लगा कि सांप को गोली मार दूं। लेकिन इससे बहुत शोर मच जाता और भालू भी डरकर भाग सकता था, साथ ही एक कीमती कारतूस भी बर्बाद हो जाता। आखिरकार, सांप ने मुझे चेतावनी देकर अच्छा किया था, इसलिए मैंने बदले में उस पर एक छोटा पत्थर फेंका, जिससे वह चट्टानों के नीचे रेंगकर भाग गया।

तब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि भालू या तो शाम को पहले ही बाहर निकल गया था और बहुत दूर भटक गया था, या फिर उसे भूख नहीं लगी थी और वह अभी भी अपनी गुफा में ही था। मैं आलम बक्स की झोपड़ी में लौट आया और कुछ घंटों में एक और चक्कर लगाने का फैसला किया।

मैंने ऐसा ही किया, और उसके बाद दो और चक्कर लगाए, कुल मिलाकर चार चक्कर लगाए, लेकिन भालू कहीं दिखाई नहीं दिया, और झूठी सुबह होने पर भी मैं व्यर्थ ही दुश्मन की तलाश में पहाड़ी के चारों ओर चक्कर लगाता रहा।

दिन की रोशनी होते ही मैंने आलम बक्स से कहा कि मैं बेंगलोर लौट जाऊंगा, लेकिन उन्होंने मुझसे आज का दिन रुकने और पहाड़ी पर चढ़कर गुफा में भालू को ढूंढने का आग्रह किया। इस बीच उनकी पत्नी ने गरमा गरम चपातियां (गेहूं के आटे से बनी गोल चपटियां) और गरमा गरम चाय तैयार कर दी थी, जिन्हें मैंने बड़े चाव से खाया। फिर मैं सो गया। दोपहर करीब आलम बक्स ने मुझे जगाया और बताया कि उनकी पत्नी ने मेरे लिए खास पुलाव बनाया है। इसके लिए उनका धन्यवाद करते हुए मैंने भी उसे खाना शुरू किया और देखते ही देखते सारा खत्म कर दिया। श्रीमती आलम बक्स बहुत प्रसन्न हुईं कि मुझे उनका खाना इतना पसंद आया। सूरज अब अपने चरम पर था और दोपहर की तेज़ गर्मी में चमकती चट्टानों पर बेरहमी से चमक रहा था। मुझे पता था कि भालू को ढूंढने का यही अच्छा समय होगा, यह मानते हुए कि वह घर पर होगा, क्योंकि वह गहरी नींद में सो रहा होगा।

आलम बक्स मेरे साथ पहाड़ी पर चढ़े और पचास गज़ की दूरी से उन्होंने मुझे वह ढलान वाली चट्टान दिखाई जिसके नीचे भालू की गुफा थी। मैं अपने जूतों के रबर के तलवों से बिना आवाज़ किए, पंजों के बल ऊपर चढ़ने लगा। लेकिन इस फायदे के बदले मुझे जल्द ही एक बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा, क्योंकि धूप में तपती चट्टान की गर्मी रबर को भेदकर मेरे पैरों के तलवों को जलाने लगी।

गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँचकर, मैं अपने घुटनों के बल बैठ गया और ध्यान से सुनने लगा।

सोते हुए भालू के खर्राटे लेना आम बात है, अक्सर इंसानों के खर्राटों जितने तेज़। अगर भालू गहरी नींद में सो रहा होता, जैसा कि मुझे उम्मीद थी, तो मुझे उसकी वो जानी-पहचानी आवाज़ सुनने की उम्मीद थी। लेकिन मुझे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी, और लगभग दस मिनट तक ऐसे ही बैठे रहने के बाद, सूरज की किरणें मेरी कमीज़ के पीछे से महसूस होने लगीं। कुछ कंकड़ पास ही पड़े थे, और मैंने उनमें से कुछ उठाकर गुफा में फेंकना शुरू कर दिया।

इस तरह की हरकत से तो सो रहा भालू भी बहुत गुस्सा हो जाता है। लेकिन मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। इसलिए मैं गुफा के प्रवेश द्वार के पास गया और पत्थर अंदर की तरफ फेंके। फिर भी कुछ नहीं हुआ। मैंने और पत्थर फेंके, लेकिन फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ। भालू अपनी गुफा में नहीं था।

पहाड़ी से नीचे उतरते हुए मैंने आलम बक्स को खबर दी और बैंगलोर लौटने की अपनी मंशा बताई। मैंने उनसे अनुरोध किया कि अगर भालू दोबारा दिखाई दे तो मुझे टेलीग्राम भेज दें। मैंने उन्हें टेलीग्राम के खर्च और तात्कालिक खर्चों के लिए कुछ पैसे दिए। फिर मैं बैंगलोर के लिए रवाना हो गया। एक महीना बीत गया, और मुझे कोई खबर नहीं मिली।

मंदिर स्थल से लगभग बीस मील उत्तर-पश्चिम दिशा में मैसूर के कादुर जिले में स्थित चिकमगलूर का जंगल शुरू होता है। चिकमगलूर और कादुर के लगभग मध्य में जंगल से घिरा हुआ छोटा सा कस्बा सकरेपटना स्थित है।

मुझे अगली खबर यह मिली कि सकरेपटना के पास एक भालू ने दो लकड़हारों पर गंभीर हमला किया था, जिनमें से एक की बाद में मौत हो गई। चिकमगलूर के जिला वन अधिकारी (डीएफओ) ने मुझे पत्र लिखकर पूछा कि क्या मैं आकर उस भालू को मार सकता हूँ।

मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि यह वही भालू था जो आलम बक्स के बेटे की मौत का कारण बना था, लेकिन जंगल के विशाल क्षेत्र में किसी एक विशेष भालू को ढूंढना भूसे के ढेर में सुई खोजने जैसा था, इसलिए मैंने पशुपालन कार्यालय को पत्र लिखकर जीनवर के ठिकाने के बारे में अधिक सटीक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया।

दस दिन बाद उसने जवाब दिया कि भालू कस्बे से लगभग तीन मील दूर एक छोटी पहाड़ी पर एक गुफा में रह रहा है, जो 'आयनकेरे' नामक एक बड़ी झील की ओर जाने वाले पैदल मार्ग के पास है, और यह भी कि उसने वन रक्षक पर हमला किया था, जो अपनी नियमित गश्त के दौरान इसी रास्ते पर चल रहा था।

इसलिए मैं कार से चिकमगलूर गया, वहां से वन विभाग का अधिकारी (डीएफओ) लिया और सकरेपटना कस्बे की ओर चल पड़ा, जहां मैसूर वन विभाग का एक छोटा सा विश्राम गृह है। मैंने अगले कुछ दिनों के लिए यहीं अपना मुख्यालय बनाया।

संयोगवश—या कहें बदकिस्मती से—अगली ही दोपहर एक आदमी दौड़ता हुआ बंगले पर आया और हमें बताया कि एक पशुपालक—दरअसल उसका भाई—उसी पहाड़ी के पास अपने मवेशियों को चरा रहा था जहाँ भालू के रहने की आशंका थी, तभी उस पर भालू ने हमला कर दिया। उसने मदद के लिए चीख-पुकार मचाई और उसकी चीखें भालू की गुर्राहट में मिल गईं। उसका भाई, जो पहाड़ी से नीचे और पगडंडी के पास था, आवाज़ें सुनकर और इंतज़ार नहीं किया और तुरंत बंगले पर वापस भागा ताकि हमें यह खबर दे सके।

भालू मूलतः रात्रिचर प्राणी होते हैं और दिन के उजाले में कभी बाहर नहीं निकलते। ज़्यादा से ज़्यादा वे शाम या सुबह तड़के ही दिखाई देते हैं, दोपहर में तो बिलकुल नहीं। शायद दुर्भाग्यवश चरवाहा किसी ऐसी जगह के बहुत करीब चला गया था जहाँ भालू सो रहा था, जिसके कारण भालू ने उस असामान्य समय पर उस पर हमला कर दिया। इस अजीब हमले का यही एकमात्र कारण हो सकता है।

शाम के लगभग 4:30 बज रहे थे जब उसने हमें यह खबर दी, और मैं अपनी राइफल, टॉर्च और तीन-चार सहायकों के साथ उस चरवाहे को बचाने के लिए निकल पड़ा जिस पर हमला हुआ था। हमें जल्द ही पता चला कि घटनास्थल की दूरी उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति के भाई द्वारा बताई गई दूरी से कहीं अधिक थी। मैंने अनुमान लगाया कि जंगल में लगभग छह मील चलने के बाद हम एक पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे जो घनी झाड़ियों से ढकी हुई थी, जिसमें बांस के झुंड भी शामिल थे। तब लगभग छह बज चुके थे और सर्दी का मौसम होने के कारण अंधेरा होने लगा था। मेरे साथ आए लोगों ने आगे आने से इनकार कर दिया और कहा कि वे सकरेपटना लौट जाएँगे, मुझे उनके साथ चलने की सलाह दी और सुझाव दिया कि हमें अगली सुबह अपनी खोज जारी रखने के लिए वापस आना चाहिए। लापता व्यक्ति का भाई वहीं रुकने के लिए तैयार हो गया जहाँ हम खड़े थे, लेकिन वह जंगल में आगे आने से बहुत डरा हुआ था। अपने लापता रिश्तेदार को खोजने में मेरी मदद करने के लिए वह बस इतना ही कर सका कि उसने अपने हाथ के इशारे से उस क्षेत्र की ओर संकेत किया जहाँ हमला हुआ था।

मैं उस दिशा में आगे बढ़ा और उस आदमी का नाम ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगा जिस पर हमला हुआ था। मेरी चीखों का कोई जवाब नहीं मिला और मैं झाड़ियों के बीचोंबीच और अंदर चला गया। तब तक लगभग अंधेरा हो चुका था, लेकिन मैं घबराया नहीं, क्योंकि मैं अपनी टॉर्च साथ लाया था और झाड़ियों के बीच से रास्ता ढूंढते हुए उसे चमकाने लगा।

कुछ ही देर में घना जंगल इतना घना हो गया कि मैं आगे नहीं बढ़ सका और वापस लौटने ही वाला था कि तभी मुझे दूर से एक हल्की सी कराह सुनाई दी। उस जगह पर ज़मीन ढलानदार होकर एक घाटी जैसी बन जाती थी जो पहाड़ी की दो चोटियों के बीच स्थित थी, और कराह इस घाटी के भीतरी हिस्से से आती हुई प्रतीत हुई।

लापता व्यक्ति का नाम थिम्मा था, और मैंने अपने दोनों हाथों को मुँह पर रखकर, जोश से उसका नाम पुकारा, और बीच-बीच में जवाब सुनने का इंतज़ार करता रहा। हाँ! निःसंदेह, वही आवाज़ फिर से सुनाई दी! एक धीमी, सिसकती हुई आवाज़, कमज़ोर, लेकिन फिर भी सुनाई देने वाली। यह आवाज़ निश्चित रूप से घाटी से मुझ तक पहुँची।

घनी झाड़ियों से रास्ता बनाते हुए, मैं ढलान पर मुश्किल से नीचे उतरा, चट्टानों और ढीले पत्थरों पर फिसलता रहा, और बार-बार काँटों का सहारा लेता रहा। कुछ सौ गज चलने के बाद, मैंने फिर से आवाज़ लगाई। कुछ देर बाद मुझे अपने दाहिनी ओर कहीं से कराहने की आवाज़ सुनाई दी। मैं इसी तरह उस आवाज़ का पीछा करता रहा, जब तक कि आखिरकार मुझे थिम्मा एक पेड़ के नीचे अपने ही खून के पोखर में पड़ा हुआ नहीं मिला। उसका चेहरा कच्चे मांस और टूटी हड्डियों का ढेर था, और उसके साँस लेने का एकमात्र संकेत जमे हुए खून से निकलती हवा के बुलबुले थे। इसके अलावा, भालू ने अपने पंजों से उसके पेट पर खरोंचें मारी थीं, जिससे बाहरी मांस फट गया था और आंत का एक हिस्सा बाहर निकला हुआ था। जब मैंने उसे पाया तो वह लगभग बेहोश था, और मुझे जल्द ही एहसास हुआ कि जिसे मैंने अपनी

आवाज़ का कराहना समझा था, वह तो बस उसकी बेहोशी में बीच-बीच में निकलने वाली कराहें थीं।

हालात बेहद गंभीर थे, और जांच करने पर मैंने पाया कि एक और रात खुले में रहने से सुबह तक उसकी मौत हो जाएगी। इसलिए उसे वापस उसी जगह ले जाने के अलावा कोई चारा नहीं था जहाँ मैंने उसके भाई को छोड़ा था। उसकी दयनीय हालत को देखते हुए उसे कंधे पर उठाना बहुत मुश्किल था। स्थिति और भी खराब इसलिए थी क्योंकि वह भारी-भरकम शरीर वाला आदमी था, वजन में मेरे बराबर। लेकिन मैंने किसी तरह उसे उठा लिया और अपनी राइफल के बट का सहारा लेकर उसी रास्ते से ऊपर की ओर बढ़ने लगा जिससे मैं आया था।

मैं दोबारा कभी ऐसी भयानक यात्रा का अनुभव नहीं करना चाहता। मैं लगभग उस पहाड़ी की चोटी पर पहुँच ही गया था जहाँ से मैं कुछ देर पहले नीचे आया था, तभी यह हादसा हुआ। मेरा बायाँ पैर फिसल गया और दो बड़े पत्थरों के बीच ज़ोर से जा गिरा। जैसे ही मैं थिम्मा के साथ चट्टान पर गिरा, मुझे एक तेज़, चुभने वाला और दर्द भरा झटका लगा, और राइफल ज़मीन पर गिर पड़ी।

मेरे टखने में मोच आ गई थी और मैं खुद चलने में असमर्थ था। जहाँ हम लेटे थे, वहीं से मैंने भाई को आवाज़ देना शुरू किया; लेकिन लगभग एक घंटे बाद मुझे एहसास हुआ कि वह या तो मुझे सुन नहीं पा रहा था या सुनना नहीं चाहता था। मेरे पास मरने वाले आदमी के साथ रात बिताने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

टॉर्च की बैटरी को रात भर चलाने की इच्छा से, मैंने ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल नहीं किया। सुबह के शुरुआती घंटे कड़ाके की ठंड से भर गए और थिम्मा की कराहें धीरे-धीरे कमज़ोर होती गईं, यहाँ तक कि अंत में वे घुरघुराहट में बदल गईं। मुझे एहसास हुआ कि वह मर रहा है। सुबह लगभग 5 बजे उसकी मृत्यु हो गई, और मैं उसके पास तब तक बैठा रहा जब तक कि सुबह छह बजे के कुछ देर बाद उजाला नहीं हो गया।

फिर मैंने खुद को पैरों पर खड़ा करने की पूरी कोशिश की, लेकिन पाया कि मेरा पैर मेरा भार नहीं संभाल पा रहा था। मैंने रेंगने की कोशिश की, लेकिन कांटों ने एक अभेद्य बाधा खड़ी कर दी। उन्होंने मेरे हाथों, चेहरे और कपड़ों को बुरी तरह से नोच डाला। जल्द ही मैंने हार मान ली और इस बात को स्वीकार कर लिया कि मुझे तब तक इंतजार करना होगा जब तक कोई बचाव दल हमारी तलाश में नहीं आ जाता।

दोपहर ढलने के काफ़ी बाद तक वन विभाग के लोग, थिम्मा के भाई और लगभग एक दर्जन ग्रामीणों के साथ, घटनास्थल के पास नहीं पहुँच पाए। आखिरकार, मेरी चीखों से मार्गदर्शन पाकर वे हमें ढूंढ पाए, और उसी शाम मैं सक्रेपटना वन बंगले में वापस आ गया, चारपाई पर लेटा हुआ था और मेरा टखना बुरी तरह सूजा हुआ था। वन विभाग के अधिकारी लगभग नौ बजे आए और मुझे मेरी कार में चिकमगलूर ले गए, जहाँ मैं इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल गया। एक हफ्ते बाद मैं लंगड़ाते हुए चलने में सक्षम हुआ। आप समझ सकते हैं कि इस समय तक मैं देरी के कारण खुद पर बहुत गुस्सा था, और उससे भी ज्यादा उस बड़े, दुष्ट, काले भालू पर जिसने सारी मुसीबत खड़ी की थी। मैंने ठान लिया था कि जैसे ही मैं चलने लायक हो जाऊंगा, उसे हर हाल में पकड़ूंगा।

इस बीच वह निष्क्रिय नहीं बैठा था, बल्कि उसने लोनकेरे झील की ओर जाने वाले रास्ते पर चल रहे दो और लोगों पर हमला कर दिया था।

चार दिन बाद मैं सक्रेपटना वापस आ गया, लगभग चलने लायक हो गया था, हालांकि लंबी दूरी तक नहीं। यहाँ मुझे बताया गया कि भालू गाँव से लगभग एक मील

दूर खेतों में आने लगा था, जो बोरम के पेड़ों से घिरे थे, जिनके फल उस समय पकने वाले थे। शाम 5 बजे मैं उन पेड़ों के पास पहुँचा और सबसे बड़े पेड़ को चुना, जिस पर सबसे ज़्यादा फल लगे थे, और भालू के आने की उम्मीद में रात उसके नीचे बिताने का फैसला किया। मैं पेड़ के तने की ओर पीठ करके ज़मीन पर बैठ गया, और राइफल को अपने घुटनों पर रख लिया।

ग्यारह बजने के कुछ ही देर बाद मुझे पास आते हुए भालू की गुर्राहट और गुनगुनाने की आवाज़ सुनाई दी। वह बार-बार रुक रहा था, शायद कुछ खाने की तलाश में, और जैसे-जैसे वह करीब आता गया, मुझे उसकी जड़ों को खोदने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। उसे बोरम के पेड़ तक पहुँचने में लगभग एक घंटा लग गया, तब तक मैं पूरी तरह तैयार हो चुका था। आखिरकार, वह झाड़ियों से बाहर निकला और खुले में टहलने लगा, तारों की हल्की रोशनी में एक काला धब्बा उसकी परछाई की तरह दिख रहा था।

मैंने टॉर्च का बटन दबाया और रोशनी उस पर पड़ी। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर मुझे हैरानी से देखने लगा, और मैंने टॉर्च की रोशनी में साफ दिख रहे सफेद V-निशान के बीचोंबीच उसकी छाती में गोली मार दी। और इस तरह उस खतरनाक भालू का अंत हो गया।

भालू आमतौर पर उत्तेजित हो जाते हैं लेकिन आमतौर पर हानिरहित प्राणी होते हैं। इस विशेष भालू पर कैन की छाप थी, क्योंकि यह बिना किसी उकसावे के कई लोगों का निर्मम और सुनियोजित तरीके से हत्यारा बन गया था, जिन्हें इसने बेहद भयानक ढंग से मौत के घाट उतार दिया था।

तीन

मामंदुर नरभक्षी

यह जानवर मादा थी, और वह भी कम उम्र की; इसलिए उसके नरभक्षी बनने का कोई स्पष्ट कारण नहीं था। लेकिन चूंकि उसने चमाला घाटी के आदमखोर बाघ की मृत्यु के कुछ ही समय बाद अपने हिंसक कारनामों को अंजाम देना शुरू किया—जिसके जीवन की कहानी मैंने 'चमाला घाटी का धारीदार आतंक'* नामक कहानी में बताई है—और वह आंशिक रूप से उसी इलाके में सक्रिय थी, इसलिए शायद स्थानीय अफवाहों में कुछ सच्चाई थी कि वह उस खूंखार हत्यारे की साथी थी। एक और, और उतनी ही संभावित व्याख्या यह थी कि वह एक बड़ी हो चुकी शावक थी, जिसने अपने दुष्ट पिता से नरभक्षी और नरभक्षी बनने की बुरी प्रथा सीखी थी।

उसके अतीत चाहे जो भी रहा हो, इस बाघिन ने पहली बार किसी इंसान को मारने की कोशिश तब की जब उसने एक चरवाहे पर हमला किया। चरवाहा अपने मवेशियों के झुंड में से एक दुधारू गाय को बचाने की कोशिश कर रहा था, जिसे बाघिन ने चुनकर हमला किया था और जिसकी गर्दन उसने बड़ी कुशलता से तोड़ दी थी। चरवाहे ने बड़ी बहादुरी से, लेकिन मूर्खता से, बाघिन को गिरी हुई गाय से दूर भगाने की कोशिश की। वह चिल्लाता रही और हवा में अपना डंडा लहराता रही। आमतौर पर ऐसी तरकीबें बाघ को डराकर भगा देती हैं, लेकिन इस मामले में इसका उल्टा असर हुआ। भागने के बजाय, बाघिन चरवाहे की ओर दौड़ी और उनके बीच की बीस गज की छोटी सी दूरी को अविश्वसनीय गति से तय कर लिया। चरवाहा दुम दबाकर भागा, लेकिन बाघिन ने अपने अगले पंजे से उस पर ऐसा वार किया जिससे उसके कंधे से लेकर नितंबों तक की त्वचा फट गई। वार के वज़न से वह जमीन पर गिर पड़ा; लेकिन मनुष्य पर अपने इस पहले हमले में, बाघिन ने जाहिर तौर पर यह मान लिया कि उसने पर्याप्त नुकसान पहुँचाया है, क्योंकि वह उस गाय की ओर वापस मुड़ गई जिसे उसने अभी-अभी मारा था।

होश में आने पर चरवाहे को मात्र चालीस गज की दूरी पर बाघिन द्वारा गाय को नोचने की हड्डियों के टूटने की आवाज़ सुनाई दी। सौभाग्य से, उसने अपना धैर्य बनाए रखा और उठने की कोशिश नहीं की। संभवतः ऐसा कोई भी हिलना-डुलना दूसरे हमले को उकसा सकता था, जो इस बार घातक साबित हो सकता था।

इसलिए वह जिस तरह गिरा था, उसी तरह मुंह के बल पड़ा रहा, लेकिन चुपके से अपने सिर को बहुत धीरे-धीरे और थोड़ा सा हिलाकर, वह बाघिन को भोजन करते हुए देखने में सक्षम था।

बाद में उसने मुझे बताया कि वह अगले एक घंटे को जीवन भर नहीं भूलेगा। ऐसा लगता है कि बाघिन बीच-बीच में खाना बंद कर देती, अपना सिर उठाती और उसकी तरफ़ देखती। एक बार तो वह खड़ी भी हो गई और उसकी तरफ़ कुछ क़दम भी बढ़ाए। बेचारा डर के मारे चीखने ही वाला था और लगभग हिलने की गलती कर बैठा। शायद उसी डर ने उसकी जान बचा ली, क्योंकि वह हिल नहीं पा रहा था। सौभाग्य से, बाघिन ने अपना इरादा बदल दिया और गाय के पास लौट गई।

चरवाहे ने मुझे बताया कि एक घंटे से अधिक समय बीतने के बाद ही बाघिन ने आखिरकार तय किया कि उसका पेट भर गया है। फिर वह आराम से अपने पिछले पैरों पर बैठ गई, अपने अगले पंजों को अच्छी तरह चाटा और अपना चेहरा साफ़ करने लगी। लेटे हुए चरवाहे पर एक आखिरी नजर डालकर, वह आखिरकार खड़ी हुई, संतुष्टि से अंगड़ाई ली और जंगल की ओर चल पड़ी।

चरवाहा दस मिनट तक वहीं लेटा रहा, ताकि उसे पूरी तरह यकीन हो जाए कि वह सचमुच चली गई है। फिर वह उठा और जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, घर की ओर भागा।

इस कहानी का एक और उतना ही आश्चर्यजनक अंत है: बाघिन द्वारा किए गए गहरे घाव उचित चिकित्सा उपचार के अभाव में भी पूरी तरह से ठीक हो गए, सिवाय कुछ पिसी हुई जड़ी-बूटियों को गोबर में मिलाकर एक स्थानीय चिकित्सक द्वारा घावों पर मलने के। शायद उसके कंधों पर लिपटी शॉल ने पंजों के नीचे मौजूद विषैले पदार्थ को रक्त में प्रवेश करने से रोक दिया था।

यह घटना मामंदुर रेलवे स्टेशन से मुश्किल से चार मील की दूरी पर घटी थी, जहां एक चट्टानी ढलान लगभग तीन सौ फीट नीचे एक वन घाटी में तेजी से गिरती थी, जिसके बीच से एक छोटी सी धारा बहती थी।

अगली घटना भी हमले की ही थी, लेकिन इस बार पीड़ित इतना भाग्यशाली नहीं था। एक बार फिर, एक चरवाहा ही इसका शिकार हुआ, एक बुजुर्ग व्यक्ति जिसकी घावों के कारण मृत्यु हो गई। घटनाक्रम पहले वाले मामले जैसा ही था। बाघिन रेलवे लाइन से एक मील पश्चिम में जंगल से होकर गुजरने वाले मवेशियों के झुंड में घुस गई और एक बार फिर, उसने एक दुधारू गाय को अपना शिकार बना लिया। जैसे ही डरे हुए मवेशी उस बुजुर्ग चरवाहे के पास से भागने लगे, वह उस दिशा में दौड़ा जहाँ से वे आए थे, ताकि उनके डर का कारण पता चल सके।

कुछ ही देर में उसकी नज़र बाघिन पर पड़ी, जो मरी हुई गाय पर सवार थी। इस बार उसने उसे डराने की कोशिश नहीं की; चरवाहा आश्चर्य से वहीं रुक गया। लेकिन जाहिर तौर पर बाघिन को उसका वहां आना पसंद नहीं आया, क्योंकि उसने उस पर हमला कर उसे बुरी तरह घायल कर दिया। फिर वह मरी हुई गाय के पास वापस गई और उसे झाड़ियों में घसीटकर ले गई।

तीन घंटे बाद बूढ़े आदमी को मदद मिली। मवेशी भगदड़ मचाते हुए रेल पटरी पार कर गए थे। बूढ़े आदमी का भाई उसे ढूंढते हुए आया तो उसने देखा कि मवेशी तो चले गए हैं, लेकिन उनका मालिक कहीं नज़र नहीं आ रहा। रेल की मेड़ पर खड़े होकर उसने अपने भाई को ज़ोर से पुकारा, पर कोई जवाब नहीं मिला। तब उसे कुछ गड़बड़ का एहसास हुआ और वह मदद के लिए मामंदुर गाँव की ओर भागा।

भागते हुए मवेशियों के पदचिह्नों का पीछा करते हुए खोज दल को वह घायल व्यक्ति मिला। वह बेहोश था और खून की कमी से लगभग मरणासन्न था। वे उसे गाँव

ले गए और फिर स्टेशन ले गए, ताकि उसे आधे घंटे में आने वाली मालगाड़ी के गार्ड के डिब्बे में बिठा सकें, जो नौ मील दूर स्थित रेनिगुंटा कस्बे के लिए जा रही थी, जहाँ एक अस्पताल था। लेकिन मालगाड़ी के मामंदुर पहुँचने से पहले ही उस बूढ़े चरवाहे की मृत्यु हो गई।

अपनी तीसरी हत्या के बाद ही इस बाघिन में आदमखोर बनने की प्रवृत्ति विकसित हुई। उसने फिर से एक चरवाहे पर हमला किया, इस बार सुबह लगभग नौ बजे। घटना का ब्योरा दूसरे चरवाहे ने दिया, जो हमले के समय पहले चरवाहे के बगल में खड़ा था। बाघिन हमेशा की तरह झुंड में घुस गई और एक युवा बैल पर झपटी। किसी तरह, वह बैल को गिराने के अपने पहले प्रयास में असफल रही। दूसरी ओर, बाघिन को अपनी पीठ पर लिए हुए बैल पागलों की तरह उन दोनों चरवाहों की ओर भागा जहाँ वे खड़े थे। उनमें से एक—वह व्यक्ति जो बच गया—भाग निकला। दूसरा चरवाहा कुछ नहीं कर सका, बल्कि आश्चर्य से वहीं जड़वत खड़ा रह गया।

भागते हुए उस आदमी ने सिर्फ एक बार पीछे मुड़कर देखा, और तभी उसने बाघिन को भागते हुए बैल से छलांग लगाकर भयभीत चरवाहे पर हमला करते हुए देखा। इसके बाद उसने कुछ नहीं देखा, क्योंकि वह मुड़कर जितनी तेज़ी से और जितनी दूर हो सकता था, भाग गया।

कुछ घंटों बाद जब बचाव दल लाठियों और बंदूकों से लैस होकर पहुंचा, तो पीड़ित का शव वहां नहीं मिला। इसलिए दल अतिरिक्त सहायता लेने के लिए वापस लौट गया। तीन घंटे और बीतने के बाद बचाव दल, जिसमें अब लगभग सौ लोग शामिल थे, हमले वाली जगह पर पहुंचे। उन्होंने एक स्पष्ट निशान का पीछा किया और एक सूखे नाले की रेतीली तलहटी में औंधे मुंह पड़ा शव पाया। छाती और नितंबों का कुछ हिस्सा खा लिया गया था।

अगले कुछ महीनों में तीन और लोगों की हत्या हुई। इनमें से एक चरवाहा था, एक रेनिगुंटा मार्ग पर यात्रा कर रहा यात्री था, और तीसरा लुंबानी था, जो जंगली शहद इकट्ठा करने निकला था। इसके बाद, मवेशियों की चराई पूरी तरह बंद हो गई, और जंगली शहद का संग्रहण भी रुक गया। अब कोई भी यात्री पैदल सड़क मार्ग से आने की हिम्मत नहीं करता था। वे इसके बजाय ट्रेन से आने लगे।

उस समय के जिला वन अधिकारी श्री लिटिलवुड ने मुझे पत्र लिखकर सुझाव दिया कि मैं मामंदूर स्थित खूबसूरत वन बंगले में कुछ दिन बिताऊं और इस बाघिन को ढूंढने का प्रयास करूं। मेरे पास पंद्रह दिनों की विशेषाधिकार छुट्टी थी, इसलिए मैंने बेंगलोर से रात की मेल ट्रेन पकड़ी; लेकिन अगले दिन दोपहर 3:30 बजे तक मैं मामंदूर के छोटे से स्टेशन पर धीमी गति से चलने वाली यात्री ट्रेन से उतरा।

वन बंगला एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर मात्र सात फ़र्लांग की दूरी पर स्थित है। बंगले तक जाने का रास्ता मामंदूर नामक छोटे से गाँव से होकर गुजरता है, जहाँ मैं कुछ देर रुका ताकि सबको बता सकूँ कि मैं विशेष रूप से बाघिन का शिकार करने आया हूँ। मेरा उद्देश्य यह खबर हर किसी तक पहुँचाना था, ताकि मैं न केवल उस जानवर के बारे में उपलब्ध सभी जानकारियाँ प्राप्त कर सकूँ, बल्कि विशेष रूप से किसी भी नए शिकार, चाहे वह पशु हो या मानव, की सूचना प्राप्त कर सकूँ। मैंने तीन भैंस की बछियों को भी खरीदा, जिनका भुगतान मैंने नकद में किया और उन्हें स्थानीय शिकारी, अरोकियास्वामी नामक व्यक्ति की देखरेख में सौंप दिया, जिसे मैंने मामंदुर की पिछली यात्राओं के दौरान भी नियुक्त किया था।

बंगले में एक चौड़ा और सुरक्षित बरामदा था। इसकी पहाड़ी से आग बुझाने वाली रेखाएँ, जिन्हें कभी-कभी 'वॉन रेखाएँ' भी कहा जाता है, पाँच दिशाओं में फैली हुई थीं। दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की ओर जाने वाली रेखाएँ क्रमशः गाँव और रेलवे

तटबंध के पास से गुज़रती थीं। बाकी तीन रेखाएँ जंगल में दूर तक जाती थीं, और नज़र कई मीलों तक उन पर चल सकती थी। उत्तर की ओर जाने वाली आग बुझाने वाली रेखा उस ढलान की ओर फैली हुई थी जहाँ सबसे पहले चरवाहे को बाघिन ने घायल कर दिया था। पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर जाने वाली रेखाएँ लगभग सीधी रेखाओं में जंगल के भूलभुलैया में जाती थीं, मानो किसी विशाल पहिये के तीलियाँ हों। इन दोनों दिशाओं का इलाका समतल था।

बीते वर्षों में, जब शिकार के लिए जानवर बहुत अधिक थे, मैंने कई सुखद सुबह या देर शाम बंगले के बरामदे या चबूतरे पर शक्तिशाली दूरबीन लेकर उन जंगलों की ओर देखते हुए बिताए थे। सांभर, चित्तीदार हिरण और मोर को एक तरफ से दूसरी तरफ जाते देखना आम बात थी। मैंने तीन बार भालू को सुबह-सुबह देखा था, और एक बाघ को शाम पांच बजे उत्तरी जंगल की सीमा पार करते हुए देखा था। इसके अलावा, हालांकि लगभग दो मील दूर, मैंने ग्यारह जंगली कुत्तों के झुंड को एक बूढ़े भालू को घेरे हुए देखा था। उस समय मैं उनके पीछे भागा था - भालू को उसके क्रूर अंत से बचाने के लिए - ठीक उसी समय पहुँचा जब ग्यारह कुत्ते उस थके-हारे, लेकिन बहादुर बूढ़े जानवर के करीब पहुंच रहे थे। तीन कुत्ते मर चुके थे इससे पहले कि उन्हें एहसास होता कि उन्हें एक नए दुश्मन का सामना करना है। जैसे ही झुंड भागने लगा, मेरी राइफ़ल की आवाज़ के साथ ही चौथा भी गिर पड़ा, और जब झुंड के बचे हुए सदस्य जंगल में नजरों से ओझल हो गए, तब तक पांचवां भी बाकी चारे के साथ मिल गया।

उन दिनों मैं अपनी पुरानी .405 विंचेस्टर राइफल का इस्तेमाल कर रहा था और मेरी मैगज़ीन खाली हो चुकी थी। तभी मुझे एहसास हुआ कि मुझे एक पागल भालू का सामना करना है, जो कुत्तों के हमले और पहले से मिले ज़ख्मों के दर्द से बेहाल हो चुका था।

वह मुझसे लगभग साठ गज दूर था, और चीखते हुए सीधे मेरी ओर दौड़ा, 'वूफ़! वूफ़!' मैं जंगल की सीमा रेखा के साथ-साथ जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ा, और दौड़ते हुए मैंने .405 राइफल का निचला लीवर खोला, कारतूस को ब्रीच में ठूंसा, और लीवर बंद कर दिया, जिससे राइफल अपने आप कॉक हो गई। तेज़ी से घूमकर मैंने भालू का सामना किया, जो मुश्किल से पंद्रह गज दूर था। भालू के असली अंदाज़ में, पाँच गज की दूरी पर, वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया ताकि अंतिम प्रहार कर सके, जिसे आम तौर पर सबसे भयानक स्पर्श, 'भालू का आलिंगन' माना जाता है, जिसके बारे में हम सबने बहुत सुना है।

दरअसल, दक्षिण भारतीय स्लॉथ बियर अपने दुश्मन को गले नहीं लगाता। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर अपने तीन इंच लंबे, ताकतवर पंजों से शिकार का चेहरा नोंचता है या अपने शक्तिशाली दांतों से उसके सिर पर काटता है। अपने पिछले पैरों पर खड़े होते ही भालू ने अपने सीने पर मौजूद चौड़ा सफ़ेद V-निशान दिखा दिया, जो सभी स्लॉथ बियर के सीने पर होता है। राइफल में मौजूद एक कारतूस से मैंने उसे V-निशान के निचले हिस्से में गोली मार दी। वह आगे की ओर गिर पड़ा और दो गज की दूरी पर ही पड़ा रहा!

उन जंगली कुत्तों में से तीन नर थे और बाकी दो मादा। वन विभाग ने मुझे प्रत्येक नर के लिए दस रुपये और प्रत्येक मादा के लिए पंद्रह रुपये का इनाम दिया। जंगली कुत्ते हिरणों के लिए बहुत हानिकारक होते हैं, इसलिए उनका शिकार करना प्रोत्साहित किया जाता है। मुझे बूढ़े ब्रूइन को मारना पड़ा, इसका मुझे बहुत दुख हुआ, लेकिन उसने खुद ही यह मुसीबत मोल ली थी।

यह सब बहुत-बहुत पहले हुआ था।

इस बंगले को बेहद आकर्षक बनाने वाला एक और कारण था दोपहर दो बजे के कुछ ही समय बाद पूरब से आने वाली समुद्री हवा। मेरा अनुमान है कि सीधी रेखा में बंगाल की खाड़ी इस छोटे से बंगले से कम से कम पचहत्तर मील दूर है; और मैं इस बात पर बहस करने का विशेषज्ञ नहीं हूँ कि समुद्री हवा किस दूरी पर अपना असर खो देती है। मैं बस इतना जानता हूँ कि लगभग दो बजे यह हवा उस छोटे से बंगले के बरामदे को झपकी लेने के लिए एक सुखद ठंडी जगह में बदल देती है। अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो मामंदुर फॉरेस्ट बंगले पर जाकर देखिए।

उस शाम बहुत देर हो चुकी थी, इसलिए तीन भैंसों में से एक को ही बांधना संभव हो पाया, क्योंकि वे शाम 5:30 बजे ही पहुंची थीं। इस भैंस को मैं उत्तरी दिशा में आग बुझाने वाली पट्टी के साथ-साथ दो मील दूर ले गया, जहाँ मैंने इसे एक बड़े और घने इमली के पेड़ के नीचे बांध दिया। जब मैं लौटा तो सात बज चुके थे, इसलिए मैंने बाकी दो भैंसों को गैरेज में रखा और अरोकियास्वामी को रसोई में सोने के लिए कहा।

अगली सुबह हम तुरंत हरकत में आ गए। सबसे पहले हमने वह चारा लिया जिसे हमने पिछली रात दो मील दूर बांधा था और जो अभी भी जीवित था, और उसे लेकर उस चट्टान के तल तक गए जहाँ पहला हमला हुआ था। वहाँ हमने उसे घनी हरी घास के एक सुंदर मैदान में एक पेड़ की जड़ों से बांध दिया।

हम बंगले में वापस आए और दूसरी बछिया को पूर्व की ओर फैली आग की रेखा के साथ ले गए, जहाँ मैंने उसे लगभग उसी स्थान पर बांध दिया जहाँ जंगली कुत्तों और भालू के साथ मेरी मुठभेड़ हुई थी।

दूसरी बार बंगले पर लौटकर, हम तीसरी और आखिरी बछिया को पश्चिम की ओर रेलवे लाइन के पार ले गए, और उसे उस स्थान के पास बांध दिया जहां बुजुर्ग चरवाहे की हत्या की गई थी।

जब मैं तीसरी बार बंगले पर लौटा तो दोपहर हो चुकी थी और बहुत गर्मी थी। पसीने से भीगी कमीज़ उतारकर मैंने देर से ठंडा दोपहर का भोजन किया और समुद्री हवा के आने का इंतज़ार करने लगा, जो मुझे पता था कि लगभग दो बजे शुरू हो जाएगी। और मैं निराश नहीं हुआ; क्योंकि जब हवा चली, तो उस झुलसा देने वाली गर्म बरामदे का नज़ारा किसी दूर दक्षिण सागर द्वीप के तट जैसा हो गया, जहाँ हम पढ़ते हैं कि 'समुद्री हवाएँ सदा बहती रहती हैं'।

अगले दो दिन नीरस रहे। मैंने हर दिन तीनों चारागाहों का दौरा किया, लेकिन उनमें से किसी को भी छुआ नहीं गया था। पाँचवें दिन की शाम एक दुखद घटना घटित हुई।

दक्षिण भारत की रेल लाइनों पर लगे सिग्नल रात में केरोसिन के तेल के दीपों से रोशन किए जाते हैं, सिवाय बड़े रेलवे जंक्शनों के शंटिंग यार्डों के। जैसा कि आप जानते ही होंगे, प्रत्येक सामान्य रेलवे स्टेशन के दोनों ओर दो सिग्नल सेट होते हैं: एक नज़दीकी या 'होम' सिग्नल और दूसरा दूर का या 'आउटर' सिग्नल। सामान्यतः, इन सिग्नलों पर लगे केरोसिन के दीपों को शाम लगभग छह बजे एक पॉइंटसमैन या इस काम के लिए नियुक्त रेलवे कर्मचारी द्वारा साफ़, ट्रिम, फिर से भरा और जलाया जाता है। लेकिन मामंदुर में बाघिन की मौजूदगी और इस तथ्य के कारण कि दक्षिण में रेनिगुंटा और उत्तर-पश्चिम में सेतिगुंटा की दिशा में स्थित आउटर सिग्नल जंगल से घिरे हुए थे, सूरज निकलने से पहले ही, यानी शाम पांच बजे से काफी पहले, इन दीपों को जलाने का रिवाज बन गया था।

उस शाम दो मार्गदर्शक दोपहर चार बजे इस कार्य के लिए निकले थे, एक रेनिगुंटा की ओर और दूसरा विपरीत दिशा में। दूसरा व्यक्ति कभी वापस नहीं लौटा।

शाम छह बजे से कुछ ही देर पहले, स्टेशन मास्टर द्वारा भेजे गए सात आदमियों का एक दल जंगल वाले बंगले की ओर दौड़ता हुआ आया और मुझे घटना की जानकारी देने लगा। मैंने जल्दी से अपनी राइफल, टॉर्च और रात भर निगरानी के लिए ज़रूरी कुछ अन्य सामान उठाया और उन सातों आदमियों को स्टेशन वापस भेज दिया, साथ ही अरोकियास्वामी को भी, क्योंकि वह उस रात बंगले में अकेले रहने से बिल्कुल इनकार कर रहा था। फिर मैं पश्चिम की ओर जाने वाले जंगल के रास्ते पर तेज़ी से बढ़ा, जो मुझे पता था कि 'भीतरी' और 'बाहरी' सिग्नलों के लगभग बीच में रेलवे ट्रैक से मिलता है।

जब मैं रेलवे लाइन पर पहुंचा, जो यहां दस फीट ऊंचे तटबंध के साथ-साथ चल रही थी, तो मैंने अपनी बाईं ओर देखा और 'आंतरिक' सिग्नल को देखा, जिसकी लाल बत्ती टिमटिमा रही थी।

'बेवकूफ आदमी', मैंने सोचा। 'सुबह-सुबह बाहर की रोशनी पर ध्यान देने और स्टेशन जाते समय अंदर की रोशनी पर वापस आने के बजाय, उसने अंदर की रोशनी पर समय बर्बाद किया, और फिर काफी देर हो जाने पर बाहर की रोशनी पर गया।'

दाईं ओर मुड़कर, मैं तटबंध के किनारे-किनारे 'बाहरी' सिग्नल की ओर चलने लगा, जो एक मोड़ पर दिखाई दिया। चलते-चलते मैंने पटरियों के आसपास उस हमले के निशान खोजने की कोशिश की जो उस समय हुआ होगा जब मार्गदर्शक बाहरी सिग्नल की ओर बढ़ रहा था। मुझे कुछ नहीं मिला। फिर मैं 'बाहरी' सिग्नल के नीचे पहुंचा और ऊपर देखा। बत्ती जल रही थी!

तो उस व्यक्ति पर हमला 'बाहरी' सिग्नल की देखभाल करने के बाद वापस लौटते समय हुआ था, न कि उससे पहले। इसके अलावा, 'भीतरी' सिग्नल की बत्ती भी जल रही थी। शायद उसने पहले उस बत्ती की देखभाल नहीं की थी, जैसा कि मैंने पहले सोचा था। शायद उसने पहले बाहरी सिग्नल जलाया, फिर भीतरी, और भीतरी सिग्नल और स्टेशन यार्ड के बीच कहीं उस पर हमला हुआ हो।

लेकिन क्या यह संभव था, इस तथ्य को देखते हुए कि स्टेशन से लेकर 'आंतरिक' सिग्नल तक का सारा इलाका, और उससे थोड़ा आगे तक का क्षेत्र भी, खुली खेती योग्य भूमि थी? क्या कोई बाघ, चाहे वह आदमखोर ही क्यों न हो, दिन के उजाले में इतनी बेखौफ होकर खुले मैदान में घूम सकता था? यह संभव था, लेकिन इसकी संभावना बहुत कम थी।

मेरी घड़ी में शाम के 6:55 बज रहे थे और जैसे-जैसे अंधेरा बढ़ता जा रहा था, मैं भीतरी संकेत की ओर वापस लौटने लगा, पहले से कहीं अधिक सतर्क होकर। चाँद जल्दी निकल आया था, जो वाकई सौभाग्य की बात थी, वरना इस समय तक काफी अंधेरा हो चुका होता।

लगभग उसी जगह पर जहाँ से मैं जंगल से तटबंध पर आया था, एक छोटी सी पुलिया थी, जो एक संकरे लेकिन गहरे नाले को पार कर रही थी। वहां कुछ सफेद रंग का मेरी नज़र में आया, जो रेलवे ट्रैक के स्लीपरों के बीच फड़फड़ा रहा था, क्योंकि ट्रैक नाले के ऊपर से गुजर रहा था। मैं रुका और स्लीपरों के बीच से झांका।

यह रेलवे कर्मचारी की सफेद धोती थी। तटबंध से बीस फीट दूर, एक बड़े पत्थर के नीचे, एक लंबी, काली आकृति पड़ी थी, जिसे मैं पीड़ित का शव समझ गया था। उस धुंधली रोशनी में भी मैं बता सकता था कि शिकार के बाद बीते थोड़े समय में ही शव का कुछ हिस्सा खा लिया गया था। गर्दन कटी हुई थी और सिर लगभग एक गज दूर पड़ा था। चूंकि बाघिन शायद उस समय आसपास ही हो सकती थी, या झाड़ियों की आड़ से मुझे देख रही हो, इसलिए तटबंध से नीचे उतरकर शव की बारीकी से जांच करना अनावश्यक रूप से खतरनाक होगा।

स्थिति का जल्दी से जायजा लेने के बाद मैंने रेलवे लाइन के ठीक बीचोंबीच, पुलिया के आर-पार समकोण पर लेटने का फैसला किया। इससे मैं आगे या पीछे से हमले से सुरक्षित रहूँगा, क्योंकि ऐसा करने के लिए बाघिन को नाले के तल से सीधे पंद्रह फीट की छलाँग लगाकर पटरी पर आना पड़ेगा। इससे उसके पास पटरी के किनारे, मेरे दाईं या बाईं ओर से हमला करने का विकल्प बचेगा। मुझे आपको बताना चाहिए था कि पुलिया की चौड़ाई लगभग बीस फीट थी। ज़्यादा नहीं, लेकिन कम से कम मुझे बाघिन को देखने का समय तो मिल जाएगा।

बेशक, यह संभावना थी कि वह तटबंध पर तिरछे कोण से रेंगती हुई आएगी और मुझ पर परोक्ष रूप से हमला करेगी, या तो सामने से, या इससे भी बदतर, पीछे से; और या तो मेरे बाईं ओर से या दाईं ओर से।

यह एक ऐसा जोखिम था जिसे उठाना ही था।

बंगले से निकलते समय मैंने अपनी टॉर्च राइफल से बांध ली थी। मैंने अपना थैला सीने के नीचे रख लिया ताकि रेल की पटरी से मेरा संपर्क कम हो। यह पटरी चौड़ी थी, यानी पटरियां पांच फीट छह इंच की दूरी पर थीं। पैर फैलाकर मैंने देखा कि मेरे तलवे दूसरी पटरी को छू रहे थे, लेकिन उस पर चढ़े नहीं थे। जिस सागौन की लकड़ी से बने चबूतरे पर मैं लेटा था, वह शायद आठ इंच चौड़ा था: लेटने में बिल्कुल भी आरामदायक नहीं था और बेहद सख्त था!

इस समय तक चाँद खूब चमक रहा था और दृश्य को स्पष्ट रूप से रोशन कर रहा था। चट्टान के हल्के रंग और नाले की बारीक सफेद रेत के बीच शव और उसका कटा हुआ सिर साफ़ दिखाई दे रहा था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था।

आंतरिक संकेत से निकली लाल बत्ती झिलमिला उठी; ऐसा लगा जैसे वह मुझे याद दिला रही हो कि मदद करीब है—पर फिर भी बहुत दूर है।

घंटे बीतते गए; पश्चिम की ओर जंगल से एक सांभर नर हिरण की आवाज आई। शायद उस आवाज ने बाघिन के आने का संकेत दिया हो! नहीं, क्योंकि उत्तर-पूर्व में थोड़ी दूर पर एक और नर हिरण ने आवाज दी, और फिर पूर्व में एक और नर हिरण ने। बीच-बीच में चित्तीदार हिरण भी अपनी तीखी चेतावनी भरी आवाजें निकालते रहे, 'आओ! आओ! आओ!'

लेकिन ये आवाज़ें किसी एक दिशा से नहीं आ रही थीं; अगर ऐसा होता तो इससे निश्चित रूप से पता चलता कि उस इलाके में कोई मांसाहारी जानवर मौजूद है। ये आवाजें चारों ओर से, दूर-दूर से आ रही थीं, जिससे संकेत मिलता है कि कई मांसाहारी जानवर घूम रहे थे। साथ ही, चूंकि रात में चांदनी थी, इसलिए संभव था कि जंगली कुत्तों के झुंड शिकार पर निकले हों। ये जानवर दिन में अपने शिकार का पीछा करते हैं और कभी अंधेरी रात में नहीं, लेकिन चांदनी रात में, कुछ जंगलों में, वे कभी-कभी अपना व्यवहार बदल देते हैं और चांदनी में शिकार करते हैं।

आधी रात को फिर से सन्नाटा छा गया। और फिर मेरे रोंगटे खड़े हो गए, क्योंकि जो मैं देख रहा था वह सचमुच भयानक था। कटा हुआ सिर एक तरफ़ लुढ़क गया था!

इतने समय से वह आकाश की ओर घूर रहा था; अब उसकी निर्जीव आँखें और चेहरा मेरी ओर मुड़े हुए थे। फिर भी किसी जानवर ने उसे छुआ नहीं था, क्योंकि वह खुले में पड़ा था और तेज चांदनी में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

मुझे अपने शरीर में कंपकंपी और ठंडक महसूस होने लगी। मैंने अपने सूखे होंठों को चाटा और उस भयानक सिर को घूर कर देखा।

फिर से वह हिल गया! उसने अपनी पिछली स्थिति में वापस जाने की कोशिश की थी; वह आधा घूम गया था और फिर, मानो पूरी तरह घूमने की ताकत न होने के कारण, वह वापस लुढ़क गया और मेरी ओर घूर रहा था।

अब मैं आपको बता दूं कि मैं बहुत व्यावहारिक व्यक्ति हूं, अंधविश्वासी नहीं, न ही अंधेरे से डरता हूं। मैंने कई रातें ऐसी ही या इससे भी अधिक खतरनाक स्थिति में बिताई हैं; मैं पहले भी अधखाए हुए मानव शरीरों के ऊपर बैठा था, और पहले भी कई बार मुझे लगा था कि मैंने उन्हें हिलते हुए देखा है। लेकिन अपने जीवन में मैंने पहले कभी किसी कटे हुए मानव सिर को अपने आप घूमते हुए, फिर वापस घूमने की कोशिश करते हुए और असफल होते हुए, और अंत में स्पष्ट निराशा में लुढ़कते हुए नहीं देखा था।

मैं लगभग चीख पड़ा और काफी देर तक मेरे मन में उठकर उस टिमटिमाती, दोस्ताना लाल बत्ती की ओर दौड़ने की तीव्र इच्छा हुई, जो 'अंदरूनी' संकेत की ओर इशारा कर रही थी। फिर अचानक मेरी बुद्धि ने अपना असर दिखाया। एक मृत सिर, चाहे वह इंसान का हो या किसी और जीव का, अपने आप हिल नहीं सकता। उसे किसी चीज़ ने ज़रूर हिलाया होगा!

मैंने सिर को ध्यान से देखा, और तेज़ चाँदनी ने मुझे मेरी समस्या का हल दिखा दिया। सफेद रेत में दो काली वस्तुएँ हिलती हुई दिखाई दे रही थीं। वे 'गैंडा भृंग' थे: बड़े कीड़े, डेढ़ इंच से भी ज़्यादा लंबे, जिनकी नाक पर गैंडे के सींग जैसे बड़े-बड़े कांटे होते हैं, इसी समानता के कारण इनका नाम पड़ा है। आम तौर पर ये रात में सक्रिय होते हैं, हालाँकि इन्हें अक्सर जंगल की सड़कों पर, सुबह-सुबह और फिर देर शाम को, अपने आकार से लगभग तीन गुना बड़े गोबर के गोले को किसी अज्ञात जगह की ओर लुढ़काते हुए देखा जा सकता है।

इन दोनों नन्हे जीवों ने अपनी संयुक्त शक्ति से एक बार इस सिर को पलटने में सफलता प्राप्त कर ली थी, लेकिन दूसरी बार वे पूरी तरह सफल नहीं हो पाए। मैं जो देख रहा था उसमें इतना मग्न था कि बाघिन के बारे में पूरी तरह भूल गया था; उस समय वह आसानी से मुझे चौंका सकती थी।

अब 1:40 बज रहे थे और मेरे सीने के नीचे की रेल पटरी कांपने लगी। तभी मुझे दूर से एक गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनाई दी जो धीरे-धीरे तेज़ और नज़दीक आती गई। एक तीखी सीटी की आवाज़ गूंजी और देखते ही देखते एक इंजन की तेज़ रोशनी सीधे मुझ पर पड़ी। यह मद्रास से बॉम्बे जाने वाली नाइट मेल ट्रेन थी।

मैं बड़ी मुश्किल से उठा, अपना थैला उठाया, पुलिया के अंत तक गया और फिर तटबंध से कुछ कदम नीचे उतरा। लेकिन मैं ट्रेन चालक की सतर्कता को पूरी तरह से भूल गया था। उसने इंजन की तेज हेडलाइट में मुझे साफ देखा था, हालांकि उसने मेरी राइफल पर ध्यान नहीं दिया था। जैसा कि वह मुझे कुछ ही मिनटों में बताने वाला था, उसने मुझे आत्महत्या करने की कोशिश करने वाला समझा, जो जानबूझकर पटरी पर लेटकर ट्रेन के नीचे कूचल जाना चाहता था, लेकिन आखिरी क्षण में उसका साहस जवाब दे गया। वैसे, मैं यह भी बताना चाहूंगा कि आत्महत्या करने का यह तरीका भारत में काफी प्रचलित है।

खैर, ब्रेक की तेज़ आवाज़ और भाप की ज़ोरदार फुफकार के साथ, ट्रेन मेरे पास से इंजन के गुज़रने के ठीक बाद आकर रुक गई। इसके बाद मैंने जो सुना, वह था कठोर ज़मीन पर बूटों की ज़ोरदार आवाज़, जैसे कोई मेरी ओर दौड़ रहा हो। वे इंजन के ड्राइवर और उसके दो दमकलकर्मी थे।

वे मुझ पर झपटे और मुझे पकड़ लिया। तभी उन्हें एहसास हुआ कि मैं वो नहीं था जो उन्होंने मुझे समझा था। इसी बीच, डिब्बों की खिड़कियों से कई लोगों ने सिर बाहर निकाले और सैकड़ों आवाज़ें सवाल-जवाब और अटकलें लगाने लगीं। पहरेदार अपनी लालटेन लेकर पीछे से आया। इसलिए मेरे पास उन्हें यह बताने के अलावा कोई चारा नहीं था कि मैं क्या कर रहा था।

‘वह आदमी कहाँ है जिसे बाघ ने खा लिया?’ ड्राइवर ने पूछा, जो अधेड़ उम्र का एंग्लो-इंडियन था। मैंने उसे लाश की ओर इशारा किया। ‘और आप शाम से यहाँ खुले में अकेले पड़े हैं?’ उसने अविश्वास से पूछा।

जब मैंने हाँ में जवाब दिया, तो उसने बड़ी सरलता से कहा, 'तुम बिलकुल पागल हो,' और अपने माथे पर इशारा करते हुए कहा। उसके दोनों दमकलकर्मी और ट्रेन के भारतीय गार्ड ने भी सहमति में सिर हिलाया।

कुछ मिनट बाद, मेल ट्रेन बॉम्बे की अपनी लंबी यात्रा पर आगे बढ़ गई, और मैं एक बार फिर अकेला रह गयी। लेकिन इतनी हलचल के बाद बाघिन के आने की मुझे बहुत कम उम्मीद थी।

रात के 2:30 बजे रेल की पटरियाँ फिर से गड़गड़ाने लगीं। इस बार मैं इंजन की हेडलाइट से अपनी मौजूदगी का पता चलने से पहले ही, राइफल छिपाकर, तटबंध पर लेट गया। नतीजतन, मालगाड़ी बिना रुके मेरे पास से गुज़र गई। सुबह 4 बजे फिर से रेल की पटरियाँ गड़गड़ाने और काँपने लगीं, और मैं एक बार फिर छिप गया। यह बॉम्बे से मद्रास जाने वाली वापसी मेल ट्रेन थी, जो पूरी गति से गड़गड़ाती हुई गुज़री, क्योंकि मेल ट्रेनें मामंदूर में नहीं रुकतीं।

झुटपुटा सुबह आई और चली गई। जागते हुए मोरों की दूर से आती हुई आवाज़ हवा में गूँजी, वे जंगल की घाटियों में 'मिया-आ-ऊ-आओ' की आवाज लगा रहे थे, जिसका जवाब उस सबसे प्यारे पक्षी, भूरे जंगली मुर्गे की हंसमुख आवाज 'व्ही-ई-ई-ई-कुच-काया काया-खुक्कम' से मिला।

पूर्वी पहाड़ियों के ऊपर आसमान में हल्का गुलाबी रंग छाया हुआ था, जो अब मखमली काले रंग से स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। इसी बीच, रात भर चमकता रहा और अब अस्त होने वाला चंद्रमा अपनी चमक खोने लगा था।

पूर्व दिशा में, हल्का गुलाबी रंग अद्भुत रूप से बैंगनी रंग में बदल गया, फिर गहरे गुलाबी रंग में, जिसके किनारों पर हल्के हरे और शुद्ध नीले रंग की झलक थी। गुलाबी रंग नारंगी-बैंगनी, फिर केवल नारंगी, फिर गहरा लाल और अंत में ज्वाला जैसा हो गया, जैसे ही सूर्य की चमकती नोक पूर्व की ओर पहाड़ियों की लहरदार रेखाओं के ऊपर से झाँकी।

तेज़ी से बढ़ते हुए उस गोले से आकाश की ओर आती हुई सूर्य की किरणें, स्पेक्ट्रम के सभी रंगों से जगमगाते हुए आसमान में दौड़ते हुए, रुई जैसे बादलों को छू रही थीं। फिर, अचानक, जैसे कोई तितली अपने कोकून से फूटती है, सूर्य पहाड़ियों के ऊपर आ गया, और अपने आगे नीचे नम जंगल से उठती हुई धुंध की हल्की-हल्की परतों को भंवरों में उड़ा ले गया।

एक और दिन था, और उसके आगमन का स्वागत करते हुए मेरे चारों ओर जंगल के पक्षियों का मधुर गीत गूंज उठा। हर झाड़ी और पेड़ जीवन से ओतप्रोत, जीवंत और नया लग रहा था। भारतीय जंगल में सूर्योदय का यह अद्भुत नजारा देखने वाले इसे कभी नहीं भूलेंगे।

उसका सिर अब भी मेरी ओर देख रहा था, लेकिन अब वह स्थिर था; रात भर लगन से काम करने वाले दोनों गैंडे के भृंग बहुत पहले ही उस असमान कार्य को छोड़कर आराम करने चले गए थे।

मैं निराश और धीरे-धीरे स्टेशन की ओर बढ़ा, स्टेशन मास्टर को यह बताने के लिए कि वे मृतकों के परिजनों को शवों को दाह संस्कार के लिए ले जाने की अनुमति दे सकते हैं, और आठ बजे तक मैं बंगले के बरामदे में सो गया था। दोपहर में समुद्र की ठंडी हवा ने मुझे और गहरी नींद में सुला दिया।

शाम चार बजे मैं तरोताज़ा और चुस्त-दुरुस्त होकर उठा और जल्दी से दोपहर का भोजन और चाय पी। साथ ही मैंने अरोकियास्वामी की रिपोर्ट सुनी कि उन्होंने चार अन्य लोगों के साथ सभी चारे की जाँच की थी और उन्हें जीवित पाया था। ऐसा लग रहा था कि यह बाघिन मेरे द्वारा बाँधी गई किसी भी बछिया को नहीं मारेगी।

फिर सूर्यास्त हुआ और चांदनी रात हो गई। मुझे टहलने का मन हुआ। अगर मैं जंगल की उन पांचों आग की लपटों के बीचोंबीच चलता रहूँ, तो मुझे लगा कि मैं काफ़ी हद तक सुरक्षित रहूँगा, बशर्ते चलते समय मैं सतर्क रहूँ। रात में अगर हमारे रास्ते आपस में टकराते हैं, तो बाघिन का ध्यान आकर्षित होने का भी पूरा खतरा था।

मैंने मौके के हिसाब से कपड़े पहने। मेरे पास अपने किट में सिर्फ़ खाकी कपड़े और एक काली कमीज थी जो रात में मचान का काम करने के लिए ठीक थी। इसलिए मैं अरोकियास्वामी के साथ उनकी झोपड़ी में गया, जहाँ मैंने एक लंबी सफ़ेद कमीज़ पहन ली, जिसकी पूंछें मेरी खाकी पैंट के बाहर ढीली-ढाली लहरा रही थीं। अरोकियास्वामी ने मेरे सिर पर सफ़ेद पगड़ी बांधकर मेरे वेश को और भी पूरा किया।

मुझे नहीं पता था कि अगर हमारी मुलाकात होती तो बाघिन मुझे क्या समझती; लेकिन मुझे पता है कि मैं ग्रामीणों के लिए काफ़ी मनोरंजन का स्रोत था, जो मेरी योजना के बारे में सुनकर कुछ हद तक हैरान थे।

मैंने कुछ देर सोचा कि पहले किस फ़ायर-लाइन पर चलूँ और अंत में पूर्व दिशा की ओर जाने वाली लाइन पर चलने का फ़ैसला किया। शाम के 7:30 बज रहे थे जब मैंने चलना शुरू किया। मैं लाइन के बीचोंबीच चलता रहा और चलते-चलते दोनों ओर की झाड़ियों और घनी वनस्पतियों पर नजरें गड़ाए रहा। बीच-बीच में मैं पीछे मुड़कर भी देखता रहा।

चांदनी तेज़ होने के बावजूद, झाड़ियों की लंबी काली छायाएँ पड़ रही थीं, और काँटों और घास के गुच्छे मेरे चारों ओर भूतिया धूसर रंग के दिख रहे थे। मुझे एहसास हुआ कि इतनी चांदनी के बावजूद, मेरी आँखें उस अवास्तविक चमक में छिपे हुए किसी भी मांसाहारी जानवर को नहीं देख पाएंगी, भले ही वह दिखाई दे, जो कि वह नहीं देगा। मुझे अपनी सुनने की शक्ति पर भरोसा करना होगा—और उस दूसरी, मेरी छठी इंद्री पर!

मैं हर दस मिनट के अंतराल पर किसी न किसी धुन की एक पंक्ति सीटी बजाकर बाघिन को अपनी उपस्थिति का आगाह करता था; लेकिन केवल आधे मिनट के लिए ही, ताकि मेरे अपने कान बाधित न हों, जो हल्की से हल्की आवाज को भी पकड़ने के लिए अभ्यस्त थे।

इस प्रकार, घास से ढकी पहाड़ियों से गुजरते समय मुझे कई बार हल्की सरसराहट सुनाई दी। हमेशा की तरह, रात में निकलने वाला बांस का चूहा ही इसका दोषी होता था, क्योंकि मेरे पास आते ही वह छिपने के लिए भाग जाता था। फिर एक अस्पष्ट, लंबी, रेंगने जैसी सरसराहट सुनाई दी: वह एक सांप था, शायद रसेल वाइपर, जो घास में आराम से लिपटा हुआ था, ताकि उसे गर्माहट मिले। आसमान से कोई भारी चीज़ नीचे आई और आग की लकीर पार करते हुए एक खरगोश की पीठ पर आकर गिरी। खरगोश चीख उठा, और उस पर हमला करने वाले बड़े सींग वाले उल्लू ने उसके माथे पर ज़ोर से चोंच मारी। मैं उल्लू के पास गया, जिसने अपने दोनों पंख ज़मीन पर फैला दिए ताकि खरगोश मुझसे छिप जाए, ठीक वैसे ही जैसे मुर्गी अपने चूजों को छिपाती है। मैं और करीब गया तो उल्लू ने मुझे घूरा; मैं और करीब गया तो उल्लू उड़ गया। मैंने बेजान खरगोश को उठाया और उसकी पीठ को तेज़ी से सहलाया। होश में आने पर वह ज़ोर-ज़ोर से लात मारने लगा। मैंने उसे लंबी घास में जाने दिया।

इन जंगलों में न तो बाइसन थे, न हाथी, लेकिन उनकी जगह भालू बहुतायत में थे। कुछ ही देर में मेरी मुलाकात ब्रुइन से हुई, जो अपने पसंदीदा शौक, चींटियों के टीलों से दीमकें चूस रहा था। दूर से आती एक आवाज़, भिनभिनाहट और गुनगुनाहट के बीच की, एक अजीब सी आवाज़ जो किसी के बैगपाइप फुलाने जैसी या गुस्से में मधुमक्खियों के झुंड की आवाज़ जैसी थी, ने मुझे सबसे पहले बताया कि कोई भालू आसपास घूम रहा है। आवाज़ तेज़ होती गई और बीच-बीच में गुर्राहट, खांसी, अधीरता भरी फुसफुसाहट और झुंझलाहट भरी दहाड़ें सुनाई देने लगीं।

वहाँ, कतार के एक तरफ और मेरे दाहिनी ओर दीमकों का एक टीला था। वहाँ उसके सामने, एक छेद में सिर डाले, एक खुरदुरा, काला आकार खड़ा था। वह भालू था, जो फूंक रहा था, चूस रहा था, बड़बड़ा रहा था, गालियाँ दे रहा था और शिकायत कर रहा था, क्योंकि उसे बहुत कम या न के बराबर सफलता मिल रही थी। कभी-कभार ही वह किसी स्वादिष्ट चीज़ को निगलने पर खुशी से खिलखिला उठता था।

जब मैं चुपचाप अपने रास्ते पर आगे बढ़ रहा था, तब वह अपने काम में पूरी तरह मग्न था, और उसकी दावत की आवाज़ें मेरे पीछे धीरे-धीरे कम होती जा रही थीं। मैं दो घंटे तक उसी रास्ते पर चलता रहा, फिर मुड़कर वापस लौट आया। जब मैं चींटियों के टीले पर दोबारा पहुंचा, तब तक ब्रुइन घर जा चुका था, और उसके प्रयासों के कारण वह अपनी मूल ऊँचाई का केवल आधा रह गया था। फ़ॉरेस्ट लॉज पहुंचने तक मुझे और कुछ नहीं दिखाई दिया।

इसके बाद, मैं उत्तरी दिशा की ओर मुड़ा और ढलान की ओर चलने लगा। यह रेखा उस रेखा की तरह सीधी नहीं थी जिसे मैंने अभी-अभी छोड़ा था। बल्कि, ढलान के पास पहुँचते ही यह काफी टेढ़ी-मेढ़ी हो गई। तीसरे मील पर एक धारा इसे काटती थी, जिसमें बहता साफ, ठंडा पानी चांदनी में चांदी की तरह चमक रहा था।

झुककर मैंने पानी पिया, बाएं हाथ की हथेली से पानी मुंह तक पहुंचाया; मेरे दाहिने हाथ में राइफल थी जिसका बट जमीन पर टिका था, जबकि मेरी आंखें जंगल पर टिकी थीं और कान हल्की सी भी आवाज सुनने के लिए तल्लीन थे। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और एकमात्र आवाज पानी के बहने की थी। मैं आगे बढ़ता रहा।

मैंने जो चारा बांधा था, वह अगले मोड़ पर था। वह जीवित था, और जब मैं उसके पास से गुजरा, तो उसने मुझे उस क्रूर भाग्य के लिए मौन निंदा भरी निगाहों से देखा, जिसके सामने मैंने उसे लाचार कर दिया था। मेरे पास कोई जवाब नहीं था, कोई बहाना नहीं! इसमें कोई शक नहीं था कि मैं दोषी था। मैंने अपनी नज़रें फेर लीं, लेकिन अपराधबोध से मुक्त नहीं हो सका।

अंततः ढलान की तलहटी तक पहुँच गए। यहाँ आग बुझाने वाली रेखा समाप्त हो गई और एक संकरी पगडंडी बन गई जो अचानक हरियाली के भूलभुलैया में समा जाती थी। ऐसी परिस्थितियों में आगे जाना बहुत खतरनाक था, इसलिए मैं वापस लौट आया।

वापसी की यात्रा में मैंने जो कुछ देखा, वह एक विशाल कोबरा था जो एक बांस के चूहे को निगल रहा था। चूहे का तीन-चौथाई हिस्सा कोबरा के गले में उतर चुका था, केवल पिछला भाग और पूंछ बाहर निकली हुई थी, तभी मैं आग की लपटों के बीचोंबीच उस दृश्य के पास पहुँचा। सांप ने मुझे देखा और अपना सिर ज़मीन से दो फीट ऊपर उठा लिया, साथ ही अपनी गर्दन की पतली हड्डियों को सीधा करके भारत में नए आए किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे सुंदर और साथ ही सबसे मोहक दृश्य बना लिया; प्रसिद्ध कोबरा का फन। चूहे के पिछले पैर और पूंछ अभी भी उसके मुँह से

अजीब तरह से लटक रहे थे। उसकी चमकीली काली आँखें फास्फोरस की रोशनी में दुर्भावना से चमक रही थीं।

मैंने तेज़ी से पैर पटके और ताली बजाई। कोबरा घबरा गया और अंत में दहशत में आ गया। उसने चूहे को उगल दिया, अपने फन को पिचकाते हुए ज़मीन पर लेट गया और आग की लपटों के दूसरी ओर झाड़ियों में रेंगता हुआ चला गया।

मैं एक बार फिर बंगले पर लौट आया था। मैंने बीस मील की दूरी तय कर ली थी और सुबह के 2:45 बज रहे थे।

आग बुझाने के लिए दो रास्ते बचे थे, लेकिन मेरे पास केवल एक ही रास्ता चुनने का समय था: या तो दक्षिण-पूर्व की ओर जाने वाला रास्ता, जिस पर मैं अपने आगमन के बाद से अभी तक नहीं गया था, या दक्षिण-पश्चिम की ओर जाने वाला रास्ता, जो रेलवे तटबंध को पार करता था, जहाँ मैं पिछली रात शव के पास बैठा था। किसी अज्ञात कारण से, मैंने दूसरा रास्ता चुना।

मैं रेलवे ट्रैक पर पहुँचा, उसे पार किया और पश्चिम की ओर एक मील से अधिक आगे बढ़ चुका था कि अचानक एक बाघिन की कराहने की आवाज़ से सन्नाटा टूट गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि यह आवाज़ मुझसे कुछ ही फर्लांग आगे से आ रही थी। शायद वह जानवर उसी आग की रेखा के साथ चल रहा था; हो सकता है वह दूर जा रही हो या शायद मेरी ओर आ रही हो।

अगले 50 गज तक आगे बढ़ते हुए, मैं एक बड़े जंगली सेब के पेड़ के तने के पीछे छिप गया, राइफल को लोड किया और निशाना साधा। फिर मैंने नर बाघ की तरह गहरी दहाड़ मारी।

लगभग तुरंत ही जवाब आ गया, मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा नज़दीक से—शायद सौ गज दूर से। मैंने दोबारा पुकारने की हिम्मत नहीं की, इस डर से कि कहीं मुझे पहचान न लिया जाए कि मैं एक धोखेबाज़ हूँ।

बाघ की आवाज को बहुत करीब से नहीं निकालना चाहिए, क्योंकि असली बाघ आवाज की ध्वनि में अंतर पहचान सकता है। अगर उसे शक हो गया, तो वह शायद भाग जाए। ऐसी नकल करने की कोशिश करने के लिए सबसे कम दूरी लगभग सौ गज है। बेशक, आदमखोरी की प्रवृत्ति और जिज्ञासा, जिससे अधिकांशी जानवर कुछ हद तक पीड़ित होते हैं, बाघ को आगे आने के लिए मजबूर कर सकती है, लेकिन हमेशा यह जोखिम रहता है कि शक उसे भगा दे। इसलिए मैं चुप रहा—और स्थिर रहा।

तीस सेकंड बाद, एक बाघिन जंगल की सीमा रेखा से मेरी ओर बढ़ी, उसके शरीर पर बनी काली धारियों पर चांदनी चमक रही थी। वह मेरे बराबर आकर रुकी, फिर आगे बढ़ने लगी।

मैंने उसके कान के पीछे गोली मारी। ज़मीन पर गिरते समय उसकी पूंछ बस थोड़ी सी हिली। उसे पता ही नहीं चला कि क्या हुआ; उसके बचने का कोई मौका ही नहीं था। यह एक अनुचित गोली थी।

खैर, मामंदुर में अब कुछ सालों से किसी इंसान की हत्या नहीं हुई है। बाघिन, जो कि युवा थी, अच्छी हालत में थी और उसके आदमखोर बनने का कोई कारण नहीं था। शायद, आखिरकार, चमाला नामक आदमखोर बाघिन ने ही उसे यह बुरी आदत सिखाई होगी।

---

* लेखक की पिछली पुस्तक, नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग देखें।

चार

गेरहेट्टी का क्रॉस्ड-टस्कर

यह एक ऐसे हाथी की कहानी है जिसने 'बदमाश' का नाम कमाया और मद्रास सरकार द्वारा कलेक्टर और सलेम के जिला वन अधिकारी के माध्यम से अधिसूचना जारी करके उसे प्रतिबंधित कर दिया गया।

मैं जिन घटनाओं का वर्णन करने जा रहा हूँ, वे काफी समय पहले घटी थीं। हमेशा की तरह, इस हाथी के मनुष्यों को परेशान करने के पीछे का कारण किसी को नहीं पता था। गेरहेट्टी में तैनात वन रक्षक ने बताया कि लगभग एक महीने पहले, जब इस हाथी ने उत्पात मचाना शुरू किया था, उससे पहले एक रात उसने जंगल में दो नर हाथियों को लड़ते हुए सुना था। उसके अनुसार, यह लड़ाई तीन घंटे से अधिक समय तक रुक-रुक कर चलती रही और वन बंगले से लगभग आधा मील दूर स्थित एक पानी के गड्ढे के पास हुई थी।

अगले दिन उसने देखा कि जंगल रौंदा हुआ था और चारों ओर खून के बड़े-बड़े छींटे पड़े थे, जो दिए गए दंड का प्रमाण थे। उसने जो बताया और वहाँ मचे हंगामे को देखकर लगता है कि यह एक भयंकर संघर्ष रहा होगा। संभवतः वह दुष्ट हाथी, जैसा कि बाद में हमें पता चला, उस लड़ाई में सबसे बुरी तरह घायल हुआ था और उसी क्षण से उसने अपना क्रोध सभी पर निकालना शुरू कर दिया था।

एक और संभावित कारण यह हो सकता है कि वह दुष्ट हाथी, 'मस्त' नामक एक आवधिक बीमारी से ग्रस्त एक साधारण नर हाथी था, जो लगभग तीन महीने तक रहती है और इस दौरान वे असाधारण रूप से खतरनाक हो जाते हैं।

एक तीसरी संभावना यह थी कि इस हाथी को सलेम जिले के जंगलों में पाए जाने वाले कई शिकारियों में से किसी एक ने घायल कर दिया हो। ये शिकारी गर्म और शुष्क गर्मी के महीनों में पानी के स्रोतों और नमक के टीलों पर बैठकर हिरणों का शिकार करते हैं। आम तौर पर, जब कोई शिकारी किसी हानिरहित हिरण से अधिक खतरनाक जानवर को देखता है, तो वह या तो चुप रहता है या अगर उसे लगता है कि शिकार करने का अच्छा मौका है तो चुपके से निकल जाता है। फिर भी, शिकारियों के बीच भी कुछ ऐसे होते हैं जो अंधाधुंध गोली चलाते हैं। वे अपने आस-पास दिखने वाले किसी भी जानवर पर अपनी बंदूकें चला देते हैं, और हो सकता है कि इन्हीं में से किसी

एक ने इस हाथी को घायल कर दिया हो और इसी से उसके इस घुमंतू जीवन की शुरुआत हुई हो।

यह भी संभव है कि रात में अपनी फसलों की रखवाली कर रहे किसी साधारण किसान ने अपनी बंदूक से उस पर गोली चला दी हो। हाथी जंगल के पास उगने वाली फसलों को नष्ट करने के शौकीन होते हैं।

जो भी बात उसे शुरू में परेशान कर रही थी, गेरहेट्टी के उस बदमाश ने अपना करियर काफी अचानक शुरू किया, और थोड़े समय के लिए उसने उस घने जंगल में अपना दबदबा कायम रखा जहां वह रहता था, और वह एक आतंक बन गया, जिसने लगभग चार सौ वर्ग मील के क्षेत्र में बैलगाड़ी और पैदल यात्रियों सहित सभी यातायात को ठप कर दिया।

गेरहेट्टी एक छोटे से गाँव का नाम है जिसमें लगभग पाँच-छह झोपड़ियाँ हैं। यह गाँव सलेम नॉर्थ फ़ॉरेस्ट डिवीज़न में एंचेटी से पेन्नाग्राम जाने वाले रास्ते से लगभग दो मील दूर स्थित है। यहाँ का इलाका बहुत पहाड़ी है और तलवादी नाले नामक एक पथरीली धारा के दोनों किनारों से लगभग तीन मील की दूरी तक घना बाँस का जंगल फैला हुआ है। यह धारा कावेरी नदी में उस स्थान से लगभग पंद्रह मील दक्षिण-पश्चिम में मिलती है जिसके बारे में मैं आपको बता रहा हूँ। इस बाँस के जंगल में लगभग हमेशा हाथियों के झुंड दिखाई देते हैं और अक्सर तीन-चार हाथी अकेले भी घूमते रहते हैं। हालाँकि हाथी हिंसक नहीं होते, फिर भी जंगल के निवासी उनसे बहुत सावधानी से बचते हैं।

गोलमोथी नामक एक अन्य धारा, तलवाड़ी नदी के लगभग समानांतर बहती है, जो उससे लगभग बारह मील उत्तर में स्थित है और गुंडालम नदी में मिल जाती है, जो स्वयं कावेरी नदी की एक सहायक नदी है। ये तीनों नदियाँ, चारों ओर से घिरी पहाड़ियाँ और घने बाँस के जंगल, किसी भी हाथी के लिए आदर्श निवास स्थान बनाते हैं, और यहीं से उस दुष्ट हाथी ने एक हत्यारे के रूप में अपना करियर शुरू किया था।

यह सब कुछ इस तरह शुरू हुआ। भीषण गर्मी के कारण, गोलामोथी नदी सूख गई थी, सिवाय एक-दो छिटपुट जलकुंडों के जो नदी तल पर उभरी विशाल चट्टानों के बीच बने थे और भूमिगत जल के रिसाव से पोषित हो रहे थे। इनमें से एक जलकुंड में कुछ बड़ी मछलियाँ पाई जाती थीं, जिनकी लंबाई शायद छह से आठ इंच थी। एक दोपहर, पाँच मील दूर स्थित एंचेटी गाँव के दो लोगों ने फैसला किया कि वे इस जलकुंड में जाकर कुछ मछलियाँ पकड़ेंगे, क्योंकि तेजी से वाष्पीकरण के कारण यह सीमित क्षेत्र बचा था।

वे तालाब के पास पहुँचे और अपने जाल डाले। जल्द ही उन्हें काफी मछलियाँ मिल गईं। फिर उन्होंने मछलियों को अपनी टोकरियों में रखा और तालाब के किनारे एक छायादार पेड़ के नीचे थोड़ी देर आराम करने के लिए लेट गए।

लगभग पाँच बजे उनमें से एक की नींद खुली। सूर्य अभी-अभी तालाब के पश्चिम में स्थित एक पहाड़ी की चोटी के पीछे डूबा था, लेकिन फिर भी काफी उजाला था। जैसे ही वह अपने सोए हुए साथी के बगल में बैठा, किसी चीज़ ने उसे पीछे मुड़कर देखने के लिए प्रेरित किया, जहाँ उसने गोलमोथी नदी के दक्षिणी किनारे से तालाब की ओर जाते हुए एक विशालकाय हाथी को देखा।

उस आदमी ने हाथ बढ़ाकर अपने साथी को ज़ोर से हिलाया और तमिल में फुसफुसाते हुए कहा, 'अनाई वरधु', जिसका अर्थ है 'हाथी आ रहा है'। फिर वह उठा और उत्तरी किनारे की ओर जंगल में भाग गया। उसका साथी, जो अचानक नींद से जाग गया था, चेतावनी का महत्व पूरी तरह समझ नहीं पाया और जब वह इधर-उधर

देख रहा था और सोच रहा था कि उसके दोस्त को क्या हुआ है, तभी हाथी उस पर आ गिरा।

जो आदमी बच निकला, उसने मुझे बताया कि उसने अपने पीछे छूटे दोस्त की चीखें सुनीं, जो क्रोधित हाथी की तीखी चिंघाड़ के साथ मिली हुई थीं। फिर सन्नाटा छा गया। ज़ाहिर है, उसने और कुछ सुनने का इंतज़ार नहीं किया। दो दिन बाद, जब एंचेटी से खोज दल अवशेषों की तलाश में आया, तो उन्हें टूटे हुए मांस और हड्डियों का एक गूदा ढेर मिला जो तेज़ धूप में सड़ रहा था। इस बात के सबूत मिले कि हाथी ने पहले उस आदमी पर अपना पैर रखा और फिर अपनी सूंड से उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। वह एक पैर को दस गज दूर एक जगह पर ले गया, जहाँ उसने उसे एक जंबुलम पेड़ के टेढ़े-मेढ़े तने पर पटका और अंत में चट्टानों के बीच फेंक दिया।

वह उस दुष्ट हाथी का पहला शिकार था। उसका दूसरा प्रयास एक चरवाहे पर था जो सूर्यास्त के समय अपने पशुओं को गुंडालम स्थित मवेशी बाड़े की ओर ले जा रहा था। यह लड़का युवा और फुर्तीला होने के कारण सूखी नदी के किनारे रेत पर भाग निकला, जिसका पीछा वह क्रूर हाथी कर रहा था। जब उसे लगा कि वह पीछे छूट रहा है, तो लड़के ने सूझबूझ से पहाड़ी की खड़ी ढलान पर चढ़ गया, जहाँ चट्टानें बहुत फिसलन भरी थीं और छोटे-छोटे ढीले पत्थर बहुतायत में थे। इससे वह अपनी बढ़त बनाए रखने में सफल रहा।

भागने की अफरा-तफरी में लड़के के नंगे पैर नुकीले पत्थरों पर बुरी तरह छिल गए, जबकि उसके शरीर पर जगह-जगह कांटे और झाड़ियाँ थीं जो उसे रोकने की कोशिश कर रही थीं। लेकिन वह दौड़ता रहा और पहाड़ी पर लगभग दो सौ गज ऊपर निकली एक ऊँची चट्टान पर चढ़कर हाथी से बच निकलने में कामयाब रहा।

बाद में उसने मुझे बताया कि जब हाथी चट्टान के पास पहुँचा, तो वह उसके चारों ओर कई बार घूमा, चिंघाड़ता रहा और अपनी सूंड से अपने शिकार पर वार करने की कोशिश करता रहा। लेकिन लड़के ने अपना धैर्य बनाए रखा और हाथी के साथ-साथ चलता रहा, उस भयानक सूंड की नोक से यथासंभव दूर रहने की कोशिश करता रहा। उसने मुझे बताया कि चट्टान की चोटी का क्षेत्रफल लगभग पच्चीस वर्ग फुट था और शिकारी हाथी की सूंड की साँप जैसी नोक कभी-कभी उसके टखनों से एक फुट की दूरी पर आ जाती थी। फिर भी वह उससे बचने में कामयाब रहा, और एक घंटे तक इस खेल के बाद हाथी ने अचानक अपने शिकार में रुचि खो दी और वहाँ से चला गया। फिर भी लड़का इतना डरा हुआ था कि नीचे नहीं उतर पाया और उसने रात चट्टान की चोटी पर ही बिताई, अगली सुबह सूरज के आसमान में काफी ऊपर चढ़ने के बाद ही वह नीचे उतरा, जब उसे लगा कि हाथी आसपास कहीं नहीं है।

इसके बाद एक महीने तक शांति छाई रही, जब उस इलाके में रहने वाले कुछ लोगों को लगने लगा कि शायद हाथी दूसरे क्षेत्रों में चला गया है, या फिर अगर वह मद में था, तो वह मद का मौसम बीत चुका है और उसकी हालत सामान्य हो गई है।

लेकिन वे बहुत आशावादी थे, क्योंकि चरवाहे का पीछा करने में असफल रहने के ठीक पाँच सप्ताह बाद, इस हाथी ने दो राहगीरों पर हमला कर दिया, जब वे एंचेटी से लगभग आठ मील दक्षिण में स्थित नट्टपलयम गाँव की ओर जंगल से होकर जा रहे थे। इन दोनों व्यक्तियों का अचानक उस दुष्ट हाथी ने पीछा करना शुरू कर दिया और वे जंगल के रास्ते पर भागने लगे, जबकि हाथी लगभग सौ गज पीछे उनका पीछा कर रहा था। इनमें से एक व्यक्ति लगभग तीस वर्ष का था और दूसरा उससे लगभग दस वर्ष बड़ा। उम्र का असर जल्द ही बड़े व्यक्ति पर दिखने लगा, जिससे वह पीछे रह गया और उसकी साँसें सिसकते हुए चलने लगीं। वह जानता था कि उसकी मृत्यु

निश्चित है, और उसने भागते रहने की पूरी कोशिश की। दुर्भाग्य से, उसने अपना आपा खो दिया था, और उसने हाथी से बचने का कोई प्रयास नहीं किया, जैसा कि वह कर सकता था, जैसे कि पेड़ पर चढ़ना, किसी चट्टान के पीछे छिपना या भागते समय अपने कपड़े का कुछ हिस्सा फेंक देना। यह अंतिम उपाय हमलावर को कुछ मिनटों के लिए रोक सकता था। क्योंकि जब कोई हाथी पीछा कर रहा हो, तो अंतिम उपाय के रूप में अपने कपड़े का कुछ हिस्सा फेंक देना ही उचित होता है; जब हाथी उस तक पहुँचता है और उसे इंसानी गंध आती है, तो वह हमेशा रुककर उसे टुकड़े-टुकड़े कर देता है। इस तरह मिले कीमती पलों में पीड़ित को भागने का मौका मिल जाता है।

लेकिन यह बेचारा आदमी तब तक दौड़ता रहा जब तक वह और दौड़ नहीं सका। जब वह रास्ते पर बेसुध पड़ा था, तो हाथी ने उसे पकड़ लिया, उसका शरीर दर्द से कराहते फेफड़ों से उबड़-खाबड़ हो रहा था। जल्द ही इस धरती पर उनकी सेवा समाप्त हो गई, क्योंकि हाथी ने उसे अपनी सूंड में उठाया और रास्ते के किनारे एक बड़े पत्थर से बार-बार टकराया, उसे बुरी तरह पीटकर अधमरा कर दिया और अंत में जंगल में फेंक दिया।

इन घटनाओं के परिणामस्वरूप, वन अधिकारियों के माध्यम से सलेम जिले के कलेक्टर को याचिकाएँ भेजी गईं, जिसमें इस हाथी को 'अनैतिक' घोषित करने की मांग की गई थी। इसका अर्थ यह था कि जिले में किसी भी शिकार लाइसेंस धारक को हाथी का शिकार करने की अनुमति दे दी गई थी। सामान्यतः, भारत में हाथी को सख्त संरक्षण प्राप्त है। दुनिया के अन्य हिस्सों की तरह ही, भारत में भी लालफीताशाही एक धीमी प्रक्रिया है, और भारत में तो यह स्थिति और भी गंभीर है। इसी कारण आवश्यक आदेश जारी करने में तीन महीने या उससे अधिक का समय लग गया। जिले के सभी शिकार लाइसेंस धारकों को सूचित करने में एक महीने की और देरी हुई।

इस बीच, वह बदमाश काफ़ी सक्रिय था। उसने वन विभाग द्वारा काटी गई चंदन की लकड़ियों से लदी एक बैलगाड़ी पर हमला कर दिया। बैलगाड़ी का चालक और चंदन के साथ चल रहा वन रक्षक जंगल में भागकर बच निकले, लेकिन बैलगाड़ी चकनाचूर हो गई और एक बैल को मामूली चोट आई।

कुछ ही समय बाद, उस बदमाश ने एक असामान्य काम किया। चरवाहों द्वारा जंगल में छोड़े गए मवेशी आम तौर पर काफी बड़े क्षेत्र में फैल जाते हैं। जाहिर तौर पर इनमें से एक जानवर उस बदमाश के बहुत करीब भटक गया, जिस पर बदमाश ने हमला किया और उसकी कमर तोड़ दी।

कुछ समय की शांति के बाद यह खबर आई कि उसने इस क्षेत्र की एक जंगली जनजाति के एक पुजारी की हत्या कर दी है, क्योंकि वह उस ठेकेदार के लिए जंगल से शहद लेकर लौट रहा था जिसने वन विभाग से इस विशेष क्षेत्र में सभी जंगली शहद को इकट्ठा करने का अधिकार खरीदा था।

फिर मुझे आधिकारिक सूचना मिली। आम तौर पर मुझे हाथी के शिकार में कोई आनंद नहीं आता, क्योंकि इन विशाल और महान जानवरों के प्रति मेरे मन में बहुत स्नेह है। दूसरी बात, मुझे लगता है कि हाथी अपेक्षाकृत शांत स्वभाव के होते हैं; हाथी चरते समय झाड़ियों में शोर मचाकर अपनी स्थिति का पता दे देते हैं। ऐसे में शिकार के हवा के विपरीत दिशा में जाकर उसके पास तक पहुंचना अपेक्षाकृत आसान होता है। बस पैरों को सही जगह पर रखने का थोड़ा अनुभव होना चाहिए, ताकि सूखी पत्तियों या टहनियों पर पैर न पड़े जो चटकने की आवाज करके शिकारी की स्थिति का पता दे देती हैं।

शिकार करते समय स्थिर रहने की कला का एक और महत्वपूर्ण पहलू है 'जम जाने' की क्षमता, यानी उस समय आप जिस भी स्थिति में हों, शिकार के आपकी ओर देखने पर बिल्कुल स्थिर हो जाना। अर्ध-झुकी हुई स्थिति में यह कभी-कभी थोड़ा अटपटा लग सकता है, लेकिन सीधा होना या नीचे बैठना घातक हो सकता है, क्योंकि ज़रा सी भी हलचल से शिकारी का भेद खुल जाएगा। सबसे अच्छा तरीका है कि आप बिल्कुल स्थिर रहें, चाहे दस मिनट तक भी उसी अर्ध-झुकी हुई स्थिति में क्यों न रहें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह कभी-कभी बेहद थकाने वाला हो सकता है।

इन तरीकों से मैंने कई बार हाथियों का पीछा करते हुए उनके कुछ गज के करीब जाकर उन्हें शांति से चरते हुए देखा है, और उन्हें मेरी मौजूदगी का ज़रा भी एहसास नहीं हुआ। लेकिन मेरी गंध की हल्की सी आहट या पैरों की हल्की सी सरसराहट भी उन्हें तेज़ी से भगा देती। हाथी की नज़र बहुत कमज़ोर होती है, और अगर आप मिलिट्री की खाकी-हरे रंग की वर्दी पहने हों और बिल्कुल स्थिर खड़े रहें, तो भी वे अक्सर आपकी ओर देखेंगे, लेकिन उन्हें आपकी मौजूदगी का पता नहीं चलेगा।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, इन्हीं कारणों से मुझे हाथियों का शिकार करना पसंद नहीं है। साथ ही, कई तथाकथित बदमाश हाथी असल में बदमाश होते ही नहीं हैं। जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, शिकारी और किसान अक्सर हाथियों पर गोली चलाते हैं और इस प्रक्रिया में उन्हें घायल कर देते हैं, जब वे मानव जाति से क्रोधित हो जाते हैं। फिर, तथाकथित बदमाशों के खिलाफ़ दर्ज की गई कई घटनाएं तो कभी हुई ही नहीं, क्योंकि हाथी का शिकार करने के इच्छुक लोग कभी-कभी मनगढ़ंत कहानियां गढ़ते हैं और ग्रामीणों को बढ़ा-चढ़ाकर रिपोर्ट लिखने के लिए उकसाते हैं ताकि कलेक्टर उस बदमाश हाथी पर प्रतिबंध लगा दे। कलेक्टर आमतौर पर आदेश जारी करने से पहले ऐसे मामलों की बहुत सावधानीपूर्वक और गहन जांच करते हैं; लेकिन कभी-कभी, इन सभी सावधानियों के बावजूद, ऐसे हाथी मारे जाते हैं जो वास्तव में बदमाश होते ही नहीं हैं।

इसलिए मैंने सूचना पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, जब तक कि लगभग तीन सप्ताह बाद पेन्नाग्राम कस्बे में रहने वाले मेरे शिकारी रंगा का पत्र नहीं आया। उसने बताया कि चार दिन पहले गेरहेट्टी से लगभग सात मील दूर अनाइबिद्दामदुवु नामक स्थान पर एक हाथी ने एक पुजारी महिला को मार डाला था। इस नाम का शाब्दिक अर्थ है 'वह तालाब जिसमें हाथी गिरा'। यह एक प्राकृतिक तालाब है, जो अनाइबिद्दाहल्ला नदी के तल पर खड़ी चट्टानों से बना है। अनाइबिद्दाहल्ला नदी चिन्नार नदी की एक सहायक नदी है, जो स्वयं दक्षिण भारतीय नदियों में सबसे बड़ी कावेरी नदी की सहायक नदी है। इसके अलावा, यह तालाब गहरा है और कभी सूखता नहीं है। मुझे बताया गया है कि कई साल पहले एक हाथी पानी के लिए अपनी सूंड का इस्तेमाल करते हुए उसमें गिर गया था और उसके चारों ओर मौजूद खड़ी और फिसलन भरी चट्टानों के कारण बाहर नहीं निकल पाया था। हाथी अच्छे तैराक होते हैं और उनमें अदम्य शक्ति और सहनशक्ति होती है, लेकिन उनका शरीर भी बहुत बड़ा होता है। तो यह बेचारा प्राणी, लगातार तीन दिनों तक तालाब में गोल-गोल तैरने के बाद, धीरे-धीरे डूब गया और उन लोगों की काफी बड़ी भीड़ के सामने दम तोड़ दिया, जो पेन्नाग्राम से ग्यारह मील की दूरी तय करके इस 'तमाशा' को देखने आए थे।

रंगा का पत्र मिलने के बाद, और चूंकि उससे मिले हुए काफी समय बीत चुका था, मैंने चार दिन की छुट्टी ली और पेन्नाग्रीम के लिए रवाना हो गया। मैंने उसे वहाँ से

लिया और गेरहेट्टी वन बंगले तक जाने वाली अठारह मील या उससे अधिक की बेहद खराब वन सड़क तय की, रास्ते में अन्नाइबिधमधुवु से होते हुए।

गेरहेट्टी के वन रक्षक ने मुझे बताया कि वह हाथी आस-पास ही था, साथ ही लगभग दस हाथियों का एक झुंड भी था। ये सभी जानवर बंगले के सामने वाले पानी के गड्ढे पर पानी पीने आते थे, और झुंड में कई जानवर लगभग उसी आकार के थे जिस आकार का वह हाथी था, इसलिए यह पहचानना मुश्किल था कि कौन सा हाथी कौन है। इस वजह से किसी भी खास पदचिह्न का निश्चित रूप से पीछा करना संभव नहीं था।

इसके अलावा, अधिसूचना में इस जानवर का वर्णन बहुत अस्पष्ट था; इसमें केवल इतना बताया गया था कि अगले पैर की परिधि 4’10” थी, जिससे हाथी की ऊंचाई लगभग 9’.8” हो जाती है, क्योंकि अगले पैर की परिधि का दोगुना लगभग ऊंचाई होती है। रंग काला बताया गया था, लेकिन सभी हाथी नहाने के बाद काले हो जाते हैं, हालांकि वे जल्द ही खुद को रेत या मिट्टी से ढक लेते हैं। जंगल की रेत अलग-अलग रंगों की होती है, जो लाल से लेकर भूरी, धूसर और लगभग काली तक होती है। इसलिए यह भी कोई विशिष्ट पहचान नहीं थी। हाथी की पहचान करने वाली एकमात्र विशेषता यह थी कि उसके दो दांत, जिनकी लंबाई तीन फीट से अधिक बताई गई थी, नोक के पास मिलते और एक दूसरे को काटते थे।

इसलिए आप समझ सकते हैं कि आखिरी कारक ही एकमात्र ऐसा तरीका था जिससे मैं इस विशेष जानवर की पहचान कर पाता, क्योंकि यह संदेह था कि वह मुझे पास जाकर उसकी ऊंचाई मापने की अनुमति देगा या नहीं! लेकिन यह देखने के लिए कि क्या उसके दांत एक-दूसरे को काट रहे थे, हाथी को सामने से देखना ज़रूरी था, क्योंकि किसी कोण से देखने पर दांत बिना काटे भी एक-दूसरे को काटते हुए दिखाई दे सकते हैं। मैं निश्चित रूप से गलत जानवर को गोली नहीं मारना चाहता था, इसके अलावा इससे होने वाली भारी परेशानी और आधिकारिक स्पष्टीकरण से भी बचना चाहता था।

इसका मतलब यह था कि मैं उस हाथी के माप तक आने वाले किसी भी पदचिह्न का चयन कर सकता था और उनका पीछा तब तक कर सकता था जब तक कि मुझे वह जानवर न मिल जाए जिसने वे पदचिह्न बनाए थे। फिर मैं जानवर को सामने से देखने के लिए आगे बढ़ता ताकि यह पता लगा सकूँ कि क्या उसके दांत आपस में मुड़े हुए हैं। यदि ऐसा होता, तो वह मेरा हाथी होता। यदि ऐसा नहीं होता, तो मुझे फिर से तालाब में वापस जाकर पदचिह्नों के दूसरे समूह का पीछा करना पड़ता। यह याद रखना आवश्यक है कि मेरे पास केवल चार दिन थे, और इन चार दिनों में से एक दिन रंगा को लेने, गेरहेट्टी आने और आवश्यक पूछताछ करने में ही बीत चुका था।

उस रात करीब दस बजे मैंने तालाब के पास हाथियों के चरने की आवाज़ सुनी। यह निस्संदेह हाथियों का झुंड था, और वह शरारती हाथी उनके साथ नहीं होगा। इसलिए मैं फिर से सो गया।

भोर होते ही मैं रंगा और वन रक्षक के साथ मिलकर एक पदचिह्न का पीछा करने के लिए निकल पड़ा। पानी के गड्ढे के किनारे पर हर आकार के हाथियों के पैरों के निशान बिखरे पड़े थे, जहाँ हाथियों के झुंड ने पिछली रात पानी पिया था। इनमें कुछ बहुत छोटे हाथियों के भी पदचिह्न थे, जिनकी ऊँचाई मुश्किल से तीन फीट से ज़्यादा रही होगी।

तालाब के चारों ओर घूमते हुए, मुझे तीन पदचिह्न मिले जो उस हाथी के आकार के लगभग बराबर थे। मैंने देखा कि इनमें से दो पदचिह्न तालाब के उसी तरफ बने थे

जहाँ हाथियों का झुंड पानी पी रहा था, जबकि तीसरा पदचिह्न उस हाथी का था जो पानी की ओर बिल्कुल अलग दिशा से आया था। इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि यह तीसरा जानवर ही वह हाथी हो सकता है, और हम एक कतार में उसका पीछा करने लगे। रंगा आगे-आगे पदचिह्नों का पीछा कर रहा था; मैं उसके पीछे-पीछे अपनी दोहरी बैरल वाली 450/400 जेफ्री राइफल से उसे कवर करते हुए चल रहा था; वन रक्षक मेरे पीछे था, उसका काम पीछे से होने वाले हमले से बचाव करना था, यदि हाथी अर्धवृत्ताकार घूमकर हमारे पीछे चर रहा हो।

पानी से निकलने के कुछ ही दूर बाद ज़मीन लंबी भाले जैसी घास से ढकी हुई थी, जिससे पिछली रात हाथी के गुज़रने के निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे, जो चारों ओर से कुचले हुए थे। फिर भाले जैसी घास हटकर लैंटाना और वेट-ए-बिट थॉर्न जैसी काँटेदार झाड़ियाँ उग आईं। यहाँ भी हमारे शिकार के गुज़रने का रास्ता देखना अपेक्षाकृत आसान था, लेकिन काँटों के कारण हमारा आगे बढ़ना मुश्किल हो गया, क्योंकि वे हमारे कपड़ों को नोच रहे थे और फाड़ रहे थे।

फिर भी रास्ते साफ़ थे और हम लगभग एक मील तक अच्छी गति से आगे बढ़े, तभी हम एक छोटी पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे। इस पहाड़ी की ढलानें घने बाँस से ढकी हुई थीं, और हाथी इसी से गुज़रते हुए पहाड़ी पर चढ़ गया था। वह बाँस की पत्तियों के सिरों से निकलने वाली कोमल कोंपलों को चरने के लिए भी रुका था, जैसा कि रास्ते में मिले टूटे हुए बाँस के तनों के ढेर में उसके द्वारा मचाई गई तबाही से स्पष्ट था। यहाँ उसने काफ़ी मात्रा में गोबर किया था, और जब हम पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे और दूसरी तरफ नीचे उतरे, तो यह स्पष्ट हो गया कि हाथी ने उस सुबह तड़के तक भोजन किया था; क्योंकि गोबर ताज़ा था और ठंडा होने का समय नहीं मिला था।

यहां से आगे का हमारा सफर बेहद धीमा और श्रमसाध्य हो गया। घने बांस ने हमें पूरी तरह से घेर लिया था और हममें से किसी के भी लापरवाही से कदम रखने पर सरसराहट या तेज चटकने की आवाज आती थी, यह इस बात पर निर्भर करता था कि हम पत्तियों पर पैर रख रहे हैं या बांस की टहनियों पर।

मैंने रंगा की कोहनी को छुआ और उसे स्थिर खड़े रहने का इशारा किया, गार्ड और मैंने भी ऐसा ही किया। हम दस मिनट से अधिक समय तक हाथी के भोजन करने की जानी-पहचानी आवाज़ या पाचन प्रक्रिया के दौरान उसके विशाल पेट से निकलने वाली गहरी गड़गड़ाहट सुनने की कोशिश करते रहे। लेकिन जंगल अपेक्षाकृत शांत था, सिवाय हमारे चारों ओर गूंजते भूरे जंगली मुर्गों की चहचहाहट और सामने की पहाड़ी पर दूर से आती लंगूर बंदरों की आवाज़ के।

ज़ाहिर तौर पर हमारा शिकार आराम कर रहा था, या शायद हमारे सामने फैली गहरी घाटी में और नीचे चला गया था। चूंकि बाद वाला ज़्यादा संभावित लग रहा था, इसलिए हम दबे पांव, धीरे-धीरे और सावधानी से उसके पीछे-पीछे चलने लगे। हमें अपनी नज़रें नीचे रखनी पड़ीं ताकि हम किसी ऐसी चीज़ पर पैर न रख दें जिससे हमारी मौजूदगी का पता चल जाए। आधा मील और चलने पर हम घाटी में पहुँच गए, जहाँ झाड़ियाँ बहुत घनी थीं; जंगली बेर, बेल और विशाल इमली के पेड़ हर जगह बहुतायत से उगे हुए थे, जिससे पंद्रह से बीस गज से आगे देखना असंभव था। दो सौ गज और चलने पर हम गोलामोथी नदी की एक छोटी सहायक नदी के पथरीले तल पर पहुंच गए।

हाथी यहाँ नदी के तल के किनारे-किनारे चलकर पचास गज आगे एक रेतीले स्थान पर नदी पार कर गया था। नदी का वह किनारा, जिस पर वह चढ़ गया था, काफी ढलान वाला था, इसलिए अब हमारे सामने हाथी के ठीक ऊपर होने का खतरा

मंडरा रहा था, जो किसी 'दुष्ट' हाथी से सामना करने का सबसे अच्छा तरीका तो बिल्कुल नहीं था।

हम बहुत धीमी गति से और यथासंभव खामोशी से आगे बढ़े। हमारा शिकार खाना बंद कर चुका था और अब फिर से चलने लगा था। हमने जल्द ही देखा कि वह उस पहाड़ी की चोटी के पार स्थित किसी दूसरी घाटी की ओर जा रहा था जिस पर हम चढ़ रहे थे। यह निष्कर्ष निकालते हुए हमने अपनी गति बढ़ा दी, लेकिन अभी हम केवल एक चौथाई मील ही आगे बढ़े थे कि हमें हाथी के पेट से भारी भोजन पचाने की गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी।

मैंने रंगा और वन रक्षक को एक मजबूत इमली के पेड़ पर चढ़ा दिया और खुद अकेले ही आवाज़ की दिशा में दबे पांव आगे बढ़ा। हाथी बांसों से घिरे एक छोटे से गड्ढे में था। जाहिर है वह आराम कर रहा था, या शायद लेटा हुआ था, क्योंकि उसके खाने की कोई आवाज नहीं आ रही थी। इस समय तक गड़गड़ाहट भी बंद हो चुकी थी।

बहुत सावधानी से, लगभग इंच-दर-इंच, मैं गड्ढे में उतरा। फिर एक पल रुककर, मैंने अपने हाथ में थोड़ी सी नरम मिट्टी उठाई और उसे अपने सामने ऊपर उठाकर गिरा दिया ताकि देख सकूं कि हवा किस दिशा से बह रही है। मिट्टी सीधी गिरी, जिससे पता चला कि गड्ढे में ने के बराबर हवा थी। यह एक नुकसान था, क्योंकि शांत हवा में हाथी के मुझे सूंघ लेने की संभावना थी।

तो मैं और भी सावधानी से आगे बढ़ा, अगर ऐसा संभव था तो। बाँस के पेड़ मेरे ऊपर ऊँचे-ऊँचे खड़े थे, और मैं हर बाँह के पास पहुँचते ही उसके पीछे से झाँकता हुआ देखता। इसी तरह कुछ और कदम चलने पर मुझे अपने सामने एक स्लेटी रंग का बड़ा पत्थर दिखाई दिया। वह हाथी था, ज़मीन पर लेटा हुआ, और बदकिस्मती से, उसका मुँह दूसरी दिशा में था।

अब मेरे पास दो विकल्प थे: या तो मैं रास्ता बदलकर हाथी के सामने से आने की कोशिश करता, जहां से मैं उसके दांत देख पाता और गोली चलाने से पहले उसे ही शरारती हाथी के रूप में पहचान लेता, या फिर इससे कहीं आसान तरीका यह था कि मैं जहां खड़ा था वहीं से उसे उकसा देता। वह निश्चित रूप से पलटकर मेरी ओर देखता, जिससे मैं उसे पहचान लेता और उसके कुछ समझने से पहले ही गोली चला देता।

दूसरा और आसान रास्ता चुनते हुए, मैं बांस के एक झुंड के पीछे छिप गया और धीरे से सीटी बजाई। हाथी ने ध्यान नहीं दिया। शायद वह गहरी नींद में था, या उसने सोचा कि आवाज़ किसी जंगली पक्षी की है। फिर मैंने ज़ोर से जीभ चटकाई। इसका असर हुआ और हाथी झट से खड़ा हो गया और मेरी तरफ़ घूम गया।

वह एक भव्य हाथी था, लगभग दस फीट लंबा, और उसके हाथीदांत सुबह की धूप में शानदार ढंग से चमक रहे थे। लेकिन वे एक दूसरे से काफी दूर थे, बिल्कुल भी आपस में नहीं टकरा रहे थे। मैंने अपना समय गलत हाथी का पीछा करने में बर्बाद कर दिया था।

हाथी लगभग आधे मिनट तक हैरानी से मेरी ओर देखता रहा, उसकी छोटी-छोटी आँखें उस प्राणी को निहार रही थीं जिसने उसकी नींद में खलल डाला था। मैं लगभग उसके मन में चल रहे विचारों को पढ़ सकता था। हैरानी के बाद उसकी पहली प्रतिक्रिया झुंझलाहट थी और वह धमकी भरे अंदाज़ में एक-दो कदम आगे बढ़ा। मैंने एक और तेज़ सीटी बजाई, जिसकी आवाज़ से उसका साहस पस्त हो गया और वह दुम दबाकर जंगल की ओर भाग गया, उसके भागने की गड़गड़ाहट दूर जाकर गुम हो गई।

जब मैं रंगा और वन रक्षक को जिस स्थान पर छोड़कर लौटा, तब तक वे इमली के पेड़ से नीचे उतर चुके थे। उन्होंने जो आवाज़ें सुनी थीं, उनसे उन्हें स्पष्ट रूप से समझ आ गया था कि मुझे कोई ऐसा जानवर मिल गया है जो वह बदमाश नहीं है जिसकी हम तलाश कर रहे थे। फिर हम तीनों निराश होकर पानी के स्रोत की ओर वापस चल पड़े, न केवल हताश थे, बल्कि समय बर्बाद होने से नाराज़ भी थे।

जैसा कि पहले बताया गया था, लगभग समान आकार के दो और पदचिह्न थे। वे तालाब की कीचड़ में बने थे और उन्हें टेप से नापकर यह पता लगाने का कोई फ़ायदा नहीं था कि कौन सा पदचिह्न उस बदमाश के बताए गए आकार के सबसे करीब है; नरम कीचड़ किसी भी जानवर के पदचिह्न को बढ़ा देती है। रंगा ने एक पदचिह्न का पीछा किया, और गाइड और मैंने दूसरे का, इस समझ के साथ कि हम आगे की चर्चा के लिए पंद्रह मिनट में पानी के गड्ढे पर लौटेंगे।

कुछ ही देर में मुझे समझ आ गया कि जिस जानवर का मैं पीछा कर रहा था, वह झुंड का ही एक हिस्सा था, क्योंकि झाड़ियों के बीच से चरती हुई गायें और उनके बच्चे दिखाई दे रहे थे जो उसके साथ थे। वह निश्चित रूप से शरारती हाथी नहीं था, और मेरी घड़ी के अनुसार ठीक पंद्रह मिनट बाद मैं मुड़ा और पानी के स्रोत की ओर वापस चल पड़ा। रंगा के पास घड़ी नहीं थी, इसलिए वह अभी तक नहीं आया था, तो मैं शांति से बैठकर वन रक्षक द्वारा लाई गई थर्मस से गर्म चाय की चुस्की लेने लगा। लगभग दस मिनट बाद, वह यह बताने आया कि हाथी पानी के स्रोत से एक चौथाई मील दूर घूमकर अर्धवृत्ताकार चक्कर लगाकर जंगल की एक पट्टी से गुजरा जो बंगले के ठीक पीछे, विपरीत दिशा में एक पहाड़ी की ओर जाती थी।

यह खबर आशाजनक लग रही थी, इसलिए हम तुरंत चल पड़े। जल्द ही हम उस जगह पर पहुँच गए जहाँ से रंगा ने रिपोर्ट दी थी। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि हमारा नया शिकार एक यात्री था, क्योंकि वह शायद ही कभी रुका था, बस कभी-कभार रसीले नए पत्तों की एक छोटी सी डंडी तोड़ रहा था। वह हाथी हमें जंगल बंगले के पीछे वाली पहाड़ी से होते हुए, अगली दो पहाड़ियों को पार करके, लगभग सीधी रेखा में तलवाड़ी धारा तक ले गया।

कुल मिलाकर हमने उस नदी के तल तक पहुँचने से पहले चार मील से अधिक का सफ़र तय किया, जहाँ हमने पाया कि हाथी दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ गया था और सीधे तलवाड़ी नदी की ओर बढ़ रहा था। मुझे पता था कि कावेरी नदी पंद्रह मील की दूरी पर है, और मुझे लगने लगा कि हमारे शिकार ने अचानक बड़ी नदी तक पहुँचने का निश्चय कर लिया है। एक बार ऐसा करने के बाद, और विशेष रूप से यदि वह तैरकर दूसरी ओर चला गया, तो उसका पीछा करना असंभव होगा, क्योंकि वहाँ का इलाका न केवल अत्यंत घना है, बल्कि सौ मील से भी अधिक दूर नीलगिरी और बिलिगिरिरंगन पर्वतों तक फैला हुआ अखंड जंगल और पहाड़ी क्षेत्र है।

इसलिए हम बिना सोचे-समझे पूरी गति से आगे बढ़ गए, लेकिन हमारा हाथी कई घंटों की बढ़त ले चुका था, और उसके लंबे और दृढ़ कदमों को देखकर यह स्पष्ट था कि वह यात्रा करने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

दोपहर की तेज़ धूप में नदी की नरम रेत अब झुलसा देने वाली गर्म हो गई थी। इससे मेरा चलना मुश्किल हो रहा था और यह रेत मेरे जूतों में इस तरह रिस रही थी जैसे नदी या समुद्र की महीन रेत रिसती है। बीच-बीच में नदी का तल पथरीला हो जाता था और दूर-दूर तक महीन रेत की जगह गोल, पानी से घिसे हुए बड़े-बड़े पत्थर दिखाई देते थे। ऐसी जगहों पर हाथी पत्थरों से बचने के लिए नदी के किनारों की झाड़ियों को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा था, और हम भी ऐसा ही कर रहे थे, लटकती लताओं से बचते हुए कमर झुकाए हुए, और मेहनत से पसीने से तरबतर।

पंद्रह मील पैदल चलने के बाद हम तलवाड़ी और कावेरी के संगम के पास पहुँच गए। बड़ी नदी से कुछ सौ गज की दूरी पर, तलवाड़ी धारा को उत्तैमलाई गाँव से बिलिगुंडलु जाने वाला एक कच्चा रास्ता पार करता है। हाथी ने यहाँ से दिशा बदल ली थी और उत्तैमलाई की ओर दो मील और चलने के बाद, बड़ी नदी के किनारे स्थित एक दलदल की ओर दक्षिण की ओर मुड़ गया। यह दलदल, जिसे करतेई पलाम के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है बाइसन की खोखली जगह, मुझे अच्छी तरह से ज्ञात था। वर्षों पहले यह बाइसन के झुंडों का नियमित ठिकाना हुआ करता था, जो कोयंबटूर तट से सलेम तट तक कावेरी नदी को तैरकर पार करते थे। साल के इस समय दलदल कुछ जगहों को छोड़कर काफी सूखा था, लेकिन हर जगह हरी-भरी घास उगी हुई थी, जबकि घने पेड़ों के समूह पूरे क्षेत्र में फैले हुए थे।

अब हमें ऐसे संकेत मिले कि हाथी ने खाना शुरू कर दिया था, और जैसे ही हम दलदल के केंद्र की ओर बढ़े, ताजे गोबर के ढेर से पता चला कि जानवर ज्यादा दूर नहीं था।

ज़मीन भी दलदली हो गई थी, और मैंने एक बार फिर रंगा और गार्ड को वापस भेज दिया ताकि कीचड़ में तीन लोगों के चलने से होने वाली आवाज़ को कम किया जा सके। प्रगति बहुत धीमी थी, क्योंकि मुझे न केवल हाथी से सावधान रहना था, बल्कि हर कदम पर ज़मीन का ध्यानपूर्वक निरीक्षण भी करना था, ताकि अचानक कमर तक चिपचिपी काली मिट्टी में न धँस जाऊं। फिर भी, कई बार मैं घुटनों तक कीचड़ में धंस गया, और खुद को बाहर निकालने के लिए मुझे काफी मशक्कत करनी पड़ी और खूब शोर मचाना पड़ा, तब जाकर मुझे ज़मीन पर पैर जमाने का मौका मिला।

कई बार मैंने रुककर सुनने की कोशिश की, पर कुछ सुनाई नहीं दिया। फिर अचानक, बिना किसी चेतावनी के, सरकंडों वाली घास में ज़ोरदार सरसराहट हुई और हाथी लगभग बीस कदम दूर खड़ा था, पूरी तरह से लथपथ और चिपचिपी कीचड़ से सना हुआ जिसमें वह लेटा हुआ था। वह एक विशाल नर हाथी था, जिसके चमकदार सफ़ेद दांत समरूप रूप से मुड़े हुए थे। लेकिन वे उस दुष्ट हाथी के टेढ़े दांत नहीं थे। निराशा और घृणा ने मुझे इतना घेर लिया कि मैंने उस बेचारे हाथी को लगभग भगा ही दिया, और जब मैं अपने अनुयायियों के पास लौटा, तो मेरा मूड बिल्कुल भी अच्छा नहीं था, जैसा कि वे स्पष्ट रूप से देख सकते थे।

शाम के चार बज चुके थे, और हमें तलवाड़ी नदी के किनारे-किनारे लगभग पंद्रह मील वापस लौटना था, साथ ही गेरहेट्टी बंगले तक चार मील और। दूसरा विकल्प यह था कि हम बिलिगुंडलु में डेरा डालें और अगली सुबह लौटें; लेकिन इससे मेरे बचे हुए दो दिनों में से आधा दिन और बर्बाद हो जाता। इसलिए मैंने वापसी का आदेश दे दिया, जिससे मेरे साथी बहुत नाराज़ हुए। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि हमारे पास किसी भी तरह की रोशनी नहीं है, इसलिए हमारी यात्रा का अधिकांश भाग अंधेरे में ही तय करना होगा, क्योंकि चाँद भी नहीं है। कहीं हमें हाथी भी न मिल जाए! मुझे डर है कि मेरा जवाब संक्षिप्त था, और मैंने इस हाथी को, और सभी हाथियों को, एक ऐसे क्षेत्र में भेज दिया जहाँ उन्हें बहुत गर्मी लगेगी।

वापसी का वह सफ़र लड़खड़ाने, फिसलने, चट्टानों पर घिसटने, ठूंठों से टकराने या बेलों में उलझने का एक लंबा सिलसिला सा लग रहा था, और हाथी का कोई आभास या आवाज भी नहीं सुनाई दे रही थी। लगभग आधी रात हो चुकी थी जब हम लड़खड़ाते हुए गेरहेट्टी बंगले में पहुँचे, पूरी तरह थके हुए और बच्चों की तरह चिड़चिड़े। हम सुबह होते ही उठ गए थे, लगातार चलते रहे, काँटों, घास, नदी की रेत और दलदल से होते हुए लगभग चालीस मील का सफर तय कर चुके थे। हमें बहुत तेज भूख और प्यास भी लगी थी।

अगली सुबह मेरे पैरों में ऐंठन और दर्द था। वन रक्षक ने अपना टखना दिखाया, जो उसने तलवाड़ी नदी के किनारे कहीं मोड़ लिया था, और उस दिन के काम से छुट्टी मांगी। केवल रंगा ही स्वस्थ और एक और कठिन दिन के लिए तैयार लग रहा था। दलिया, बेकन और अंडे, और कड़क कॉफी ने मुझे नई ऊर्जा दी, जबकि रागी का एक बड़ा गोला, जो एक छोटा अनाज होता है, उबालकर लगभग एक छोटे तोप के गोले के आकार का बनाया गया था, जिसे कॉफी के साथ खाया गया, रंगा को रात तक संतुष्ट रखेगा।

रात भर हम सब इतने थके हुए थे कि कोई आवाज़ नहीं सुन पाए थे, लेकिन पानी के गड्ढे पर जाने से पता चला कि हमारे सोते समय हाथियों का झुंड वापस लौट आया था। वहाँ दो बड़े हाथियों के ताज़े पदचिह्न भी थे, जिनमें से एक शायद वही पहला हाथी था जिसका मैंने पिछले दिन पीछा किया था, जबकि दूसरा वह जानवर था जिसका मैंने बिल्कुल भी पीछा नहीं किया था। तीसरे हाथी को, जैसा कि हम अच्छी तरह जानते थे, हमने कार्तई पलाम में बहुत दूर छोड़ दिया था।

फिर भी, कुछ भी संयोग पर नहीं छोड़ा जा सकता था; इसलिए हमने पिछले दिन की ही योजना का पालन किया और इन दोनों जानवरों का पीछा करते हुए तब तक आगे बढ़े जब तक हम उन तक नहीं पहुँच गए। सुबह 9:30 बजे तक हम उस पहले बैल तक पहुँच गए जिसका हमने पीछा करने का फैसला किया था। वह पिछले दिन पीछा किए गए दोनों बैलों से थोड़ा छोटा था, और वह बदमाश बैल नहीं था! निस्संदेह यह उन तीन जानवरों में से तीसरा था जिनके पदचिह्न हमने पिछले दिन देखे थे। पानी के गड्ढे पर वापस जाकर, हम शेष रास्ते पर चल पड़े और दोपहर 2:30 बजे हमें उसका निशान बनाने वाला जानवर एक बड़े और घने इमली के पेड़ के नीचे चुपचाप खड़ा मिला। वह भी बदमाश बैल नहीं था। मैंने उसे तुरंत पहचान लिया, वह वही पहला जानवर था जिसका मैंने पिछले दिन पीछा किया था और जिसे मैंने बांसों के बीच लेटे हुए परेशान किया था।

इस प्रकार यह स्पष्ट था कि वह 'बदमाश' आस-पास कहीं नहीं था। मेरे पास उपलब्ध चार दिनों में से तीन दिन बीत चुके थे, लेकिन मैं अभी भी उस दिन से आगे नहीं बढ़ पाया था जिस दिन मैं आया था।

पांच बजे हम बंगले पर वापस आ गए और चाय का एक बड़ा प्याला बना रहे थे। तभी साढ़े पांच बजे आठ मील दूर स्थित एंचेट्टी से बैलगाड़ियों का एक काफिला रात बिताने के लिए वहाँ पहुँचा, क्योंकि वहाँ एक बदमाश हाथी मौजूद था। बैलगाड़ियों ने बताया कि एंचेट्टी से लगभग आधे रास्ते में, जहाँ गोलमोथी नदी सड़क को पार करती है, उन्हें एक बड़े हाथी के पदचिह्न मिले थे, जो कई बार सड़क पार कर चुका था और जाहिर तौर पर नदी के मुहाने के पास ही मंडरा रहा था।

आखिरी क्षण तक हार न मानने का दृढ़ निश्चय करके, रंगा और मैंने जल्दी खाना खाया और अभी भी थके हुए वन रक्षक को कार में बिठाकर उस घाट की ओर चल पड़े जिसके बारे में गाड़ीवालों ने बात की थी।

जब हम वहाँ पहुँचे तो शाम के 7 बज रहे थे और लगभग अंधेरा हो चुका था। कार की रोशनी से हाथी के पदचिह्न दिखाई दिए, जहाँ गाड़ीवालों ने बताया था। नदी पार करते समय, टॉर्च की मदद से हमने अपने दोस्तों की गाड़ी के पहियों से बनी संकरी लकीरों पर हाथी के थाली जैसे पदचिह्न देखे। हाथी गर्म मौसम में दिन के समय बाहर नहीं घूमते, और इससे साफ़ पता चलता है कि हमारे आने से पहले उसी शाम हाथी सड़क पर था। शायद उसने कार की आवाज़ सुनी हो, या हमारी बत्तियाँ देखी हों, और हमारे पहुँचने से ठीक पहले वहाँ से चला गया हो।

हमने जल्दी से स्टडबैकर का हुड नीचे कर दिया। मैंने अपनी सीलबंद बीम वाली स्पॉटलाइट रंगा को दे दी, जिसे मैंने पीछे वाली सीट पर बिठा दिया, लेकिन गार्ड को आगे वाली सीट पर ही रहने दिया। मैं खुद मुड़े हुए हुड पर बैठ गया, मेरे पैर ड्राइविंग सीट पर थे, और मेरी राइफल और टॉर्च तैयार थीं। जल्द ही चारों ओर घना अंधेरा छा गया, क्योंकि हम गोलमोथी नदी के किनारे लगे ऊंचे मुथी और जुमलम के पेड़ों और बांस के झुंडों से घिरे हुए थे, जिनके तने नदी के सूखे रेतीले तल पर ऊपर-नीचे बहने वाली जंगली हवा की धाराओं से अजीब तरह से चरमरा रहे थे।

हालात बहुत खराब थे। पहली बात तो यह कि हमें पता नहीं था कि हमने जो पदचिह्न देखे थे, वे उस हाथी के ही थे या नहीं। वे किसी भी हाथी के हो सकते थे। हमें बस इतना पक्का पता था कि वे गैरहेट्टी के आसपास मौजूद तीन बड़े नर हाथियों में से किसी के नहीं थे। दूसरी बात, उस हाथी के लिए उस घाट पर वापस जाने का कोई कारण नहीं था जहाँ से वह अभी-अभी गुजरा था, क्योंकि उसके पास घूमने के लिए पूरा जंगल था। तीसरी बात, हम सब जानते थे कि एक हाथी के लिए दस मील की दूरी आराम से चलने में मुश्किल से दो घंटे लगते हैं, और जब वह वास्तव में दौड़ रहा होता है तो उसकी गति बहुत तेज़ होती है। चौथी बात, हवा चारों दिशाओं में बह रही थी, और हमारी गंध को एक चौथाई मील के दायरे में मौजूद किसी भी हाथी तक ले जा सकती थी और अगर वह हाथी नहीं होता, तो उसे भगा सकती थी। दूसरी ओर, एक हल्की सी उम्मीद थी कि अगर वह हाथी होता, तो हमारी गंध उसे आकर्षित कर सकती थी।

तो हम घोर अंधेरे में रात 8:30 बजे तक इंतज़ार करते रहे, और फिर कहीं ऊपर की ओर से एक खोखले लट्ठे के पलटने की धीमी आवाज़ सुनाई दी। आखिरकार हाथी चलने लगा और आवाज़ से लग रहा था कि वह लगभग चार-पाँच सौ गज दूर है। फिर पंद्रह मिनट तक सन्नाटा छाया रहा, तभी पास ही से एक शाखा के टूटने की तेज़ आवाज़ आई, जिससे पता चला कि हाथी चर रहा था और साथ ही नदी पार करने की ओर बढ़ रहा था।

मुझे पता था कि उसने अभी-अभी जो शाखा तोड़ी थी, उसके सिरे से नए पत्ते खाने में उसे कम से कम तीस मिनट लगेंगे, ताकि उसके पास आने से पहले काफी समय मिल जाए। नदी के मोड़ से आते समय कार, जिसमें हम बैठे थे, उसे साफ दिखाई देगी, और पूरी संभावना थी कि अगर वह शरारती हाथी नहीं था, तो हमें देखते ही वह चुपचाप जंगल में गायब हो जाएगा। लेकिन मैंने हवा पर ध्यान नहीं दिया था; तभी अचानक तेज़ हवा हमारी तरफ से हाथी की ओर बहने लगी।

कुछ मिनटों तक सन्नाटा छाया रहा, फिर हमें कार के सबसे नज़दीक नदी के किनारे झाड़ियों में हल्की सरसराहट सुनाई दी। यह एक धीमी सी आवाज़ थी, मानो झाड़ियों में किसी छोटे जीव की आवाज़ हो। तभी अचानक कुचले हुए बांस के टूटने की भयानक आवाज़ सुनाई दी। फिर से गहरा सन्नाटा छा गया। मानो हवा भी थम सी गई हो, ताकि अगली घटना के लिए पूरा समय मिल सके।

यह एक दौड़ते हुए नर हाथी की कान फाड़ देने वाली चीख थी, जो बांस और झाड़ियों के ढहने की आवाज़ के साथ मिल गई थी क्योंकि वे हमारी ओर दौड़ते हुए उस विशालकाय हाथी के सामने गिरु पड़े थे।

रंगा ज़रा भी नहीं हिचका! स्पॉटलाइट की किरण घने अंधेरे को चीरती हुई आगे बढ़ी। मेरी टॉर्च की रोशनी, उस कहीं ज़्यादा चमकदार स्पॉटलाइट की रोशनी के साथ मिलकर, एक विशालकाय हाथी को दिखा रही थी, जिसका पूरा शरीर काला था, सूंड ऊपर और अंदर की ओर मुड़ी हुई थी, और उसके दो नुकीले सफेद दांत सिरे पर एक-दूसरे को काटते हुए, हम पर गरजते हुए आ रहे थे!

पचास गज की दूरी से मेरी दाहिनी बैरल से निकली गोली उसके गले में जा लगी। गोली लगते ही वह रुक गया और गुस्से से चीखने लगा। निस्संदेह, यह उसके लिए बहुत भयानक था! धमाके, दर्द और तेज रोशनी ने उसे भ्रमित कर दिया और वह आधा जंगल की ओर मुड़ गया। मेरी दूसरी गोली, जो जल्दबाजी में कनपटी पर चलाई गई थी, उसके सिर के एक तरफ लगी। वह जंगल में भागा, अपने अगले पैरों पर लड़खड़ाया, फिर उठा और जैसे ही मेरी तीसरी गोली उसके शरीर में लगी, वह बांसों में गायब हो गया। लगभग पंद्रह मिनट तक हम जंगल में भारी आवाज़ें सुनते रहे, क्योंकि हाथी लड़खड़ाता, गिरता और फिर उठकर भागता रहता था।

कार स्टार्ट करके, मैंने रिवर्स किया और गेरहेटी लौट आया। उस रात मैं चैन से सोया, रंगा ने सुबह मुझे गरमागरम, कड़क चाय का मग देकर जगाया।

सुबह 6:30 बजे तक हम घायल बदमाश के पीछे-पीछे चल रहे थे। उसके गले के घाव से खून की बड़ी-बड़ी धारें बह रही थीं और उसके धड़ से होकर आसपास की झाड़ियों पर फैल रही थीं, जो उसके गुजरने से लाल हो गई थीं। जल्द ही हम भी उसके खून से लाल हो गए, क्योंकि हम उसके पीछे-पीछे झाड़ियों में से होकर आगे बढ़ रहे थे।

वह कई जगहों पर लेटा हुआ था, या गिर पड़ा था, जहाँ की हरी घास गहरे लाल रंग से रंग गई थी। वह कई पेड़ों के तनों से टिका हुआ था जो अभी भी उसके खून से लथपथ थे। सचमुच, अगर आंप हाथी को मारने का काम पूरा नहीं करते, तो आप अपने लिए एक खूनी राह बना लेते हैं। मुझे इस बेचारे जानवर पर बहुत दया आई, भले ही वह इंसानों का खूंखार हत्यारा था।

दो मील चलने के बाद मैंने उसे एक पेड़ के तने से टिके हुए, आधा घुटने टेके और आधा लेटे हुए पाया। खून की कमी से वह इतना कमजोर हो गया था कि मुश्किल से हिल पा रहा था, हालाँकि मेरी ओर बढ़ते हुए उसने मुझे साफ़ देखा। जीवन का एकमात्र संकेत उसकी छोटी-छोटी खून से लाल आखें थीं, जो मेरी ओर आते देख चमक रही थीं और हिल रही थीं। पंद्रह गज की दूरी से मैंने अंतिम प्रहार करने के लिए अपनी राइफ़ल उठाई। मानो मृत्यु को सलाम करते हुए, वह ताकतवर जानवर सिर से पैर तक कांप उठा और अपने विशाल शरीर को पूरे दस फीट तक सीधा खड़ा कर लिया। सूंड ऊपर की ओर मुड़ गई, बड़े कान बाहर की ओर फड़फड़ाए, और वह अपने अंतिम आक्रमण में दो कदम आगे बढ़ा, तभी 450/400 कैलिबर की भारी गोली उसकी कनपटी पर लगी और वह कुल्हाड़ी से मारे जाने की तरह ज़मीन पर गिर पड़ा।

हालांकि गेरहेटी का 'क्रॉस-टस्कर' एक हत्यारा था, लेकिन वह एक बहादुर योद्धा भी था, और मैंने उसे सम्मान दिया जब वह मेरे अभी भी धुआं उगलते थूथन के सामने पड़ा था - जीवन में शक्तिशाली और अपनी मृत्यु में उससे भी अधिक शक्तिशाली!

पाँच

संगम पैंथर

मेरे बैंगलोर स्थित घर तक यह खबर पहुंची कि एक तेंदुआ, जिसे भारत में आमतौर पर 'पैंथर' के नाम से जाना जाता है, शहर से लगभग सत्तर मील दक्षिण में स्थित संगम नामक स्थान के आसपास लोगों को मार रहा था।

दक्षिण भारत में आदमखोर तेंदुओं का मिलना दुर्लभ है। एक तो, यहाँ के जंगल उत्तर भारत की तुलना में इतने विस्तृत या इतने निरंतर पर्वतीय नहीं हैं, विशेषकर विशाल हिमालय पर्वतमाला की तलहटी में। इसका अपवाद पश्चिमी घाट है, जो लगभग चार सौ मील से अधिक दूरी तक पूरी तरह से जंगलों से ढका हुआ है, जिसकी औसत चौड़ाई दस से पंद्रह मील है। लेकिन अन्य वन क्षेत्र काफी छोटे हैं और लगभग चारों ओर से खेती से घिरे हुए हैं। इस कारण मांसाहारी जानवर, और विशेष रूप से तेंदु, अपना ध्यान मवेशियों और बकरियों के झुंडों तक ही सीमित रखते हैं, जिनमें यह देश प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, और कुछ हद तक गाँव के आवारा कुत्तों पर भी, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'पाईडॉग' कहा जाता है, जो आम बंदरों की तरह ही इस क्षेत्र के लिए अभिशाप हैं। हाइड्रोफोबिया के टीके के आने से पहले, पागल कुत्तों के काटने से होने वाले संक्रमण से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु होती थी, क्योंकि ये आवारा कुत्ते, विशेष रूप से गर्म मौसम में, लगातार रेबीज से संक्रमित होते रहते हैं। बंदर हमेशा से ही एक बड़ा खतरा रहे हैं, जो फसलों और फलों के पेड़ों को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। बंदर का भारतीयों के लिए गहरा धार्मिक महत्व है, और इसे नुकसान पहुँचाने के किसी भी प्रयास का कड़ा विरोध किया जाता है। इसलिए, पैंथर—कम से कम जहां तक 'पाइडॉग' और बंदरों का संबंध है—भूमि की बहुत बड़ी सेवा करते हैं।

पश्चिमी घाट, जिसके बारे में मैंने अभी बात की है, में भारी वर्षा होती है, जो प्रति वर्ष सौ इंच से भी अधिक होती है। यह क्षेत्र घने बांस, लंबी घास और घनी सदाबहार वनस्पतियों से ढका हुआ है—जो मच्छरों, कीड़ों, जोंकों, मक्खियों और अन्य कीट-पतंगों के लिए प्रजनन स्थल हैं।

पैंथर को ज़्यादा पानी पसंद नहीं होता और वे हर तरह के कीटों से घृणा करते हैं! इसलिए, एकमात्र ऐसे क्षेत्र में जहाँ वे बेरोकटोक प्रजनन कर सकते हैं, वे मुश्किल से ही पाए जाते हैं! अतः, प्राकृतिक व्यवस्था के कारण, दक्षिण भारत के अन्य सभी

जंगलों में पाए जाने वाले पैंथरों को आमतौर पर भरपूर भोजन मिलता है और वे किसी तरह नरभक्षी बनने की बुरी आदत से बच जाते हैं। इसका एक उल्लेखनीय अपवाद गुम्मलपुर का पैंथर था, जिसकी कहानी मैंने कहीं और बताई है*; उस मामले में कुछ विशेष परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण उसने नरभक्षी बनना शुरू कर दिया था।

बेंगलोर में अक्सर ऐसी खबरें आती थीं कि लोग तेंदुओं और बाघों के हमले का शिकार हो रहे हैं, जिनमें से ज़्यादातर हमले तेंदुओं द्वारा किए जाते थे। लेकिन इन अफवाहों पर किसी ने खास ध्यान नहीं दिया क्योंकि मौके पर की गई जांच से हमेशा एक ही बात सामने आती थी। कोई ग्रामीण अपनी बंदूक से या कोई अनुभवहीन शिकारी तेंदुओं पर गोलियां चलाता, आमतौर पर छर्रे, और उसे बस घायल कर पाता। फिर, जंगल के नियमों से अनभिज्ञ होकर, वह तेंदुओं का पीछा करने की कोशिश करता, लैंटाना की झाड़ियों या चट्टानों के बीच से, और इस चक्कर में बुरी तरह घायल हो जाता—कभी-कभी तो गंभीर रूप से। बीते वर्षों में, ऐसे हमलों के 75 प्रतिशत से अधिक मामलों में सेप्टीसीमिया से मौत हो जाती थी। सल्फा दवाओं के आने से, मरने वालों की संख्या घटकर 10 प्रतिशत से भी कम हो गई।

इसलिए जब ऐसी खबरें आईं तो किसी ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। भला क्यों देते? उनके पास करने के लिए और भी काम थे। इसके अलावा, भारत में अफवाहें हमेशा बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश की जाती हैं! एक मामूली खरोंच को भी भयानक हमले में बदल दिया जाता है, और मामूली हमले को हत्या बता दिया जाता है। जब वास्तव में कोई हत्या होती है, तो प्रेस में उसे कई हत्याओं के रूप में बताया जाता है।

इसलिए, जब मैंने सुना कि संगम में एक पैंथर ने एक महिला को मार डाला और बाद में एक बच्चे को मारकर खा लिया, तो मुझे विश्वास नहीं हुआ। फिर पैंथर ने तीसरी और चौथी बार भी हत्या की। प्रेस को यह खबर मिली और यह अखबारों के पहले पन्नों पर छाई रही।

बेंगलोर, मैसूर और मद्रास से कई शिकारी उस जानवर का शिकार करने निकले, लेकिन एक महीने तक पैंथर ने किसी को नहीं मारा। एक शिकारी ने पैंथर को मार गिराने में सफलता प्राप्त की; और यह तथ्य, साथ ही मनुष्यों की हत्याओं का रुक जाना, इस बात का संकेत देता प्रतीत हुआ कि जिस पैंथर को मारा गया था वह आदमखोर ही था। शिकारी अपने-अपने शहरों में लौट गए।

फिर पैंथर ने एक बार फिर शिकार किया, लेकिन उसे अपने शिकार को खाने से रोक दिया गया, जो एक आदमी था और एक झोपड़ी जैसे कमरे में चार आवारा कुत्तों के झुंड के साथ सो रहा था, जिनके साथ वह खरगोश और कभी-कभी हिरण का शिकार किया करता था।

शेड के प्रवेश द्वार पर कंटीली बाड़ लगी हुई थी। छत जस्ता की चादरों के ढीले टुकड़ों से बनी थी, और दीवार जमीन में गाड़े गए लकड़ी के खंभों से बनी थी, जिनके बीच के अंतराल कंटीले ...

पैंथर शेड में घुस गया। कुत्ते एक जगह जमा हो गए लेकिन कुछ नहीं किया, और हमलावर उनके पास से गुज़रते हुए उस आदमी का गला पकड़ लिया। एक तीखी चीख के साथ ही उसकी मौत हो गई।

पास की झोपड़ी में रहने वाले लोग शेड में कुत्तों के भौंकने और गुर्राने की आवाज़ से परेशान थे। वे सोच रहे थे कि आखिर क्या हो रहा है, लेकिन कोई भी बाहर जाकर देखने को तैयार नहीं था। तभी पैंथर ने उसी छेद से मरे हुए आदमी को शेड से बाहर खींचने की कोशिश की, जिससे वह अंदर आया था। छेद काफ़ी बड़ा नहीं था। इसलिए पैंथर खुद उसी छेद से अंदर घुस गया और आदमी को अपने पीछे खींचने की कोशिश की। लेकिन शरीर कांटों में फंस गया और अटक गया। फिर पैंथर ने ज़ोर से

धक्का दिया, जिससे बाड़ का संतुलन बिगड़ गया और वह जानवर के ऊपर ज़ोर से गिर पड़ी। इससे वह बहुत डर गया होगा, क्योंकि वह लाश को काँटों में फंसा छोड़कर भाग गया।

पैंथर के लगातार शोरगुल से पास की झोपड़ी में रहने वाले लोग घबरा गए, जो इतनी देर से सांस रोककर सुन रहे थे। वे चिल्लाने लगे और दूसरे ग्रामीणों को जगा दिया। काफी देर बाद, कुछ बहादुर आदमी लालटेन लिए, बंदूकों, लाठियों और डंडों से लैस होकर बाहर आए, तो उन्हें मरा हुआ आदमी तो मिला, लेकिन पैंथर नहीं।

अब फिर से दहशत फैल गई, और मुझे यह खबर गांव के पटेल (मुखिया) ने दी, जो खास तौर पर इसी उद्देश्य से बेंगलोर आए थे। उस समय मुझे दो दिन की आकस्मिक छुट्टी मिल सकती थी, और रविवार को तीसरी छुट्टी मिल जाती थी। इसलिए मैं उनके साथ जाने और उन तीन दिनों के भीतर पैंथर को मारने की कोशिश करने के लिए सहमत हो गया।

संगम जाने वाली सड़क बेंगलोर से छत्तीस मील दूर कंकनहल्ली कस्बे से होकर गुजरती थी, जहाँ से यह कावेरी नदी के तल की ओर तेज़ी से उतरने लगती थी। रास्ते के आखिरी दस मील बेहद खराब थे, और मेरी स्टडबेकर कार इस खराब व्यवहार के विरोध में अपने सभी जोड़ों से ज़ोर-ज़ोर से हिलती, चरमराती और कराहती हुई आवाज़ें निकाल रही थी। बेतुके ढलानों और तीखे कोणों पर बने घुमावदार मोड़ (जहाँ सभी मील के पत्थर और फर्लांग के तख्ते काले रंग से रंगे हुए थे ताकि जंगली हाथी उन्हें उखाड़ न सकें, क्योंकि उन्हें सफेद रंग से सख्त नफरत होती है) मेरी यात्रा के अंत की ओर इशारा कर रहे थे, और जल्द ही एक छोटी लेकिन बेहद कठिन यात्रा के बाद मैं उस छोटे से यात्री बंगले पर पहुँच गया।

'संगम' शब्द का अर्थ 'मिलन' या 'संगम' होता है, और यह सबसे उपयुक्त था, क्योंकि यह कावेरी नदी और उसकी सहायक नदी, अर्कावती नदी के संगम को चिह्नित करता था, जो बेंगलोर के उत्तर में अपने स्रोत से लगभग एक सीधी रेखा में दक्षिण की ओर बहती है।

कावेरी नदी यहाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है, संगम इसके उत्तरी किनारे पर मैसूर राज्य क्षेत्र के भीतर स्थित है। कावेरी का दक्षिणी किनारा उत्तरी कोयंबटूर जिले (कोलेगल वन प्रभाग) के जंगलों में आता है। संगम से लगभग तेरह मील पूर्व में मैसूर राज्य क्षेत्र समाप्त होता है और इसके दोनों ओर सलेम जिला स्थित है, जिसके बाद नदी का उत्तरी किनारा सलेम जिले के अंतर्गत आता है और उत्तरी कोयंबटूर जिला दक्षिणी किनारे पर फैला हुआ है। उत्तरी कोयंबटूर और सलेम दोनों जिले मद्रास प्रेसीडेंसी के अंतर्गत आते हैं।

संगम एक खूबसूरत वन क्षेत्र है, जहाँ सामान्य मौसम में उत्कृष्ट मछली पकड़ने का आनंद लिया जा सकता है। नदी के किनारे रेत के टीलों और चट्टानों के बीच मगरमच्छों का शिकार भी किया जा सकता है। जंगल के मैसूर की ओर चित्तीदार हिरण, सांभर, भौंकने वाला हिरण, जंगली सूअर, पक्षी और कभी-कभार भालू, तेंदुआ या बाघ भी दिखाई देते हैं। हाथी अक्सर कोयंबटूर किनारे से नदी पार करते हैं। दक्षिणी किनारे पर, कोयंबटूर के जंगलों में, ऊपर बताए गए सभी जीव-जंतुओं की संख्या अधिक है, साथ ही बीइसन के कई बड़े झुंड भी पाए जाते हैं। हाथी और भालू विशेष रूप से बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

नदी के किनारे और बंगले के पास उगने वाले विशाल मुट्ठी के पेड़ों के नीचे कार खड़ी करने के बाद, मैं उस छोटे से गाँव की ओर गया जहाँ हाल ही में कुत्ते की देखभाल करने वाले की हत्या हुई थी। मैंने वहाँ जाकर खुद घटनास्थल का मुआयना किया और पड़ोसियों से घटना का विस्तृत ब्योरा सुना, जिन्होंने उस दिन बहुत कुछ

सुना था, लेकिन उस बेचारे की मदद के लिए कुछ नहीं किया था। मेरे साथ लौटे पटेल भी उस कहानी में शामिल हो गए।

बहुत पूछताछ और बहस के बाद यह स्पष्ट हो गया कि इस पैंथर को पकड़ना बेहद मुश्किल होगा, क्योंकि नदी के उत्तरी किनारे पर उसके पास घूमने के लिए जंगल का बहुत बड़ा इलाका था, और दक्षिणी या कोयंबटूर की तरफ फैले कई वर्ग मील के जंगल को तो छोड़ ही दीजिए। लेकिन बाद वाले क्षेत्र को उचित रूप से खारिज किया जा सकता था, क्योंकि बाघों के विपरीत, पैंथर आमतौर पर बड़ी नदियों को तैरकर पार करना पसंद नहीं करते, हालांकि मजबूर होने पर वे अच्छी तरह तैर लेते हैं।

सबसे पहला और जाहिरा तौर पर एकमात्र उपाय चारा लगाना था। पटेल की सक्रिय सहायता से, मैंने पाँच बड़े बछड़े खरीदे। इनमें से पहले को हमने बंगले से लगभग आधा मील पश्चिम में और नदी के किनारे से लगभग उतनी ही दूरी पर बाँधा; दूसरे को नदी के लगभग समानांतर और उससे एक मील पश्चिम में; तीसरे को दूसरे से एक मील पश्चिम में; चौथे को अक्करावर्थी की सहायक नदी के दूर वाले किनारे पर, बंगले से लगभग आधा मील पूर्व में और कावेरी से उतनी ही दूरी पर; और पाँचवें को चौथे चारे से एक मील पूर्व में बाँधा। इस प्रकार पाँचों चारे लगभग एक सीधी रेखा में, नदी के दोनों ओर, लगभग आधा मील अंतर्देशीय थे और पश्चिम में सबसे दूर वाले चारे और पूर्व में सबसे दूर वाले चारे के बीच की दूरी चार मील थी।

बंगले में लौटने से पहले ही सूरज डूब चुका था। ठंडे खाने से मेरी भूख शांत हुई, जिसे मैंने बंगले के छोटे से बरामदे में बैठकर खाया और दो गर्म कप चाय के साथ पिया। अपनी पाइप जलाकर मैं दीवार से पीठ टिकाकर बैठ गया और नदी की धीमी आवाज़ सुनता रहा, जो अपने पथरीले तल पर तेज़ी से बह रही थी। रात काफ़ी अंधेरी और बादलों से घिरी हुई थी। बादलों के बीच से कभी-कभार दिखने वाले तारे रात में तारे देखने के लिए पर्याप्त नहीं थे, इसलिए मैं अंदर चला गया और सो गया।

अगली सुबह हमने चारे की जाँच की। सभी जानवर जीवित थे। मैं उसी सड़क पर चला गया जिससे मैं पिछले दिन आया था, घुमावदार मोड़ों और घाट वाले हिस्से को पार करते हुए। कहीं भी पैंथर के पदचिह्न नहीं दिखे। चित्तीदार हिरणों का एक झुंड और तीन सांभर - अलग-अलग जगहों पर - रात के दौरान सड़क पार कर चुके थे, लेकिन कोई अन्य जानवर नहीं गुजरा था।

बंगले की ओर लौटते समय, सड़क से वापस आने के बजाय, मैं जंगल से होते हुए पहाड़ी से नीचे उतरा और अक्करावंती नदी के सूखे तल पर पहुँच गया। वहाँ से मैं दक्षिण की ओर मुड़ा और रेत में चलते हुए संभावित पदचिह्नों की तलाश करने लगा। कोई पदचिह्न नहीं मिला, लेकिन चित्तीदार हिरणों का वही झुंड जो सड़क पार कर गया था, रेत पर भी चल रहा था। कुछ देर बाद, मैं अपने चौथे शिकार स्थल से गुजरा और उस स्थान पर पहुँचा जहाँ अक्करावती नदी कावेरी नदी से मिलती है।

मेरे पास उपलब्ध तीन दिनों में से डेढ़ दिन बीत चुका था, और मुझे पैंथर के पदचिह्न तक नहीं दिखे थे। स्थिति निराशाजनक लग रही थी।

दोपहर के भोजन के बाद, मैंने पूर्व दिशा में, कावेरी नदी के किनारे-किनारे लगभग साढ़े तीन मील चलने का फैसला किया, जहाँ नदी लगभग बीस फीट तक सकरी हो जाती थी। इस स्थान पर नदी एक गहरी खाई से होकर गर्जना करती हुई बहती थी, जिसे मेके-दात के नाम से जाना जाता है। कन्नड़ भाषा में इस शब्द का अर्थ है 'बकरी की छलांग'। लोककथाओं के अनुसार, वर्षों पहले, कोयंबटूर की ओर जंगली कुत्तों द्वारा पीछा की जा रही एक जंगली भेड़ नदी के किनारे तक पहुँच गई थी, और उसने बीस फीट की छलांग लगाकर मैसूर की ओर अपनी जान बचाई थी।

यहां, संकरे द्वार से होकर बहते हुए अशांत जल की गर्जना में अन्य सभी ध्वनियां दब जाती हैं, और एक आदमी अपनी पूरी ताकत से चिल्लाने पर भी मुश्किल से खुद को सुन पाता है।

मैं चट्टानों के किनारे पर बैठ गया और उफनती, तेज़ बहती नदी को देखता रहा। सौ गज़ दूर, नदी के निचले हिस्से में जहाँ सतह फिर से शांत हो गई थी, कभी-कभार कोई मछली पानी से बाहर उछलती, मानो जीवन के प्रति अपार उमंग और आनंद प्रकट कर रही हो। एक मछली-बाज़ साफ़ नीले आसमान में चक्कर लगा रहा था। थोड़ी देर बाद, मैं उठा और बंगले की ओर वापस चल दिया। मुझे अभी तक किसी पैंथर के पदचिह्न नहीं मिले थे।

रात आसमान साफ़ था। हालांकि चांद नहीं था, लेकिन पिछली रात के बादल भी नहीं थे और जंगल में तारों की रोशनी इतनी थी कि कुछ गज़ तक देखा जा सके।

बंगले के चौकीदार के पास एक 'पाइडॉग' (भारत में देसी कुत्तों को इसी नाम से जाना जाता है) था, और अपनी आदत के विपरीत और समय की कमी के कारण, मैंने उससे आधी रात तक उसे उधार देने का अनुरोध किया। पहले तो उसने आनाकानी की, लेकिन तीन रुपये के लेन-देन के बाद वह मान गया।

उस दिन सड़क पर चलते हुए, मेरी नज़र लगभग एक मील दूर, उसके किनारे पर पड़ी एक चट्टान पर पड़ी। मैंने कुत्ते को लिया, उसे चट्टान के नीचे बाँधा और सड़क पर आगे बढ़ गया। कुत्ते की नज़र से ओझल होते ही, मैं दाईं ओर मुड़ा और जंगल में घुस गया, फिर चट्टान के दूसरी तरफ़ पहुँच गया। चुपचाप मैं ऊपर चढ़ गया और उसके शिखर पर लेट गया। चट्टान अभी भी धूप से गर्म थी, जो दिन भर उस पर पड़ती रही थी।

यह सोचकर कि उसे छोड़ दिया गया है, कुत्ता बारी-बारी से भौंकने, रोने और चिल्लाने लगा। कुत्ते बहुत बुद्धिमान होते हैं, उन्हें चारा बनाकर बांधना अनुचित है। गायों और बकरियों के विपरीत, वे खतरे को तुरंत भांप लेते हैं और, भले ही उन पर हमला न हो, घंटों मानसिक पीड़ा झेलते हैं। मैं एक ऐसे कुत्ते को जानता हूँ जिसे एक पैंथर के लिए चारा बनाकर बांधा गया था—हालाँकि उसे कोई नुकसान नहीं हुआ—वह इतना घबरा गया कि अगले दिन बीमार पड़ गया और एक हफ्ते के भीतर मर गया।

मैं चट्टान की चोटी से देख रहा था। लगभग एक घंटा बीत गया, और फिर अचानक एक धुंधली, धूसर आकृति सड़क पर तेजी से दौड़ती हुई आई। वह कुत्ते से लगभग दस फीट की दूरी तक तेजी से दौड़ी, फिर रुक गई। क्या यह पैंथर हो सकता है?

तारों की रोशनी इतनी ही थी कि अंधेरा पूरी तरह से न छाए, उससे ज़्यादा नहीं। मुझे धुंधली सी एक आकृति कुत्ते को घूरती हुई दिखाई दी। कुत्ता गुर्राया और घुसपैठिए की ओर मुड़ गया। मैंने सोचा, ज़रूर कोई पैंथर होगा, और मैंने अपनी राइफल का निशाना उसकी ओर साध लिया, ताकि बैरल पर लगी टॉर्च का स्विच दबा सकूँ।

घुसपैठिए ने 'हा! हा! हा! हा! हा!' कहा, और उसके बाद अपमानजनक लेकिन तेज़ आवाज़ में 'ची! शी-ए! शी-ए!' की आवाज़ आई।

यह एक लकड़बग्घा था, दक्षिण भारत का आम धारीदार लकड़बग्घा। कुत्ता और भी भयंकर रूप से गुर्राया; फिर उन्माद में भौंकने लगा।

अब एक मनोरंजक नाटक शुरू हुआ, जैसा कि रात में जंगल में पहरा देने वालों को कभी-कभार देखने का सौभाग्य मिलता है। लकड़बग्घा सड़क से हटकर झाड़ियों

में घुस गया, जहाँ वह 'गुड्डा! गुद्दार! गरार! गुर-र-आ!' कहने लगा और अंत में अपनी आदत के अनुसार 'ची-ऑर! शी-आर!' कहने लगा।

कुत्ते ने शोर की ओर मुँह किया और ज़ोर से भौंका। लकड़बग्घा सड़क पर फिर से प्रकट हुआ, कुत्ते से थोड़ा आगे, लेकिन उसे देखता हुआ, और कर्कश आवाज़ में बोला, 'हा! हा! हो! गुड्डर! गरार! शी-ए!'

अपने अफ्रीकी रिश्तेदारों, चित्तीदार और भूरे लकड़बग्घे के विपरीत, जिनमें से चित्तीदार लकड़बग्घा वही जाना-पहचाना 'हंसने वाला लकड़बग्घा' है जिसके बारे में हम सबने सुना है, भारतीय लकड़बग्घा आमतौर पर शांत स्वभाव का जानवर होता है, जो अकेले या ज़्यादा से ज़्यादा जोड़े में शिकार करता है। चित्तीदार लकड़बग्घे झुंड में चलते हैं। आम तौर पर, सभी लकड़बग्घे डरपोक जानवर होते हैं, हालांकि वे अपने आकार के हिसाब से बेहद ताकतवर होते हैं और उनके जबड़े इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे आसानी से किसी आदमी की बांह, हड्डी समेत, काट सकते हैं।

बहुत कम ही ऐसा होता है कि वे असाधारण साहस का प्रदर्शन करते हैं, जिसका एक उदाहरण मैंने एक बार देखा था। मैं एक पैंथर के शिकार के पास बैठा था। तभी उसका मालिक आया और खाने लगा। मैंने गोली नहीं चलाई, क्योंकि मैं उसे मारने से पहले उसका लिंग जानना चाहता था। मुझे बताया गया था कि आस-पास एक नर और एक मादा पैंथर रहते हैं, और मादा के साथ लगभग छह महीने के दो शावक भी हैं। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मैं गलती से माँ को गोली न मार दूं।

जब मैं हिचकिचा रहा था, तभी एक लकड़बग्घा वहाँ आ गया, और उसका आना उस समय बहुत ही नाटकीय था। वह मानो कहीं से अचानक आ गया हो, और मुझे उसके आने का पता तब चला जब वह उसी तरह की आवाज़ें निकालते हुए, बेखौफ़ होकर पैंथर के पास दौड़ा, जैसा मैंने अभी बताया है। अपने शिकार पर लेटा हुआ पैंथर, जलती हुई आँखों से उस नए आने वाले को घूर रहा था, और भयंकर गुर्रा रहा था। लकड़बग्घा पैंथर की पहुँच से बस पांच फीट की दूरी पर आ गया, और उसने इतनी भयानक आवाज़ें निकालीं कि मानो नरक के राक्षसों का समूह चिल्ला रहा हो।

पैंथर और भी ज़ोर से गुर्राकर शोर बढ़ा रहा था, और बीच-बीच में अपने पंजों से लकड़बग्घे पर वार कर रहा था। लकड़बग्घा हर वार से बचकर पीछे हट जाता, फिर तेज़ी से आगे बढ़कर पैंथर के पीछे पहुँचने की कोशिश करता। पहले तो पैंथर भी लकड़बग्घे को देखते हुए पीछे मुड़ता, और भी ज़ोर से गुर्राते हुए अपने पंजों से लकड़बग्घे की तरफ़ छोटे-छोटे वार और थप्पड़ मारता। लेकिन लकड़बग्घा हमेशा उसकी पहुँच से बाहर रहता, और लगातार जोश से चीखता-चिल्लाता, गुर्राता और घुरघुराता रहता।

उस अशोभनीय शोर से भयभीत—या शायद घृणा से—तेंदुए ने अंततः अपने शिकार से उठकर धीरे-धीरे पीछे मुड़कर कई बार गुर्राते हुए लकड़बग्घे की ओर चलना शुरू किया। लकड़बग्घा तब तक अपना अजीब शोर मचाता रहा जब तक कि वे घने के झाड़ियों में गायब नहीं हो गया। फिर वे स्वयं भी बड़े उत्साह से—और निस्संदेह, पूरी तरह से उचित उत्साह से—शिकार पर टूट पड़े।

लेकिन जिस लकड़बग्घे को मैं चट्टान से देखता रहा, वह निस्संदेह उस आवारा कुत्ते से थोड़ा डरा हुआ था। वह अक्सर सड़क के एक या दूसरे किनारे गायब हो जाता था। फिर सूखी पत्तियों के बीच से उसकी हल्की फुहार सुनाई देती, जब वह इधर-उधर, अलग-अलग जगहों पर लौट आता और अपनी अटपटी, विचित्र और अक्सर हास्यास्पद आवाजें निकालता रहता।

इन दो अनुभवों से मैंने यह सीखा कि लकड़बग्घे अपनी लगातार, कर्कश आवाज से अपने विरोधियों को डराने की कोशिश करते हैं। पहले लकड़बग्घे ने तेंदुए को उसके शिकार से भगा दिया था, जबकि दूसरा लकड़बग्घा कुत्ते को डराने की कोशिश कर रहा था, शायद उसे सड़क से हटाने या झाड़ियों में धकेलने के लिए, जहाँ से वह उस पर आसानी से झपट्टा मार सके।

लेकिन कुत्ता बंधा हुआ था, इसलिए हिल नहीं पा रहा था, जो लकड़बग्घे को समझ नहीं आया। एक घंटे तक इस तरह का शोर मचाना मेरे लिए मनोरंजक नहीं रहा, और मुझे एहसास हुआ कि यह शोर, खासकर लकड़बग्घे की वजह से, आसपास के किसी भी पैंथर को, चाहे वह आदमखोर हो या कोई और, भगा देगा। इसलिए, एक छोटा सा पत्थर ढूंढकर, मैंने उसे लकड़बग्घे पर फेंका। मेरा निशाना चूक गया, और पत्थर सड़क की सख्त सतह पर ज़ोर से गिरा। लकड़बग्घा घबराकर उछल पड़ा और झाड़ियों में भाग गया, जबकि कुत्ता भौंकना बंद करके धीरे-धीरे रोने लगा। मुझे लगा कि मैंने एक अवांछित मेहमान को वहां से भगा दिया है।

लगभग पंद्रह मिनट बीत चुके थे कि मुझे फिर से दबी-दबी टप-टप की आवाज़ सुनाई दी, जिसके तुरंत बाद लकड़बग्घे की अजीब आवाज़ें आईं। कुत्ता भौंका और गुर्राया। मैंने लकड़बग्घे पर एक और पत्थर फेंका। वह रुका; लेकिन दस मिनट बाद फिर से शुरू हो गया। एक बार फिर पत्थर; एक बार फिर सन्नाटा, फिर एक नई शुरुआत। लगभग पाँचवें पत्थर के बाद ही लकड़बग्घे को लगा कि वह जगह किसी तरह अस्वस्थ हो गई है, और आखिरी बार 'आह! आह! आह! ची-ई! शी-ए!' कहते हुए वह वहाँ से चला गया। दस बज चुके थे।

मेरी घड़ी में आधी रात होने में पाँच मिनट बाकी थे, तभी मुझे इंसानों की आवाज़ें सुनाई दीं। थोड़ी देर बाद, मैंने दो लालटेन की टिमटिमाती रोशनी देखी, जो दूर से कई आदमियों के कदमों को रोशन कर रही थी। कुत्ते ने उन्हें देखा और उसका कराहना बंद हो गया।

जब दल कुत्ते के पास पहुंचा, तो मैंने ग्यारह आदमियों को गिना, जिनमें से दो लालटेन लिए हुए थे, और एक को छोड़कर बाकी सभी किसी न किसी प्रकार के डंडे और लाठी लिए हुए थे।

उनमें से एक अपवाद था जिसके पास बंदूक थी। जाहिर है वे मेरी ही तलाश में आए थे। मैंने उनकी आवाज़ सुनी और चट्टान से नीचे उतर आया।

फिर उन लोगों ने मुझे बताया कि लगभग एक घंटे पहले ही, पैंथर उसी गाँव की एक झोपड़ी में घुस गया था जहाँ कुत्ते के रखवाले पर हमला हुआ था। उसने छप्पर की दीवार में छेद करके अंदर प्रवेश किया और सो रही पाँच महिलाओं में से एक, लगभग पच्चीस साल की एक महिला को पकड़ लिया। जब उसे घसीटकर ले जाया जा रहा था, तो वह ज़ोर से चीखी, जिससे कमरे में मौजूद अन्य चार लोग, उसके पिता, दो भाई और माँ, जाग गए।

इसी बीच, पैंथर उस छप्पर में बने छेद से लड़की को बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था जिससे वह अंदर आया था। लड़की ने ज़ोरदार संघर्ष किया। पैंथर ने उसे छोड़ दिया और बेरहमी से काट लिया। भाइयों में से एक ने झोपड़ी के अंदर के अंधेरे को दूर करने के लिए माचिस जलाई। उसके पिता ने सराहनीय साहस और सूझबूझ दिखाते हुए, अपने हाथ में आए एकमात्र हथियार को पैंथर पर फेंक दिया। वह हथियार पीतल का एक भारी पानी का घड़ा था, जो पैंथर के बगल में ज़ोर से लगा। आदमखोर जानवर, चाहे बाघ हो या पैंथर, स्वभाव से हमेशा थोड़े डरपोक होते हैं और यह पैंथर भी इसका अपवाद नहीं था। अपने शिकार को छोड़कर, वह छप्पर में बने छेद से झोपड़ी से बाहर निकल गया।

घायल महिला की चीख-पुकार और चारों ओर मची अफरा-तफरी ने पूरे गांव को जगा दिया था। पुरुष लालटेनें लेकर, जितना हो सके उतने हथियारों से लैस होकर बाहर आए। ग्यारह लोगों का दल मुझे ढूंढने के लिए विश्रामगृह आया था, और जिस चौकीदार से मैंने कुत्ता उधार लिया था, उसने उन्हें उस जगह का रास्ता बताया जहां मैं बैठा था।

मैंने एक आदमी को रस्सी खोलने और कुत्ते को साथ लाने के लिए कहा और जल्दी से बंगले की ओर वापस भागा। मैंने स्टेशनवैगन की पिछली सीट से अपनी प्राथमिक चिकित्सा किट निकाली। फिर हम गाँव की ओर तेज़ी से बढ़े, जहाँ एक भयानक दृश्य मेरा इंतज़ार कर रहा था। बेचारी लड़की के दाहिने कंधे पर चीं-चीं का घाव था, और फिर पेट पर भी, जहाँ पैंथर ने उसे दूसरी बार तब पकड़ा था जब वह भागने की कोशिश कर रही थी। उसका एक स्तन और छाती का पूरा हिस्सा चीर-फाड़ गया था, जहाँ उसके गंदे पंजों ने उसके मांस में गहरे धंसकर उसे बुरी तरह से घायल कर दिया था। उसकी जैकेट और साड़ी टुकड़े-टुकड़े हो गई थी, और वह खून से लथपथ पड़ी थी, अपने इस भयानक अनुभव के बाद वह बेहोश पड़ी थी।

मैंने तुरंत समझ लिया कि मेरे पास जो थोड़ी-बहुत प्राथमिक चिकित्सा सामग्री थी, वह इस स्थिति के लिए बिल्कुल अपर्याप्त थी, लेकिन हमने जल्दी से पोटेशियम परमैंगनेट के गाढ़े घोल से घावों को धोया और दूसरी साड़ी से फाड़ी गई पट्टियों से उसके सीने और पेट पर पट्टी बाँध दी। उसके पिता, दो भाई और गाँव के तीन मददगार पुरुषों ने उसे रस्सी से बने पलंग पर लिटाकर स्टेशनवैगन गाड़ी तक पहुँचाया। उसे जितना हो सके आराम से लिटाकर, मैंने उसके तीन पुरुष रिश्तेदारों को गाड़ी में बिठाया और कंकनहल्ली कस्बे के लिए रवाना हो गया, जहाँ पास का ही गाँव का अस्पताल था। हम सुबह साढ़े तीन बजे के बाद वहाँ पहुँचे, जहाँ मैंने डॉक्टर को जगाया और घायल महिला को उनके हवाले कर दिया। बहुत अधिक खून बह जाने के कारण उसकी हालत बहुत खराब लग रही थी।

साढ़े चार बजे तक मैं कंकनहल्ली स्थित यात्री बंगले के बाथरूम में था, जहाँ मैंने अपने खून से सने कपड़े उतारे और ठंडे पानी से स्नान किया। मेरे पास बदलने के लिए कपड़े नहीं थे, क्योंकि उस समय की अफरा-तफरी में मैं उन्हें संगम पर ही छोड़ आया था। इसलिए मैंने बंगले के वेटर से एक साफ धोती और एक कंबल उधार लिया।

भोर होने वाली थी जब मैंने डाकघर का दरवाजा खटखटाया, एक अत्यंत विनम्र पोस्टमास्टर को उसकी नींद से जगाया, आवश्यक विलंब शुल्क का भुगतान किया और बैंगलोर को एक तत्काल टेलीग्राम भेजकर चार और दिनों के लिए छुट्टी बढ़ाने का अनुरोध किया।

जब मैं बंगले पर लौटा तो घायल महिला का छोटा भाई रोते हुए मेरा इंतज़ार कर रहा था। वह अस्पताल से आया था और मुझे बताया था कि उसकी बहन का अभी-अभी निधन हो गया है। कुछ देर बाद, पिता आकर मुझसे अपनी बेटी के शव को कार में बिठाकर संगम ले जाने के लिए कहने लगा, जहाँ कावेरी नदी के किनारे उसका अंतिम संस्कार किया जाएगा और अंत में उसकी राख नदी में बिखेर दी जाएगी। यह एक ऐसा अनुरोध था जिसे मैं मना नहीं कर सका। बंगले के नौकर ने मुझसे कहा कि उसे अपनी धोती और कंबल वापस चाहिए। इसलिए मुझे अपने खून से सने कपड़े दोबारा पहनने पड़े।

हम वापस अस्पताल गए, लड़की के बेजान शरीर को पिछली सीट पर रखा और संगम के लिए अपनी वापसी यात्रा शुरू की, पुलिस स्टेशन में दो घंटे की देरी हुई, जहां हमने घटना की रिपोर्ट दर्ज कराई।

नदी के किनारे एक शांत तालाब में मगरमच्छों से मुक्त स्नान करने, ताज़े कपड़े बदलने, ठंडा दोपहर का भोजन करने और चाय के दो बड़े मग पीने के बाद, मैं एक जर्जर पुरानी कुर्सी पर लेटकर स्थिति का जायज़ा लेने लगा। मेरी भरी हुई पाइप, जिससे निकलता सुकून देने वाला धुआँ खुरदरी टाइलों वाली नीची छत की ओर घुमावदार तरीके से उठ रहा था, पिछली रात की घटनाओं के बाद मेरे तनाव को काफी हद तक कम करने और नींद से आँखें बंद होने से रोकने में सहायक रही।

मेरे पास बचे हुए चार दिन और पाँच रातों में मैं क्या करूँ, ताकि इन बेचारे गाँव वालों को बार-बार होने वाली इन भयानक घटनाओं से बचा सकूँ? तथ्यों से यही संकेत मिलता था कि: (1) पैंथर जानवरों का चारा नहीं खाता, (2) उसके पास छिपने के लिए बहुत जगह है, और (3) वह लोगों को झोपड़ियों से बाहर खींच लाने के लिए प्रवृत्त रहता है। फिर, सोचते-सोचते मुझे नींद आ गई।

दोपहर 3 बजे मेरी नींद खुली और सोते समय मुझे एक संभावित कार्ययोजना सूझी। वह यह थी:

संगम नाम का छोटा सा गाँव, जिसमें लगभग एक दर्जन झोपड़ियाँ थीं, एक केंद्रीय गली के दोनों ओर सामान्य ढंग से बसा हुआ था। मुझे याद आया कि इस गली के दक्षिणी किनारे पर, नदी के तट से कुछ ही दूरी पर, ग्रामीणों के मवेशियों के छोटे-छोटे झुंड एक साझा बाड़े में रखे जाते थे, जो बाँस की बाड़ से घिरा हुआ था और बीच-बीच में कटी हुई लैंटाना की झाड़ियाँ लगी हुई थीं। गाँव में बचे हुए इकलौते कुत्ते, जो मारे गए व्यक्ति के थे, उस झोपड़ी जैसे कमरे में बंद थे जहाँ उसकी हत्या हुई थी, और वह कमरा पश्चिमी तरफ़ बड़े मवेशी बाड़े से सटा हुआ था। मेरे मन में यह विचार आया कि अगर मैं रात में मवेशियों के बीच छिप जाऊँ, तो न केवल मैं अचानक हमले से पूरी तरह सुरक्षित रहूँगा, क्योंकि अगर पैंथर पास आएगा तो मवेशी बेचैन होकर पर्याप्त चेतावनी देंगे, बल्कि यह बेचैनी और कुत्तों का भी खतरे की घंटी बजाना, मुझे पैंथर की उपस्थिति का पता लगाने में मदद करेगा, अगर वह गाँव में प्रवेश करता है। इस बीच, मैं अपने पांच जीवित चारे बांधकर रखूंगा, इस उम्मीद में कि शायद उनमें से कोई एक मछली पकड़ ले।

इस योजना को ध्यान में रखते हुए, मैंने रात के लिए गर्म कपड़े पहने और ओस से बचने के लिए खाकी ऊनी 'बालाक्लावा' टोपी पहनी। मेरे सामान्य रात्रिकालीन सामान में इस बार चाय का एक बड़ा थर्मस, कुछ बिस्कुट और मेरा पाइप शामिल था, क्योंकि मुझे पता था कि इस स्थिति में धूम्रपान करने से कोई नुकसान नहीं होगा।

पैंथर की मौजूदगी के कारण, गाँव वाले सुबह छह बजे से काफ़ी पहले ही अपनी झोपड़ियों के अंदर चले गए थे, दरवाजों को ताज़े कटे कांटों से बंद कर दिया था। मैंने मवेशी बाड़े के बीचोंबीच अपनी जगह ले ली। मेरे चारों ओर लगभग पचास गज का क्षेत्र था, जिसमें लगभग सौ साधारण दिखने वाले मवेशी इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

पहले तो जानवरों को मेरी मौजूदगी से चिढ़ हुई और वे मुझसे दूर कोनों में जमा हो गए, जिससे मैं बाड़े के बीचोंबीच अकेला रह गया। मैंने उनसे दोस्ती करने की कोशिश शुरू की। एक जानवर ने मेरी चाय की थर्मस को लात मारकर गिरा दिया और लगभग तोड़ ही दी! इसके अलावा, कुछ बैल काफी आक्रामक थे और अगर मैं उनके बहुत करीब जाता तो वे अपने सींगों से मुझ पर वार करते। एक घंटे साथ बिताने के बाद, स्थिति थोड़ी शांत हुई और मैं धीरे-धीरे झुंड के बीचोंबीच पहुंच गया, जहाँ लगभग आधे जानवर ज़मीन पर आराम कर रहे थे। मैं भी नीचे बैठ गया।

जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, सन्नाटा बना रहा, सिवाय कभी-कभार किसी जानवर की हल्की सी आवाज़ या किसी दूसरे जानवर के हिलने-डुलने की आहट के। एक

गाय मुझसे घुलामेल गई और दोस्ती जताने के लिए अपना थूथन मेरी छाती से रगड़ने लगी। आखिरकार वह संतुष्टि से मेरे बगल में ज़मीन पर लेट गई।

फिर मवेशियों के कीड़े मुझे कई जगहों पर बेरहमी से काटने लगे। मैंने खुद को ज़ोर से खुजलाया, हालाँकि मुझे पता था कि ऐसा करने से जलन और बढ़ जाएगी। ठंड बढ़ती गई, और जल्द ही मुझे उस गाय के गर्म शरीर से सटकर आराम करने में खुशी हुई, जिसने मेरे साथ यह अजीब दोस्ती शुरू की थी। बीच-बीच में झुंड की कोई गाय संतुष्टि से 'मूं' करती, या फुफकारती, या लात मारती, या ज़मीन पर गिर जाती, या फिर उठने की कोशिश करती।

समय धीरे-धीरे बीत रहा था और कीड़े काट रहे थे। दोपहर एक बजे गाँव के उत्तर में स्थित छोटी पहाड़ी पर एक सांभर ने आवाज़ लगाई। यह एक हिरणी थी जिसने पुकार लगाई थी, और वह बार-बार पुकार रही थी। फिर उसकी आवाज़ एक ककार की आवाज़ में गूंज उठी, जिसकी ककर्श आवाज़ पहाड़ी की निचली ढलानों पर बनी नालियों में गूंज रही थी।

इस समय तक सांभर हिरणी ने आवाज निकालना बंद कर दिया था, जबकि काकर पक्षी ऊपर चढ़ रहा था और बीच-बीच में ककर्श आवाज निकाल रहा था। जिस भी चीज ने उन्हें डराया था, वह पहाड़ी से नीचे आ गई थी।

लगभग बीस मिनट बाद, पहाड़ी की तलहटी से नदी के किनारे तक फैले जंगल में चित्तीदार हिरणों ने एक-दूसरे को चेतावनी भरी आवाजें निकालकर पुकारना शुरू कर दिया। या तो कोई बाघ या कोई तेंदुआ आसपास था, और अगले कुछ मिनटों में पता चल जाता कि वह मांसाहारी जानवर सिर्फ एक सामान्य प्राणी था या वह खूंखार शिकारी जिसका मैं इंतजार कर रहा था।

लगभग घोर अंधेरा हो चुका था जब मवेशी बेचैन हो गए। ज़मीन पर लेटे हुए सभी मवेशी एक साथ उठ खड़े हुए, और मैंने भी ऐसा ही किया, उस मिलनसार गाय के पास ही रहा। कुछ बैलों ने हिनहिनाहट की, और पूरा झुंड उस गली की ओर मुड़ गया जो छोटे से गाँव को दो भागों में बाँटती थी और मवेशियों के बाड़े की सीमा पर बनी कंटीली झाड़ियों के पास से गुज़रती थी।

जानवर बहुत बेचैन हो गए और बाड़े के दूसरे छोर पर, झाड़ियों और गली से दूर, झुंड बनाकर इकट्ठा होने लगे। पास के शेड में मौजूद चारों कुत्ते पहले ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहे थे; अब वे धीरे-धीरे रोने लगे। जो भी चीज़ उन्हें डरा रही थी, वह ठीक उसी समय उस गली से गुज़र रही थी।

मैं मवेशियों के बीचोंबीच फंस गया था और मुझे बहुत सावधानी बरतनी पड़ रही थी ताकि कहीं मेरे चारों ओर फड़फड़ाते हुए कई सींगों में से किसी एक से मेरा सिर न टकरा जाए। मैंने झुंड के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे की पंक्ति तक पहुंचने की कोशिश शुरू की, इस उम्मीद में कि शायद मुझे कुछ दिखाई दे, लेकिन अँधेरा और झाड़ियाँ कुछ भी नहीं दिखा रही थीं।

मुझे उस शेड में बंद कुत्तों के भौंकने और कराहने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मेरे कान हल्की से हल्की आवाज़ भी पकड़ लेते थे, लेकिन मवेशियों और कुत्तों के शोर में मुझे कुछ भी सुनने का मौका नहीं मिल रहा था। कुछ मिनट बाद, मुझे खरोंचने की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। ध्यान से सुनने पर मुझे पता चला कि यह आवाज़ गली में थोड़ी दूर से आ रही है। आवाज़ तेज़ और बेचैन होती गई। तभी मुझे एहसास हुआ कि पैंथर कुछ दूरी पर बनी एक झोपड़ी के दरवाजे को खरोंच रहा था।

मवेशियों के झुंड को चीरते हुए, मैं दबे पांव बाड़ के पास पहुंचा, इस उम्मीद में कि राइफल की टॉर्च जलाते ही मुझे पैंथर की एक झलक मिल जाएगी। जिस झोपड़ी

में पैंथर खुजली कर रहा था, उसमें रहने वाले लोग ठीक उसी क्षण चीख-पुकार मचाने लगे; सन्नाटा भयानक शोर से टूट गया।

मुझे लगा कि आदमखोर झोपड़ी में घुसने में कामयाब हो गया है, इसलिए मैंने सब कुछ भूलकर बाँस और काँटों से बने उस दरवाज़े की ओर दौड़ लगाई जो किलेबंदी का प्रवेश द्वार था। शाम ढलते ही मैंने एक विशाल Y-आकार का लट्ठा मज़बूती से वहाँ फंसा दिया था, और उसे बड़े-बड़े पत्थरों से निकालने में मुझे कुछ कीमती पल लग गए।

मैंने उसे एक तरफ खींचकर टॉर्च जलाई, उस भारी-भरकम दरवाजे को वापस धकेला और गली में कदम रखा। चारों ओर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

पीछे से होने वाले हमले से बचने के लिए मैंने अपनी पीठ कंटीली बाड़ की ओर कर ली और चारों दिशाओं में प्रकाश की किरणें डालीं, लेकिन फिर भी मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। पैंथर हवा में गायब हो गया था। इस बीच, चीखें और चिल्लाहटें लगातार जारी रहीं।

फिर मुझे यह ख्याल आया कि शायद पैंथर इतने समय से झोपड़ी के अंदर ही था, वहां रहने वालों पर हमला कर रहा था और उन्हें मार रहा था, और इस खतरनाक विचार को ध्यान में रखते हुए मैंने बीच के बीस गज की दूरी को सावधानीपूर्वक तय करना शुरू कर दिया।

जब मैं प्रवेश द्वार के पास पहुँचा, तो देखा कि वह कसकर बंद था। मैंने कैदियों को आवाज़ दी। पहले तो शोरगुल के कारण वे मुझे सुन नहीं पाए। फिर मैंने और ज़ोर से, कई बार आवाज़ दी। तब जाकर शोरगुल धीरे-धीरे कम हुआ।

मैंने अंदर रहने वालों को दरवाजा खोलने के लिए चिल्लाकर कहा। उन्होंने दरवाजा नहीं खोला। तभी अंदर से एक भयानक आवाज़ आई, जिसने पूछा कि मैं इंसान हूँ या शैतान? मैंने जवाब दिया कि मैं ही हूँ और पैंथर जा चुका है। आवाज़ ने कहा कि अंदर रहने वाले सुबह होने पर ही दरवाजा खोलेंगे। इसी बीच, मेरी टॉर्च की रोशनी से झोपड़ी के दरवाजे पर ताज़े पंजे के निशान साफ दिखाई दे रहे थे, जहाँ से पैंथर ने अभी-अभी अंदर घुसने की कोशिश की थी।

मैं बाड़े में वापस लौटा, दरवाजा दोबारा बंद किया, वाई-आकार के लट्ठे और पत्थरों को वापस अपनी जगह पर रखा और उस जगह पर वापस चला गया जहां अलार्म बजने के समय मैं गाय के सहारे लेटा हुआ था।

मुझे यह देखकर बहुत दुख हुआ कि झुंड के जानवरों के पैरों की आवाज़ से मेरा थर्मस टूट गया था और अब मैं वो गर्म चाय नहीं पी सकता था जिसकी मुझे बहुत चाह थी। मेरे बिस्कुट भी चट हो गए थे, और जब मैं दुखी मन से उस गाय को देख रहा था, तो उसने बिस्कुटों में लिपटे कागज़ का आखिरी टुकड़ा भी खा लिया। सौभाग्य से, मैंने अपनी पाइप और तंबाकू जेब में रखी हुई थी, और इसी के सहारे मैंने बाकी रात आराम से बिताई, एक बार फिर गाय के पास सटकर।

मैं भोर होते ही बंगले पर थका-हारा और निराश होकर लौटा। सबसे बुरी बात यह थी कि मेरा पूरा शरीर जूँ के काटने से भरा हुआ था और उसमें भयानक खुजली हो रही थी। इसके अलावा, मुझे यह भी अच्छी तरह पता था कि अगले दस दिनों में हर घाव में मवाद भर जाएगा और मुझे बहुत असहज समय से गुजरना पड़ेगा।

ठंडे पानी से नहाने और कपड़े बदलने के बाद, गर्म चाय, डिब्बाबंद बेकन और ब्रेड-बटर ने मेरी उदासी को कुछ हद तक कम किया और सुबह 7:30 बजे तक मैं सो गया। दोपहर के भोजन के लिए उठा और फिर दोपहर 3 बजे तक सो गया। उसके बाद मैं उठा और एक नई योजना बनाने लगा।

मवेशियों के साथ दोबारा बैठना नामुमकिन था, क्योंकि अगर पिछली रात की तरह मुझे फिर से उतने ही कीड़े काट लेते, तो मुझे कीड़े के काटने से होने वाला बुखार हो सकता था। फिर भी, यह बात निर्विवाद थी कि जंब पैंथर गली से गुजरा था, तब मवेशियों और कुत्तों दोनों ने मुझे सचेत करने में सराहनीय मदद की थी।

अंततः मुझे एक नया विचार आया, जो इस स्थिति में एकमात्र समाधान प्रतीत हुआ। कुत्ते के बाड़े की छत जस्ता की चादरों के टुकड़ों से बनी थी। मैंने तय किया कि मैं उस छत पर लेट जाऊँगा, अच्छी तरह से छुपकर और गली की ओर देखते हुए, ताकि अगर पैंथर फिर से गली से गुजरे तो मैं उसे गोली मार सकूँ। मवेशी और कुत्ते भी अलार्म बजाकर मेरी मदद करेंगे। मैं छत पर कटे हुए कांटों के ढेर लगाकर अपनी पीठ और दोनों किनारों की रक्षा कर सकता था। पैंथर जैसा कोई भी भारी शरीर, जो जस्ता की छत पर कूदेगा, उसके बाद होने वाले शोर से उसकी उपस्थिति का पता अवश्य चल जाएगा। यह न केवल एकमात्र समाधान प्रतीत हुआ, बल्कि वास्तव में समस्या का एक अच्छा समाधान भी था।

इसलिए मैं अपना रात्रिकालीन सामान, बिस्कुट और चाय (जो मैंने बंगुले के चौकीदार से उधार ली हुई एक खाली बीयर की बोतल में डाली थी) लेकर गाँव की ओर तेज़ी से चल पड़ा। गाँव वालों को अपनी नई योजना बताने के बाद, कुछ इच्छुक लोगों ने बकरी के बाड़े की जस्ता की छत पर काँटेदार टहनियों के ढेर चौकोर आकार में लगा दिए। कुछ अन्य लोग सूखी घास लाए, जिसे उन्होंने मेरे लेटने के लिए काँटेदार टहनियों के चौकोर ढेर के अंदर छत पर बिछा दिया।

शाम 6 बजे मैंने अपनी जगह ले ली। दो कमियाँ लगभग तुरंत ही सामने आने लगीं: पहली, गली की ओर मुँह करके लेटना पड़ता था, इसलिए मुझे इस तरह लेटना पड़ता था कि मेरे पैर मेरे सिर से थोड़े ऊँचे हों, क्योंकि जस्ता की छत पीछे से आगे की ओर थोड़ी ढलान वाली थी, ताकि बारिश का पानी आसानी से बह जाए; दूसरी, मुझे ज़्यादातर समय पेट के बल लेटना पड़ता था, क्योंकि मेरी ज़रा सी भी हरकत जस्ता की छत पर साफ़ सुनाई देती थी। लेकिन फ़ायदे ये थे कि मैं पीछे से होने वाले अचानक हमले से सुरक्षित था; मुझे गली का साफ़ और निर्बाध दृश्य दिखाई देता था और मैं विशेष रूप से मवेशियों या कुत्तों के बेचैन होने पर उनकी आवाज़ें साफ़-साफ़ सुन सकता था; और अंत में, मैं उन भयानक कीड़ों से दूर था।

लेकिन वह रात बिल्कुल शांतिपूर्ण थी, इसका कोई संकेत नहीं मिला कि पैंथर गाँव से दो-तीन मील की दूरी तक आया था। अगली सुबह बंगले पर लौटकर मैंने फिर स्नान किया और दिनभर सोता रहा। हर दिन कुछ लोग मेरे जीवित चारे की जाँच करते थे, लेकिन किसी भी जानवर को कोई नुकसान नहीं पहुँचा था।

उस रात मैं एक बार फिर छत पर जा बैठा। रात के 2 बज चुके थे, आसपास के जंगल से कोई आहट नहीं सुनाई दी थी, और मुझे बहुत नींद आ रही थी। अचानक, जैसे सपने में होता है, मैंने मवेशियों को बेचैनी से हिलते-डुलते सुना। मेरे नीचे बने बाड़े में मौजूद कुत्तों में से एक गुर्राया। फिर चारों कुत्ते एक साथ भौंकने या चिल्लाने लगे।

धीरे-धीरे आगे देखते हुए, मैंने गाँव की गली को दोनों दिशाओं में देखना शुरू किया। उस समय तारों की रोशनी पर्याप्त नहीं थी, बस इतनी ही थी कि रात का अंधेरा न छाए। दाईं ओर बाईं ओर की गली धुंधली सी दिखाई दे रही थी और आसपास के वातावरण से थोड़ी हल्की थी। मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था और कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था।

तभी मुझे एक बहुत ही धीमी सी आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई कोबरा फुफकार रहा हो। जी हाँ, फ़िर वही आवाज़! और वो मेरे ठीक सामने और नीचे से आ रही थी। क्या ये किसी साँप की फुफकार थी या फिर वो हल्की सी आवाज़

जो कोई पैंथर अपने ऊपरी होंठ को त्वचा को पीछे की ओर मोड़ते समय निकालता है?

मैंने नीचे की ओर देखा और पहले तो कुछ दिखाई नहीं दिया। कुछ ही सेकंड बाद, उस धुंधली रोशनी में, मेरी नज़र में एक हल्की, लंबी आकृति उभरी, गली के आसपास के धुंधलेपन से कहीं ज़्यादा हल्के रंग का एक धब्बा। मैंने उसे घूरकर देखा और मुझे लगा कि वह हिल रही है। इस बार फुफकार की आवाज़ ज़्यादा साफ़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था कि वह आवाज़ उसी हल्के धब्बे से आ रही है। मेरे नीचे बने शेड में मौजूद कुत्ते अब रोने और सिसकने लगे। मवेशी बहुत बेचैन थे।

मुझे एहसास हुआ कि मैं जहां लेटा था, वहां से राइफल नीचे की ओर नहीं कर सकता था; मुझे शायद एक फुट और आगे बढ़ना होगा, जब तक कि मेरा सिर और कंधे उस जस्ता की चादर के किनारे से पूरी तरह बाहर न निकल जाएं जिस पर मैं लेटा था। मैंने ऐसा करना शुरू किया, लेकिन मेरी पूरी सावधानी के बावजूद, भूसा सरसराया और जस्ता की चादर से हल्की सी चरमराहट की आवाज़ आई।

उस धुंधले धब्बे से एक भयावह गुर्राहट सुनाई दी, और मैं समझ गया कि मैं पकड़ा गया हूँ और अगले कुछ ही सेकंड में पैंथर शायद जस्ता की छत पर कूदकर मुझ पर हमला कर देगा।

बचे हुए छह इंच आगे बढ़ते हुए, मैंने राइफल को छत के किनारे से नीचे किया और टॉर्च का स्विच दबाया। दो चमकते गोले एक धब्बेदार शरीर से प्रकाश को प्रतिबिंबित कर रहे थे, जो छलांग लगाने के लिए झुका हुआ था। इतनी नज़दीकी दूरी से केवल एक गोली ही पर्याप्त थी और उन धधकते गोलों से जीवन की चिंगारी धीरे-धीरे बुझ गई: धधकते सफेद रंग से वे मंद नारंगी, फिर हल्के हरे, फिर एक खाली झिलमिलाहट में बदल गए, और अंत में बैंगनी-नीले रंग में, क्योंकि प्रकाश अब निर्जीव रेटिना द्वारा परावर्तित हो रहा था।

अगली सुबह मैंने एक बूढ़ी मादा पैंथर को देखा, जिसके नुकीले दांत लगभग ठूंठ जैसे हो गए थे। उसका शरीर बेहद पीला था; यहां तक कि उसके रोसेट भी बेढंगे और धुंधले थे। उसके पंजे कुंद और घिसे हुए थे। उसमें किसी भी तरह की विकृति या पहले के किसी घाव का कोई संकेत नहीं था। ऐसा लगता था कि केवल बुढ़ापा और जानवरों को मारने की शारीरिक अक्षमता के कारण धीरे-धीरे भुखमरी से मरने की आशंका ने ही संगम पैंथर को मानव जाति पर आक्रमण करने के लिए मजबूर किया था—एक ऐसा युद्ध जो चाहे कितना भी भयानक और डरावना क्यों न हो, अंततः इस बिल्ली प्रजाति की मृत्यु में ही समाप्त होता है। आधुनिक बंदूकें और मानवीय बुद्धि जंगल की सहज प्रवृत्ति, चालाकी और भूख की पीड़ा के आगे कुछ भी नहीं हैं।

---

* नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग, जॉर्ज एलन एंड अनविन, 1954 में।

छह

The Ramapuram Tiger

यह कहानी एक ऐसे बाघ की है जिसने तीन महीनों तक लगभग आधे जिले पर राज किया, जो लगभग साठ मील लंबा और लगभग साठ मील चौड़ा इलाका था। हालाँकि उसका शासनकाल अपेक्षाकृत छोटा था, फिर भी वह बेहद हलचल भरा था, क्योंकि इस छोटी सी अवधि में रामपुरम का बाघ अपने 3,600 वर्ग मील के क्षेत्र में सचमुच हर जगह मौजूद था। लाल चमगादड़ की तरह, उसे हर कोई ढूंढ रहा था, लेकिन कोई भी उसे पकड़ नहीं पाया, जब तक कि उसका अंत अप्रत्याशित तरीके से नहीं हो गया।

उत्तरी कोयंबटूर ज़िला मुख्यतः पहाड़ियों और जंगलों से बना है। दक्षिण में कोयंबटूर के निचले मैदानी इलाकों से घिरा यह ज़िला अचानक डिंबम ढलान तक ऊपर उठता है। दक्षिण-पश्चिम में नीलगिरी या नीली पर्वत श्रृंखला के जंगल हैं। पश्चिम में मैसूर के जंगल हैं। उत्तर-पश्चिम में पहाड़ियों की एक और ऊँची श्रृंखला है - बिलिगिरिरंगन। उत्तर, उत्तर-पूर्व और पूर्व की ओर कावेरी नदी बहती है, जिसके दोनों किनारे घने जंगलों से ढके हैं, और इसके उत्तर-पूर्वी और पूर्वी हिस्से सलेम ज़िले के जंगलों से सटे हुए हैं।

उत्तरी कोयंबटूर जिले में इस नाम के योग्य केवल एक ही कस्बा है: कोललेगल, जो उत्तर-पश्चिमी कोने पर स्थित है और कावेरी नदी से लगभग आठ मील दूर है। कोललेगल से चार सड़कें निकलती हैं। पश्चिम और उत्तर की ओर मैसूर जाने वाली सड़कों का इस विवरण में कोई उल्लेख नहीं है। तीसरी सड़क दक्षिण की ओर जाती है और लगभग सीधी है तथा बिलिगिरिरंगन पहाड़ियों के पूर्वी तल के साथ-साथ चलती है। इस सड़क पर सत्रह मील चलने पर लोकनहल्ली नामक बड़ा गाँव आता है; लोकनहल्ली से तेरह मील आगे बेलूर है, जहाँ से 'बाइसन रेंज' शुरू होती है और अड़तालीसवें मील के पत्थर पर हसनपुर तक और कोललेगल से बावन मील दूर ढलान के शिखर पर स्थित डिंबम तक पहुँचती है।

चौथी सड़क दक्षिण-पूर्व दिशा में जाती है और कोल्लेगल से लगभग पच्चीस मील दूर रामपुरम गाँव से होकर गुज़रती है, जहाँ से यह दक्षिण की ओर मुड़कर चौबीस मील आगे बरगुर तक जाती है, फिर पाँच मील आगे तामरकाराई तक और अंत में डिंबुम ढलान के दक्षिण-पूर्वी छोर तक जाती है, जहाँ से यह मैदानी इलाके में

स्थित आदेयूर गाँव की ओर तेज़ी से नीचे उतरती है। इस सड़क की कुल लंबाई लगभग इक्यासी मील है।

कोल्लेगल-लोकनहल्ली-बैलूर-डिंबम सड़क पर ट्रकों का आवागमन बहुत कम होता था और प्रतिदिन एक बस सेवा चलती थी; जबकि रामपुरम, तामरकारी और अदियूर जाने वाली सड़क अपने अंतिम साठ मील के हिस्से में जीपों या पुराने जमाने की ऊँची ग्राउंड क्लीयरेंस वाली अमेरिकी कारों को छोड़कर मोटर वाहनों के लिए अनुपयुक्त थी। इलाका बेहद दुर्गम था, जिसमें पत्थरों से भरे तेज उतार-चढ़ाव थे। यह एक संकरा रास्ता बन जाता था, जो बैलगाड़ियों के पहियों से गहरा कटा हुआ था और दोनों ओर घने जंगल से घिरा हुआ था। जंगल की धाराओं के रेतीले—और अक्सर पथरीले—तल इस रास्ते को थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पार करते थे। गहरी घाटियों में विशाल बांस के जंगल फैले हुए थे, जिनकी झुकी हुई टहनियाँ कार के बोनट को छूती थीं, जब कार धीमी गति से चलती थी और उसका रेडिएटर लगातार गर्म होता रहता था। कभी-कभी रास्ते में कोई गिरा हुआ बांस का तना या पेड़ की टूटी हुई शाखा पड़ी होती थी, जिसे हाथी की भूख मिटाने के लिए तोड़ दिया गया हो। फिर चालक रुकता है, और अपनी कुल्हाड़ी, जिसे यहाँ 'चापर' कहा जाता है, से बाधा को काटता है और उसे एक तरफ खींच लेता है, फिर आगे बढ़ता है जब तक कि उसे कोई दूसरी ऐसी ही बाधा न मिल जाए। इस उपयोगी 'चापर' के बिना, यह रास्ता पार करना असंभव होता।

बाघ आमतौर पर घनी वनस्पतियों को नापसंद करते हैं और कम झाड़ियों वाले जंगलों में रहना पसंद करते हैं, जबकि हाथी और बाइसन ऐसे जंगलों को पसंद करते हैं। बाघ की इस पसंद के कई कारण हैं, जिनमें से एक यह है कि घनी झाड़ियाँ बाघ को अपने शिकार का सावधानीपूर्वक पीछा करने से रोकती हैं और उसके अंतिम समय के प्रभावी हमले में बाधा डालती हैं। दूसरा कारण यह है कि बाघ का वैध शिकार - सभी प्रकार के हिरण, जंगली सूअर और, ज़ाहिर है, गाँव के मवेशी - घने जंगलों में प्रवेश नहीं करते, जहाँ मुख्य रूप से हाथी और बाइसन रहते हैं, जिनसे बाघ आमतौर पर दूर रहता है। तीसरा कारण यह है कि घनी झाड़ियों में जोंक, कई प्रकार के कीड़े-मकोड़े और मक्खी (जिसे भारत में घोड़ा मक्खी या पशु मक्खी कहा जाता है) जैसे कीट पनपते हैं; बाघ इन कीटों से बेहद नफ़रत करते हैं।

रामपुरम का आदमखोर कावेरी नदी के किनारे, छह हजार फीट से अधिक ऊँचाई पर स्थित पोन्नाचाई मलाई नामक पर्वत क्षेत्र से आया बताया जाता है। इस पर्वत की ढलानों पर शोलागा और अन्य भारतीय बागान मालिकों के स्वामित्व वाले कुछ छोटे कॉफी बागान मौजूद हैं। कहा जाता है कि रामपुरम के आदमखोर ने एक साधारण मवेशी चोर के रूप में अपना धंधा शुरू किया था, जो बागान मालिकों और मजदूरों के पालतू पशुओं को चुराने के लिए इन बागानों पर छापा मारता था। बताया जाता है कि उसने कई पशुओं को मारकर खा लिया था, जब तक कि एक बागान मालिक, जो अपने साथियों से कहीं अधिक साहसी था, कोयंबटूर शहर गया और वहाँ से एक बेहद मजबूत दिखने वाला जाल खरीद लिया।

यह जाल लोहे का बना था, जिसमें दांतों की दो अर्धवृत्ताकार पंक्तियाँ थीं। जब इन्हें खोलकर अलग रखा जाता था, तो इनका फैलाव लगभग ढाई फीट तक होता था। दांत लगभग दो इंच लंबे थे। जबड़ों को एक बेहद संवेदनशील ट्रिगर द्वारा अलग रखा जाता था, जिसे छोड़ने पर एक असाधारण रूप से शक्तिशाली स्प्रिंग बिजली की गति से जबड़ों को शोर मचाते हुए एक साथ ले आती थी, जिससे नुकीले दांत आपस में फंस जाते थे।

कुछ ही समय बाद, बाघ ने एक दुधारू गाय को मार डाला और उसे खाई में घसीटकर सूखे पत्तों के ढेर के नीचे छिपा दिया, बिना खाए। शिकार का पीछा किया गया और उसे खोज निकाला गया। जाल को गाय के पिछले हिस्से के पास सावधानीपूर्वक लगाया गया, जहाँ बाघ आमतौर पर भोजन के लिए लौटते समय अपना काम शुरू करता था। जिन सूखे पत्तों से शिकार छिपाया गया था, उन्हीं पत्तों का इस्तेमाल जाल को छिपाने के लिए किया गया। बाघ वापस आया, और दुर्भाग्य से और दूसरों के भविष्य के दुर्भाग्य के लिए—उसका सिर जाल में फंस गया, जिसने उसकी गर्दन के दोनों ओर, कानों के ठीक पीछे, उसे मजबूती से जकड़ लिया।

जाल को एक खूंटी से ज़मीन में गाड़ दिया गया था। बाघ ने जाल पर हमला किया और खूंटी को उखाड़ने में कामयाब हो गया, जबकि जाल उसके गले में मजबूती से जकड़ा हुआ था। फिर वह भारी जाल को घसीटते हुए जंगल में भाग गया, और लगभग दो मील दूर एक जगह पर जाल दो बड़ी चट्टानों के बीच बुरी तरह फंस गया। बाघ ने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन जाल पहले से भी ज्यादा मजबूती से फंस गया।

दर्द से कराहते हुए बाघ दहाड़ा और बुरी तरह छटपटाया। उसकी दहाड़ें आधी रात तक बागान मालिक और उसके डरे हुए मजदूरों को सुनाई देती रहीं, जो दो मील दूर अपने बागान में थे। आखिरकार, जानवर खुद को छुड़ाने में कामयाब हो गया, इस दौरान उसका बायां कान और आंख कट गई, साथ ही गर्दन और चेहरे पर भी गंभीर चोटें आईं। इसके बाद करीब एक हफ्ते तक इलाके में उसकी दर्द से कराहने की आवाजें दिन-रात सुनाई देती रहीं।

फिर एकदम सन्नाटा छा गया। सबको लगा कि बाघ अपने ज़ख्मों से मर गया है। बागान मालिक और उसके नौकर गिद्धों पर नज़र रखे रहे, जो शायद शव को देख लेते और भोजन के लिए ज़मीन पर झपट्टा मारते हुए मरे हुए जानवर की मौजूदगी का पता बता देते। लेकिन आसमान में ऊँचे उड़ते हुए गिद्ध ही दिखाई दिए, जो नीचे धरती पर मौत के संकेतों की तलाश में ध्यान से देख रहे थे; लेकिन कोई भी झपट्टा नहीं मारा, क्योंकि बाघ मरा नहीं था।

दो सप्ताह बीत गए; फिर एक दोपहर, एक छोटे कॉफी बागान की ओर जाने वाले रास्ते पर, शोलागा जनजाति का जेकेन और उसकी अठारह वर्षीय पत्नी सवार हुए। भारतीय रीति-रिवाज के अनुसार, जेकेन आगे चल रहा था और उसकी पत्नी उससे लगभग एक गज़ पीछे, सिर पर अनाज की बोरी रखे हुए थी। वे एक सूखे नाले को पार कर चुके थे और उसके किनारे पर चढ़ ही रहे थे कि तभी, इन क्षेत्रों में नदी के किनारों पर उगने वाली गन्ने जैसी घास के एक झुंड में से एक बाघ ने लड़की पर झपट्टा मारा और उसे ज़मीन पर पटक दिया।

मुड़कर देखा तो जेकेन ने अपनी पत्नी को ज़मीन पर लेटे हुए देखा, जो भयभीत और विनती भरी आँखों से उसे घूर रही थी। बाघ उसकी पीठ पर बैठा था, उसके दोनों पंजे उसके कंधों पर थे, और उसका खुला मुँह उसके सिर के ठीक ऊपर था। यह एक ऐसा बाघ था जिसकी बाईं आँख और बायाँ कान नहीं था, और उसकी गर्दन और चेहरे के घाव अभी तक भरे नहीं थे!

जेकेन पत्थर की तरह जम गया। वह हिल नहीं सकता था, बोल नहीं सकता था, बस भय और विस्मय से अपनी जगह पर जड़वत खड़ा रहा। बाघ ने भयानक गुर्राहट की, और अपने पहले से ही घायल चेहरे को और भी भयावह बना लिया। फिर उसने लड़की को उसके दाहिने कंधे से पकड़ा और अपने शिकार को लेकर नदी पार कर गया—लड़की का सिर नीचे की ओर झुका हुआ था, उसके बिखरे बाल और बायां

हाथ-पैर रेत में घिसट रहे थे। एक पल बाद, बाघ और लड़का नदी के उस पार जंगल में गायब हो गए।

जाहिर है, बेचारी महिला बेहोश हो गई थी, या शायद डर से मर गई थी। जेकेन ने अपनी पत्नी को आखिरी बार उसी समय देखा था, और हमले के समय भी उसने जरा सी भी चीख नहीं निकाली थी।

एक महीने बाद रामपुरम से दो मील की दूरी पर एक चरवाहे को बाघ ने मार डाला। इस मामले में, उसके आधे खाए हुए अवशेष एक झाड़ी में मिले। तीसरी मानव हत्या लगभग तीन सप्ताह बाद, कोललेगल-लोकनहल्ली-बैलूर-डिंबम सड़क पर लगभग इक्कीसवें मील के पत्थर के पास हुई। इस बार एक सड़क मजदूर, एक अधेड़ उम्र की महिला, शाम पांच बजे से ठीक पहले अपने साथियों के सामने हमले का शिकार हुई। वह कुछ मिनटों के लिए काम रोककर जंगल में कुछ कदम अंदर गई थी, तभी एक बाघ अचानक कहीं से उस पर झपटा और उसे उठाकर ले गया। वह बुरी तरह चीखी, और आस-पास मौजूद लोगों ने बाघ को साफ देखा था। बाघ का चेहरा चोटिल था और उसका बायां कान और आंख नहीं थी।

ऐसा हुआ कि उस समय उत्तरी कोयंबटूर क्षेत्र के लिए मेरा शिकार लाइसेंस समाप्त हो चुका था। यह क्षेत्र दो वन प्रभागों में विभाजित है: उत्तरी कोयंबटूर और कोललेगल प्रभाग। यद्यपि प्रशासनिक दृष्टि से कोललेगल उत्तरी कोयंबटूर जिले के अंतर्गत आता था, लेकिन वन विभाग ने हाल ही में जिले को दो अलग-अलग वन प्रभागों में विभाजित कर दिया था। मेरा लाइसेंस, जो समाप्त हो चुका था, उत्तरी कोयंबटूर और डिंबम क्षेत्र को कवर करता था; जबकि लोकनहल्ली, बैलूर और रामपुरम कोललेगल प्रभाग के अंतर्गत आते थे। मैं अपना पुराना लाइसेंस नवीनीकृत कराना चाहता था और आवश्यक शुल्क भेजने ही वाला था कि मैंने अखबारों में इस बाघ द्वारा किए गए नवीनतम अत्याचार के बारे में पढ़ा। इससे मेरा मन पक्का हो गया और दस दिनों की विशेषाधिकार छुट्टी का लाभ उठाते हुए, मैं सुबह-सुबह बैंगलोर से निकल गया और कोललेगल स्थित वन विभाग के कार्यालय में, जो 87 मील दूर था, कार्यालय खुलने से पहले ही पहुंच गया। मुझे आवश्यक शिकार लाइसेंस और बाघ के बारे में सभी उपलब्ध जानकारी प्राप्त करने में ज्यादा समय नहीं लगा।

जिस इलाके में आदमखोर सांप सक्रिय था, वह मेरे लिए अपेक्षाकृत नया था, इसलिए मैंने शुरुआत में रामपुरम में स्थित छोटे से वन लॉज में डेरा डालने का फैसला किया, जो पच्चीस मील दूर था, और मैं बेहद ऊबड़-खाबड़ सड़क से गुजरने के बाद डेढ़ घंटे में वहां पहुंच गया।

ज़ाहिर है, सबसे पहला काम रामपुरम के निवासियों का विश्वास जीतना था, उन्हें यह बताकर कि मैं उन्हें बाघ से छुटकारा दिलाने आया हूँ। लोग मुझे नहीं जानते थे और उन्होंने कुछ अस्पष्ट बातें बताईं, जिससे यह संकेत मिला कि बाघ पोन्नाचाई मलाई, जहां उसने अपना पहला शिकार किया था, और बैलूर के बीच कहीं भी हो सकता है, जो लगभग साठ मील की सीधी दूरी पर स्थित है।

जैसा कि मैंने आपको बताया है, बैलूर कोललेगल से लगभग तीस मील दूर कोललेगल-लोकनहल्ली-डिंबम सड़क पर स्थित एक छोटा सा गाँव था। इसलिए, मैं या तो कार से कोललेगल लौटकर वहाँ से बैलूर जा सकता था, या रामपुरम में कार छोड़कर रामपुरम से बैलूर तक लगभग उन्नीस मील की दूरी पैदल चलकर त्रिभुज के तीसरे भाग को तय कर सकता था। मैंने बाद वाला विकल्प चुना, क्योंकि इससे मुझे आरक्षित वन से सटे कई वन बस्तियों से गुजरने का अवसर मिलता, जहाँ मुझे बाघ के बारे में कुछ जानकारी मिलने की उम्मीद थी।

तदनुसार, अगली सुबह भोर होते ही मैंने रामपुरम स्थित छोटे से फॉरेस्ट लॉज को छोड़ दिया और बैलूर की ओर अपनी यात्रा शुरू की। रास्ता आम तौर पर दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाता था, जो कहीं-कहीं विरल रूप से खेती वाले क्षेत्र से होकर गुजरता था और कहीं-कहीं झाड़ियों वाले जंगल से होकर जाता था, जो आरक्षित वन की सीमा के भीतर, दक्षिण में कुछ मील दूर स्थित छोटी पहाड़ियों की श्रृंखलाओं के किनारे-किनारे चलता था।

मैं कुछ छोटे-छोटे गांवों से गुजरा, लेकिन सभी निवासी या तो अपने घरों के अंदर थे या अपनी झोपड़ियों के प्रवेश द्वार पर बैठे हुए थे। उनके कुछ मवेशी बाहर बाड़े में बंद थे या झोपड़ियों के आस-पास की थोड़ी-बहुत घास चर रहे थे, क्योंकि आदमखोर की कहानी दूर-दूर तक फैल चुकी थी और ऐसी घटनाओं से उत्पन्न होने वाला सामान्य भय पहले ही कायम हो चुका था।

मैं धीरे-धीरे चलता रहा और जहाँ भी संभव हुआ, पूछताछ करता रहा। इन बस्तियों में रहने वाले लगभग सभी शोलागा लोगों ने बताया कि उन्होंने पिछली रात या पिछले बहत्तर घंटों के भीतर आसपास बाघ की दहाड़ सुनी थी। एक जगह मुझे बाघ के पैरों के स्पष्ट निशान दिखाए गए, जो हाल ही में जोते गए खेत को पार कर रहा था, जो मालिक की झोपड़ी से मात्र सौ गज की दूरी पर था। मैंने आगे बढ़ने से पहले भविष्य के संदर्भ के लिए उन निशानों की विस्तृत माप ली, लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि इस क्षेत्र के लोग या तो इतने घबराए हुए थे कि वे पूरी तरह से झूठी और बढ़ा-चढ़ाकर बातें बता रहे थे, या फिर रामपुरम और बैलूर के बीच उन्नीस मील के क्षेत्र में बाघों की संख्या असामान्य रूप से अधिक थी। क्योंकि, प्राप्त जानकारी के अनुसार, पिछले तीन-चार दिनों में प्रत्येक बस्ती में एक बाघ आया था!

शाम लगभग 5 बजे मैं बैलूर गाँव पहुँचा, जहाँ लगभग बीस झोपड़ियाँ थीं। यहाँ मेरी मुलाकात सड़क निर्माण दल के उन सदस्यों से हुई जिन्होंने इक्कीसवें मील के पत्थर के पास महिला की हत्या देखी थी। उन्होंने मुझे वही बताया जो मैंने पहले ही लिख लिया है और विशेष रूप से बाघ के विकृत शरीर पर जोर दिया, जिसे उन्होंने स्पष्ट रूप से देखा था जब वे भय से वहीं खड़े रह गए थे, जबकि बाघ अपनी चीखती हुई शिकार, सड़क निर्माण मजदूर महिला को लेकर झाड़ियों में भाग गया था।

सबसे नज़दीकी वन विभाग का लॉज डिंबम की दिशा में मोटर रोड पर लगभग साढ़े तीन मील आगे था। रिजर्व सड़क के दोनों ओर फैला हुआ था। शाम के 5:30 बज रहे थे और मुझे पता था कि एक घंटे में रात हो जाएगी, इसलिए मैंने आखिरी साढ़े तीन मील की दूरी तेज़ी से तय की और अंधेरा होने से कुछ ही देर पहले छोटे से वन बंगले पर पहुंच गया।

बंगले से लगभग तीन मील पश्चिम में स्थित बिलिगिरिरंगन पहाड़ियों की विशाल श्रृंखला के पीछे सूरज डूब चुका था, और शाम के समय पेड़ों पर बैठे मोर और जंगली मुर्गों की चहचहाहट ने मेरा स्वागत किया जब मैं बरामदे में घसीटकर लाई गई एक पुरानी टूटी कुर्सी पर बैठ गया। पश्चिम की ओर से नीचे उतरते हुए एक सांभर हिरण की दूर से आती हुई आवाज मेरे कानों को मधुर संगीत की तरह लगी, क्योंकि वह बंगले को तलहटी से अलग करने वाली घनी घाटी के ऊपर से गुजर रहा था। इस घाटी के असंख्य वृक्षों की चोटियाँ ढलते हुए धुंधलके में एक काले कालीन की तरह लग रही थीं।

आधा घंटा भी मुश्किल से बीता था कि चारों ओर घना अंधेरा छा गया, जिसकी हल्की-हल्की टिमटिमाहट लाखों जुगनुओं की झिलमिलाहट से गूंज रही थी। वे हर जगह तैर रहे थे, मानो अंधेरे में नन्हे-मुन्ने परी हों, और अपनी चमकीली लालटेनें आस-पास के हर झाड़ी या पेड़ की चोटी तक पहुंचा रहे हों। कभी-कभार उनकी चमक एक

साथ मिलता था, और जिस पेड़ या झाड़ी के चारों ओर वे झुंड बनाते थे, वह हजारों छोटे जीवों द्वारा बनाई गई एक विशाल और एकसमान प्रकाश की चमक से कांप उठता था। जंगल की रात का अंधेरा एक क्षणिक, प्रकाशमान और अलौकिक चमक के सामने छंट जाता था—लेकिन केवल एक पल के लिए—जब तक कि फिर से वह दुर्लभ संयोग नहीं आ जाता।

मैंने जल्दी ही रात को लॉज के छोटे से केंद्रीय कमरे के फर्श पर सोकर आराम किया; लेकिन लगभग 2 बजे, एक बाघ की कराहने की आवाज ने मुझे जगा दिया। घाटी से गुजरते हुए मैंने उसकी आवाज रुक-रुक कर सुनी, जब तक कि वह दूर जाकर धीमी नहीं हो गई।

सुबह तड़के मैं बैलूर गाँव पहुँच गया, जहाँ मैंने दो स्थानीय शिकारियों की मदद ली और चारे के लिए तीन जवान बैल खरीदे। इनमें से एक को हमने बंगले के पश्चिम में घाटी से बहने वाली धारा के किनारे बाँध दिया, जहाँ मैंने रात में बाघ की आवाज़ सुनी थी। दूसरे को सड़क से मात्र 100 गज की दूरी पर, गाँव और वन बंगले के बीचोंबीच एक छोटे से जंगल में बाँध दिया। तीसरे को बाँधने के लिए हम वापस इक्कीसवें मील के पत्थर तक गए, जहाँ सड़क बनाने वाले मजदूर की हत्या हुई थी। इस जगह के पास ही सड़क एक वन धारा से होकर गुजरती थी, जिसे ओडुम बेट्टा हल्ला के नाम से जाना जाता था; इसके किनारे बाँस से ढँके हुए थे, सिवाय वन विभाग द्वारा बनाए गए एक छोटे से खुले स्थान के, जिसमें विभिन्न वन पौधों के पौधे प्रायोगिक रूप से उगाए जा रहे थे। मेरे सहायकों ने मुझे बताया कि एक बाघ अक्सर इस खुले स्थान से गुजरता है, और मैंने पाया कि यह बात सच थी, क्योंकि तीन अलग-अलग स्थानों पर पुराने और अपेक्षाकृत नए, दोनों तरह के पदचिह्न दिखाई दे रहे थे। मैंने इन पदचिह्नों में से सबसे नए पदचिह्न की जांच की और उनकी तुलना पिछले दिन गांव में लिए गए पदचिह्नों के माप से की। दोनों ही पदचिह्न नर बाघ द्वारा बनाए गए थे, लेकिन विभागीय वृक्षारोपण में मिले पदचिह्न कहीं अधिक उम्रदराज और भारी जानवर के थे।

हमने तीसरा चारा खुले मैदान में ठीक उसी जगह बांधा जहां से ऑडम बेट्टा हाल्ला धारा इस बागान के पास से बहती है।

यह सब हो जाने पर शाम के 5:30 बज चुके थे, और बैलूर गाँव लौटते समय एक हट्टे-कट्टे, सुंदर दिखने वाले शोलागा ने मुझसे संपर्क किया और अपना परिचय जेकेन के रूप में दिया, जो उस लड़की का पति था जो आदमखोर बाघ का पहला शिकार बनी थी। उसने बताया कि पोन्नाचाई मलाई की ढलानों पर स्थित कॉफी बागान से गुजर रहे यात्रियों के एक समूह ने, जहाँ वह काम करता था, उसे सूचित किया था कि एक साहब रामपुरम बाघ का शिकार करने आए हैं। अपनी पत्नी की हत्या का बदला लेने के इरादे से, उसने बागान मालिक से रामपुरम जाने की अनुमति ली ताकि वह मेरी सहायता कर सके। रामपुरम पहुँचकर उसे बताया गया कि मैं बैलूर चला गया हूँ, और वह तुरंत मेरे पीछे-पीछे बैलूर पहुँच गया।

मैंने जेकेन को उसके प्रस्ताव और मुझे ढूंढने में की गई मेहनत के लिए धन्यवाद दिया और तुरंत उसे अपना निजी सहायक नियुक्त कर लिया। मुझे उसका रूप-रंग और बाघ को पकड़ने के लिए कोई कसर न छोड़ने का उसका दृढ़ निश्चय पसंद आया। जेकेन ने मेरी सहमति पर मुस्कुराते हुए मुझे धन्यवाद दिया, लेकिन उसने भुगतान लेने से साफ़ इनकार कर दिया; वास्तव में, उसने स्पष्ट कर दिया कि यह उसके प्रस्ताव की शर्त थी।

मैं फॉरेस्ट लॉज लौट आया और जेकेन और बाकी दो सहायकों को अगली सुबह जल्दी निकलने और इक्कीसवें मील के पत्थर के पास रखे चारे को देखने का निर्देश दिया। मैं खुद बाकी दो चारे देखने गया। अगली सुबह मैंने यही किया, पहले

घाटी में नदी के किनारे बंधे बैल को देखा, फिर फॉरेस्ट बंगले और बैलूर गाँव के बीच में बंधे चारे को। दोनों बैल सुरक्षित थे और जहाँ उन्हें बांधा गया था, उसके आस-पास की रेत में कहीं भी पुग कुत्तों के निशान नहीं मिले। फिर मैं बाकी की दूरी पैदल चलकर बैलूर गाँव पहुंचा, जहाँ मैंने अपने तीन स्काउट्स के लौटने का इंतज़ार किया; एक घंटे के भीतर वे आ गए और मुझे बताया कि तीसरा चारा जीवित है।

जेकेन और एक शोलागा को गाँव में छोड़कर, मैंने दूसरे व्यक्ति को अपने साथ लिया, जिसने दावा किया कि वह उस क्षेत्र के वन पथों से भलीभांति परिचित है, और पश्चिम की ओर तब तक चलता रहा जब तक हम बिलिगिरिरंगन की तलहटी में नहीं पहुंच गए। चूंकि यह सारा इलाका मेरे लिए अपरिचित था, इसलिए मैंने उसे आगे चलने को कहा और अपनी राइफल तैयार रखते हुए पीछे से उस पर नज़र रखी। शोलागा लोग जन्मजात वनवासी होते हैं, और मेरे मार्गदर्शक ने ज़रा भी घबराहट नहीं दिखाई, जब हम एक कतार में, एक वन पथ से ऊपर और दूसरे से नीचे, अंधेरी नालियों को पार करते हुए आगे बढ़े, अक्सर बाँस की लटकती पत्तियों या काँटेदार झाड़ियों से बचने के लिए कमर झुकाते हुए। लेकिन हमें किसी ताज़े बाघ के पदचिह्न का कोई निशान नहीं दिखा।

एक जगह से एक विशाल नर पैंथर गुजरा था, और दूसरी जगह से एक मादा पैंथर अपने शावक के साथ गुज़री थी; लेकिन यह स्पष्ट था कि जिस बाघ की हम तलाश कर रहे थे वह उस रास्ते से नहीं गुजरा था।

दोपहर के लगभग 3 बज चुके थे जब हम फॉरेस्ट लॉज वापस लौटे और देर से ठंडा दोपहर का भोजन किया। शोलागा ने आग जलाई, जिस पर मैंने कुछ पानी उबालकर हम दोनों के लिए कई कप चाय बनाई। फिर मैंने परिसर में बने छोटे से कुएं से पानी निकाला, ताकि ठंडे पानी से नहाने का आनंद ले सकूं।

पांच बजे मैं शोलागा के साथ बैलूर गाँव लौटा, जहाँ मैंने उसे और जेकेन को निर्देश दिए कि वे और तीसरा शोलागा अगली सुबह इक्कीसवें मील के पत्थर पर स्थित चारागाह पर जाएं। जब मैं बंगले पर लौटा तब तक सात बज चुके थे। उस रात मैं चैन से सोया, और किसी बाघ की दहाड़ ने भी मुझे नहीं विसर्जित किया। सुबह जल्दी ही मैं बाकी दो चारागाहों की जाँच के लिए निकल पड़ा। दोनों जगह बाघ सुरक्षित थे।

फ़ॉरेस्ट लॉज लौटकर मैंने सादा भोजन किया और फिर बैलूर की ओर चल पड़ा, रास्ते में बाघ के पदचिह्नों पर सावधानीपूर्वक नज़र रखता रहा। कोई बाघ उस रास्ते से नहीं गुज़रा था और सुबह 9:15 बजे मैं अपने साथियों का इंतज़ार कर रहा था। वे दस बजे से पहले लौट आए, इस बार यह बताने के लिए कि बाघ ने रस्सी को काटकर चारा हटा दिया था।

सौभाग्य से मैं ऐसी स्थिति के लिए तैयार था और अपने साथ टॉर्च और रात में शिकार करने का अन्य सामान एक थैले में लाया था। हम जितनी जल्दी हो सके वापस भागे और दोपहर के कुछ ही समय बाद उस जगह पहुंच गए जहां बैल को बांधा गया था। लगभग बीस फीट दूर नरम मिट्टी में बाघिन के पैरों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे, और जाँच करने पर पता चला कि हत्यारा बाघिन थी, न कि कोई बाघ। वहीं से उसने बैल पर अंतिम हमला किया था, जिससे बैल की मृत्यु हो गई थी, उसने उस रस्सी को काट दिया था जिससे उसका पैर बाँधा गया था।

हमें पता नहीं था कि शिकार कितनी दूर ले जाया गया है, इसलिए मैंने अपने साथियों से कहा कि वे दोपहर 3 बजे तक इक्कीसवें मील के पत्थर के पास मेरा इंतज़ार करें, जबकि मैं घसीटने के निशान का पीछा करूँगा। अगर मृत बैल को कुछ दूर ले जाया गया होता, तो मैं बाघिन के लौटने का इंतज़ार करने के लिए एक छिपने

को जगह बना लेता और पूरी रात वहाँ बिताता। ऐसी स्थिति में, मैं तीन बजे तक वापस नहीं आ पाता और उन्हें बैलूर लौट जाना होता। दूसरी ओर, अगर बाघिन ने शिकार को ज़्यादा दूर नहीं छोड़ा होता, तो मैं अपने साथियों के पास लौट आता और उनसे एक अच्छी तरह से मचान बनाने को कहता।

मैंने देखा कि बाघिन शिकार को पहले दो सौ गज तक आधा घसीटती रही, तब तक वह निचले इलाके और नाले के आसपास उगे बांस के घने जंगल से निकल चुकी थी। फिर उसे घनी लैंटाना की झाड़ियाँ मिलीं, जो जाहिर तौर पर उसके रास्ते में रुकावट बन गईं, क्योंकि वह मरे हुए बैल को ढो रही थी। यहाँ उसने जाहिर तौर पर उसे अपने कंधे पर लाद लिया, जैसा कि बाघ कभी-कभी अपने शिकार को ले जाने के लिए करते हैं, और फिर उसके निशान का पीछा करना बेहद मुश्किल हो गया।

किसी जानवर के खुर घसीटने या बैल के सींगों से जगह-जगह टहनियाँ टूट गई थीं, और यही उनके गुज़रने के एकमात्र दिखाई देने वाले निशान थे। सड़ती हुई वनस्पति और गिरे हुए लैंटाना के पत्तों की चादर ने पगडंडियों के निशान ढूंढने की सारी उम्मीदें खत्म कर दी थीं। स्वाभाविक रूप से, चलना भी बहुत धीमा था, और मुझे यह स्थिति बिल्कुल भी पसंद नहीं आ रही थी, क्योंकि मेरा लगभग पूरा ध्यान पगडंडी का पीछा करने पर ही केंद्रित था, जिससे मैं अचानक हमले से पूरी तरह सावधान नहीं रह पा रहा था। अंत में लैंटाना की घास खत्म हुई और खुला जंगल शुरू हो गया, जिसमें जगह-जगह पेड़ और बौने खजूर के पेड़ फैले हुए थे।

दो बार मुझे वह जगह दिखी जहाँ बाघिन ने अपना बोझ रखा और फिर उसे उठा लिया। अब यह स्पष्ट हो गया था कि उसका कोई विशेष गंतव्य था, संभवतः कोई मांद जहां उसके बच्चे थे और जिनके लिए वह मांस ले जा रही थी।

पगडंडी ऊपर की ओर बढ़ती जा रही थी; इलाका धीरे-धीरे पथरीला होता जा रहा था, और अंत में, पेड़ों के तनों के बीच एक दरार में, मुझे एक छोटी पहाड़ी दिखाई दी, जो शायद मेरे खड़े होने की जगह से लगभग एक चौथाई मील दूर और लगभग 200 फीट ऊपर थी। पगडंडी सीधे पहाड़ी की ओर जा रही थी। अब तक मुझे काफी हद तक यकीन हो चुका था कि जिस जानवर का मैं पीछा कर रहा था, वह आदमखोर नहीं था, क्योंकि आदमखोर के बारे में जुटाई गई सभी जानकारियों के अनुसार वह बाघ था, बाघिन नहीं, हालांकि उसका लिंग पूरी तरह से निश्चित नहीं था। हालांकि, यह एक ज्ञात तथ्य था कि आदमखोर ने अपनी बाईं आंख और कान खो दिए थे, इसलिए अगर मुझे अपने पीछा किए जा रहे जानवर की एक झलक मिल जाती, तो मैं जल्द ही जान जाता कि वह सही जानवर है या नहीं।

उस झलक को कैसे पाया जाए, यही समस्या थी। इसका सबसे आसान जवाब था कि तब तक आगे बढ़ते रहें जब तक हमारी मुलाकात न हो जाए, लेकिन यह मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं था, क्योंकि भले ही बाघिन आदमखोर न हो, फिर भी वह निश्चित रूप से किसी भी ऐसे इंसान का स्वागत नहीं करेगी जो उस मांद का दरवाजा खटखटाए जहां उसके बच्चे थे।

लेकिन मैं आगे बढ़ता रहा। अब निशान का पीछा करना आसान हो गया था, क्योंकि बाघिन चट्टानों और पत्थरों से टकराई थी, जहाँ खून के धब्बे मृत बैल के गुजरने का संकेत दे रहे थे।

अब आधी दूरी तय हो चुकी थी; बाकी आधी दूरी मुझे शिखर तक ले जाएगी। चट्टानें ढेरों में पड़ी थीं, और जिस रास्ते पर मैं चल रहा था वह उनके बीच से टेढ़ा-मेढ़ा होकर गुजर रहा था, मानो बाघिन अपना रास्ता चुनते हुए चल रही हो ताकि उसका कोई भी बोझ चट्टानों के बीच न फंस जाए। तीन बजने में दस मिनट बाकी थे; सूरज नंगी चट्टानों पर बेरहमी से चमक रहा था, और बदले में वह गर्मी भट्टी के दरवाजे से

निकलती हुई गर्मी की तरह मेरे चेहरे पर वापस आ रही थी। मेरे कपड़े पसीने से भीगे हुए थे, जो नदियों की तरह मेरे चेहरे से बहकर मेरी आँखों में जा रहा था, जिससे मेरी आँखें जल रही थीं और उनमें जलन हो रही थी, और मेरे होंठों के कोनों तक पहुँच रहा था। मैंने अपने होंठ चाटे और मुझे याद है कि उस पल की उत्तेजना में लगभग अनजाने में ही मैंने नमकीन स्वाद महसूस किया।

गर्म चट्टानों पर चलते हुए मेरे रबर के बूटों से कोई आवाज़ नहीं आई। एक के बाद एक मोड़ आते गए, और हर मोड़ पर मुझे पता था कि आगे क्या है। फिर मैं एक ढलान वाली चट्टान पर पहुँचा जो ऊँचे उठती ज़मीन से लगभग तीन सौ डिग्री के कोण पर मिलती थी, जिससे एक असली गुफा की बजाय एक उथला गड्ढा बन गया था। काले रंग की धारियों वाले, नीचे से सफ़ेद, गहरे भूरे रंग के दो बड़े गोले एक-दूसरे पर गिर रहे थे और 'पकड़ो पकड़ो' का ज़ोरदार खेल खेल रहे थे। वे बाघ के दो बच्चे थे, और वे खेल रहे थे!

मैं थम सा गया; बस राइफल के हल्के से लोड होने की हल्की सी आवाज़ आई, जो सुनाई नहीं दी। पर इतना ही काफी था! हालांकि वे सिर्फ शावक थे, लेकिन पीढ़ियों से चली आ रही सहज प्रवृत्ति उनमें समाई हुई थी। उन्होंने खेलना बंद कर दिया, खुद को छुड़ाया और घबराहट भरी निगाहों से मेरी तरफ देखने लगे।

मुझे आज भी वह दृश्य याद है: एक शावक के चेहरे पर मासूमियत भरी हैरानी का भाव था, और दूसरे के चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई थीं, मानो वह घबराहट में फुफकार रहा हो।

वो फुफकार एक भयंकर तूफान का संकेत थी, क्योंकि उसने सो रही बाघिन को जगा दिया। गरजती हुई दहाड़ों की एक श्रृंखला के साथ वो गुफा से बाहर निकली, शावकों के ऊपर से छलांग लगाई और सीधे मेरी ओर आ गई।

दूरी लगभग बीस गज रही होगी। जैसे ही वह आगे बढ़ी, मैंने उसकी आँखों के बीचोंबीच निशाना साधा। फिर पाँच गज दूर जाकर वह रुक गई; वह पेट के बल ज़मीन पर लेट गई, आँखें धधक रही थीं और मुँह चौड़ा खुला हुआ था, जबकि उसकी दहाड़ और गुर्राहट से वह ज़मीन भी काँप रही थी जिस पर मैं खड़ा था। वह देखने में तो एकदम सटीक थी, लेकिन निश्चित रूप से आदमखोर नहीं थी!

आश्चर्य की बात यह थी कि वह घर की ओर नहीं दौड़ी। आखिरी क्षण में उसका साहस जवाब दे गया। वह मुझे सरल शब्दों में कह रही थी: 'जल्दी निकल जाओ, और मेरे बच्चों को नुकसान मत पहुँचाना वरना मैं तुम्हें मार डालूँगी।'

मुझे ऐसा करने में खुशी हुई। धीरे-धीरे मैं पीछे हटता गया, अपनी निगाहें उसकी आँखों से हटाए बिना, राइफल के निशाने को जरा भी हिलने दिए बिना, मेरी तर्जनी उंगली अभी भी ट्रिगर पर थी।

और वह वहीं डटी रही! ऐसा लगा जैसे उसे समझ आ गया हो कि मैं जा रहा हूँ। उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि वह मुझे नुकसान नहीं पहुँचाना चाहती थी; वह तो बस अपने बच्चों की रक्षा कर रही थी। शायद वह डरी हुई थी। मैं भी डरा हुआ था! लेकिन मैं उसे नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता था, न ही उस प्यारे, खुशहाल छोटे परिवार को तोड़ना चाहता था।

इसलिए मैं पीछे हटता चला गया। बाघिन दहाड़ती रही। अब मैं उस पहली चट्टान के कोने से मुड़ चुका था जिसने उसे मेरी नज़रों से छिपा रखा था। तभी मैंने हिम्मत करके पीछे मुड़कर देखा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, हालाँकि मेरा चेहरा अभी भी बाघिन की ओर ही था, जिसने अब दहाड़ना बंद कर दिया था, लेकिन गुर्रा रही थी। मैं जानता था कि जब तक वह ये आवाज़ें निकालती रहेगी, मैं सुरक्षित हूँ; मुझे पता चल जाएगा कि वह कहाँ है।

एक और बड़ा पत्थर पार करने के बाद, मैं मुड़ा और जल्दी से पीछे हट गया, इससे पहले कि वह अपना इरादा बदलकर मेरे पीछे आती। उसने गुर्राना बंद कर दिया, और मैं समझ गया कि असली खतरा आ गया है। हो सकता है वह अपने बच्चों के पास वापस चली गई हो, या हो सकता है वह मेरा पीछा कर रही हो। मैं जितनी जल्दी हो सके पहाड़ी से नीचे उतरा, बार-बार पीछे मुड़कर देखता रहा। जल्द ही मैं पेड़ों और खजूर के पेड़ों के पास पहुँचा, फिर लैंटाना की पट्टी के पास, जिस पर मैं बड़ी मेहनत से पगडंडी पर चला था, और अंत में बांस और सड़क के पास।

शाम के 4:30 बज रहे थे और निर्देशानुसार मेरे साथी बैलूर लौट चुके थे। मुझे नौ मील का सफर तय करना था और अंधेरा होने में सिर्फ दो घंटे बचे थे। फिर भी, मैंने सड़क किनारे पाँच मिनट बैठकर एक सिगरेट का आनंद लिया। मुझे लगा कि मैं इसका हकदार हूँ। मैं इस बात के लिए भी शुक्रगुजार था कि मुझे बाघिन को गोली नहीं मारनी पड़ी, क्योंकि उन दो शावकों का दृश्य अभी भी मेरी यादों में ताजा था।

बैलूर गाँव पहुँचने में मुझे साढ़े छह बज चुके थे। वहाँ मेरे तीनों साथी मेरा इंतज़ार कर रहे थे, मेरी कहानी सुनने के लिए उत्सुक थे। जब मैंने उन्हें कहानी सुनाई, तो वे इस बात से सहमत हुए कि किसी बाघिन का अपने बच्चे को पूरी तरह से काबू में न कर पाना असामान्य बात थी।

जब मैं जंगल में बने बंगले की ओर अपनी यात्रा के अंतिम चरण में उस छोटे से गाँव से निकला, तब तक अंधेरा छा चुका था। लेकिन चूंकि गाँव और बंगले के बीच लगभग आधे रास्ते में, सड़क से कुछ ही दूरी पर एक खुले मैदान में हमारा एक चारा बंधा हुआ था, तो मेरे मन में आया कि मैं वहाँ जाऊँ। यह विचार मेरे मन में क्यों आया, यह मैं ठीक से नहीं बता सकता क्योंकि मैंने बैलूर जाते समय उस जगह को पहले ही देख लिया था। यह एक सहज आवेग था, और मैंने अपना पूरा जीवन सहज आवेगों का अनुसरण करते हुए बिताया है। मैं उस छोटे से रास्ते पर मुड़ गया जो सड़क से दूर उस खुले मैदान की ओर जाता था जहाँ चारा बंधा हुआ था। चारों ओर घना अंधेरा था, सिवाय साफ नीले-काले आकाश में चमकते तारों की हल्की रोशनी के। मेरे आस-पास की झाड़ियाँ भूतिया आकार ले रही थीं, और सड़क के किनारे लगे 'बारिश के पेड़' की शाखाओं के बीच हवा रुक-रुक कर सरसरा रही थी। बीच-बीच में, एक बड़ा सागौन का पत्ता बहुत ही धीमी आवाज के साथ जमीन पर गिरता था, मानो रात का कोई विशाल पतंगा आराम करने के लिए बैठ रहा हो।

मैं उस छोटे जंगली अंजीर के पेड़ के पास पहुँचा जिसके नीचे मेरा चारा बंधा हुआ था। वहाँ परछाइयाँ ज़्यादा गहरी थीं, और चारा भूरे रंग का था। जब तक मैं उसके बहुत करीब नहीं पहुँचा, तब तक वह मुझे दिखाई नहीं दिया। पास आते ही वह लड़खड़ाते हुए खड़ा हो गया, मानो मेरे आने से चौंक गया हो, ठीक वैसे ही जैसे मैं उसकी अचानक हरकत से चौंक गया था। वह अभी भी सुरक्षित था। मैं उसके चारों ओर घूमकर दूसरी तरफ गया, ताकि उसके पिछले पैर से बंधी रस्सी की जाँच कर सकूँ, कहीं वह मुड़ तो नहीं गई थी।

और उसी क्षण आदमखोर ने हमला कर दिया।

मेरे लिए सौभाग्य की बात थी कि मैं बैल के दूसरी तरफ चला गया, जिसके परिणामस्वरूप बैल मेरे और बाघ के बीच आ गया। लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं पूरी तरह से हैरान रह गया था।

जिस जंगल से मैं अभी निकला था, वहाँ से ज़ोरदार भौंकने की आवाज़ आई। बैल घूम गया। मैं उसके पीछे कूद पड़ा, मेरी पीठ अंजीर के पेड़ के तने की ओर थी और मैं लगभग रस्सी से टकराकर गिरते-गिरते बचा। एक विशाल धूसर आकृति बैल की पीठ पर उछल पड़ी, और अचानक पड़े भार से बैल गिर पड़ा।

लेकिन बाघ ने बैल को गर्दन या गला नहीं पकड़ा था। वह तो बस बैल पर कूद पड़ा ताकि मेरे पास पहुंच सके। सौभाग्य से, बैल के गिरने से बाघ की छलांग नाकाम हो गई, वरना वह पलक झपकते ही उसके पीछे आ जाता।

गिरे हुए बैल के छटपटाते शरीर से बाघ खुद को अलग कर ही रहा था कि मेरी गोली उसकी आंखों के बीच जा लगी। वह बुरी तरह से पीछे की ओर मुड़ा, अभी भी बैल के ऊपर लेटा हुआ था, और बैल अब बाघ को अपनी पीठ पर लिए हुए लड़खड़ाते हुए खड़ा हो गया, उसका सिर और अगला हिस्सा आगे की ओर झुका हुआ था।

बिना सोचे-समझे, मैंने अनायास ही अपनी दूसरी गोली उस जगह पर चलाई जो मुझे बाघ के बाएं कंधे के पीछे लगी। बाघ गिर पड़ा! बाघ बाघ से लुढ़ककर मेरी ओर आया, और मेरी तीसरी गोली उसके गले में जा लगी।

बैल टस से मस नहीं हुआ। बाघ ने बेतहाशा लात मारी। और फिर अंत में सब कुछ शांत हो गया।

राइफल की टॉर्च की रोशनी से पता चला कि मेरी पहली गोली बाघ की खोपड़ी को चकनाचूर कर गई थी। दूसरी गोली थोड़ी नीचे लगी थी। भारी .405 कैलिबर की गोली बाघ की छाती के पिछले हिस्से को चीरते हुए निकल गई और उसके पेट में एक बड़ा छेद कर दिया। मेरी तीसरी गोली, जो बिल्कुल अनावश्यक थी, बाघ के गले से आर-पार हो गई, जिससे एक गहरा छेद हो गया। लेकिन मैंने उस बेचारे बाघ को मार डाला था जिसने अनजाने में मेरी जान बचाई थी।

मेरे हाथ कांप रहे थे, मेरे घुटने लड़खड़ा रहे थे, और अचानक मुझे बहुत ज़्यादा बीमार महसूस होने लगा। उस शाम की घटनाओं के बाद यह प्रतिक्रिया अचानक हुई। मैं अंजीर के पेड़ की ओर पीठ करके ज़मीन पर बैठ गया और अपना हाथ माथे पर रखा, जिसे छूते ही मुझे बर्फ़ जैसा ठंडा महसूस हुआ, यह देखकर मैं हैरान रह गया।

मैं कितनी देर तक इस हालत में रहा, यह मुझे नहीं पता। फिर मैंने अपनी पाइप ढूंढी, उसमें तंबाकू भरा और उसे जलाया। पहले कुछ कशों ने मेरे बुरी तरह से घबराए हुए मन को शांत किया और मैं जल्द ही सड़क पर वापस आ सका और बेलूर गांव की ओर अपने कदमों के निशान पर चलने लगा।

मैंने देखा कि निवासी सड़कों पर जमा थे, उत्साह और उम्मीद से भरे हुए। क्योंकि आसपास की पहाड़ियों में मेरी तीन गोलियों की आवाज़ गूंज उठी थी, जो घाटियों और पथरीली चोटियों पर दूर तक फैली हुई थी। उन्होंने अनुमान लगाया था कि बंगले के रास्ते में मुझ पर हमला हुआ था, लेकिन वे सोच रहे थे कि क्या यह हमला आदमखोर जानवर ने किया था, या किसी भालू या हाथी ने।

मुझे अंधकार से निकलते देख, वे सब मेरा स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े, मेरे तीनों नौकर सबसे आगे थे। मैं सड़क किनारे बैठ गया और उन्हें सारी कहानी सुनाई। उनके होठों से हैरानी और अविश्वास की आहें निकलीं, फिर उन्होंने मुझे बधाई दी और मेरी सुरक्षा के लिए हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया।

मेरे सामने गरमागरम दूध का एक बड़ा बर्तन और केले का एक गुच्छा रखा गया। उपहार के लिहाज से यह कुछ खास नहीं था, लेकिन इससे ग्रामीणों की हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त हुई।

आधे घंटे के भीतर ही लगभग पूरा गाँव लालटेन और मिट्टी के तेल की मशालें, एक मजबूत डंडा और रस्सियों के कुंडल लेकर बाघ को पकड़ने के लिए इकट्ठा हो गया। हम वापस उसी जगह गए और पचास से अधिक लोग उस विचित्र दृश्य को देख रहे थे, उनकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गई थीं। जेकेन को देखना विशेष रूप से

दयनीय था। उसने अपने चाकू से मरे हुए बाघ पर वार करना शुरू कर दिया—मेरे लिए यह बहुत दुखद था, क्योंकि वह उस खाल को और नुकसान पहुंचा रहा था जो पहले से ही मेरी गोलियों से लगभग खराब हो चुकी थी। मैंने धीरे से, लेकिन दृढ़ता से, उसे रोका; फिर वह अपनी मृत पत्नी को याद करके फूट-फूट कर रोने लगा।

एक बलवान और बहादुर व्यक्ति के गहरे रोते हुए दृश्य को देखना सुखद नहीं होता; यह संक्रामक होता है, और मुझे अपने गले में एक अजीब सी गांठ महसूस हुई - एक ऐसी गांठ जो काफी देर तक कम नहीं हुई।

अब बताने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं बचा है, सिवाय एक अजीबोगरीब घटनाक्रम के। अगली सुबह, बंगले पर आते समय, जेकेन उस जगह से गुज़रा जहाँ मैंने पिछली रात सड़क छोड़ी थी। पचास गज आगे जाकर उसने शौच करने का फैसला किया और एक बेर की झाड़ी के पीछे छिप गया। वहाँ उसे पहली बार पता चला कि बाघ पिछली रात मेरा इंतज़ार कर रहा था; ज़ाहिर है वह आसपास ही था, और उसने या तो मुझे सड़क पर आते हुए देखा था या मेरी आवाज़ सुनी थी।

जेकेन ने मुझे अपनी खोज के बारे में बताया और मैं खुद जाँच करने के लिए उसके साथ वापस चला गया। मैंने पाया कि उसकी बात सच थी। नरम रेत पर बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से अंकित थे, जबकि तारा-प्लम झाड़ी के नीचे की नरम घास और घनी झाड़ियाँ बाघ के शरीर के भार से अभी भी आंशिक रूप से दबी हुई थीं, हालाँकि उसे वहाँ घात लगाकर बैठे हुए बारह घंटे से अधिक समय बीत चुका था और वह मेरे आने का इंतजार कर रहा था।

फिर भी कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि ईश्वरीय विधान, मार्गदर्शक शक्ति, अंतर्ज्ञान या छठी इंद्री जैसी कोई चीज नहीं होती; आप इसे जो चाहें कह लें। मुझे तो ईश्वरीय विधान को समझने से भी ज्यादा मुश्किल इन अविश्वासियों को समझना लगता है!

सात

मुदियानूर का महान पैंथर

मुड़ियानूर एक छोटे से गांव का नाम है जो मोयार नदी और नीलगिरी पर्वत श्रृंखला की ऊँची चोटियों के उत्तर में और बिलिगिरिरंगन के नाम से जानी जाने वाली छोटी पर्वत श्रृंखला की तलहटी के दक्षिण में स्थित एक उपजाऊ घाटी के दक्षिण-पूर्वी छोर के पास बसा हुआ है।

इस अशांत धरती पर यह छोटी सी घाटी काल्पनिक कहानियों की उन मायावी 'सुखद घाटियों' के जितना संभव हो सके उतना करीब आती है, जिनके सपने हम अपनी बेचैन नींदों में देखते हैं। यह निश्चित है कि दोनों छोरों पर स्थित पर्वत श्रृंखलाओं के कारण कमजोर मानसून के मौसम में भी वर्षा अवश्य होगी। मिट्टी अत्यंत उपजाऊ है, विशेष रूप से पत्तों की खाद और महीन लाल दोमट मिट्टी से भरपूर है, क्योंकि हाल के वर्षों तक यह उस प्राचीन जंगल का हिस्सा थी जिसे सभ्यता के विस्तार के कारण धीरे-धीरे, लेकिन निरंतर रूप से पीछे धकेला जा रहा है। दिन के समय जलवायु समशीतोष्ण रहती है और रात में पर्वतीय चोटियों से बहने वाली ठंडी हवाओं के कारण काफी सर्द हो जाती है।

मुड़ियानूर के अधिकांश लोग किसान हैं, हालांकि कुछ लोग पशुपालक भी हैं, जो पशुओं के विशाल झुंड पालते हैं और उन्हें दिन के समय आसपास के जंगलों में चराने के लिए ले जाते हैं। इन पशुओं के दूध का उपयोग पूरी तरह से घी बनाने में किया जाता है, जो पिघला हुआ मक्खन होता है और पूरे भारत में खाना पकाने में इस्तेमाल होता है। मिट्टी के तेल के डिब्बों में भरा घी पहाड़ी पर बने घुमावदार रास्ते (जिसे घाट कहा जाता है) से ऊपर भेजा जाता है, जहाँ यह रास्ता डिंबम नामक छोटे से गाँव में मैसूर से सत्यमंगलम जाने वाली मुख्य सड़क से मिलता है। वहाँ घी के डिब्बों को बैलगाड़ियों—और कभी-कभी ट्रकों—पर लादकर बिक्री के लिए ले जाया जाता है। मैसूर और सत्यमंगलम में, और विशेष रूप से पास के शहर गोबिचेट्टीपलयम में, घी के अच्छे बाज़ार हैं।

इसलिए यहाँ की आबादी खुशहाल और समृद्ध है। घाटी में बहुत कम ही विदेशी आते हैं, क्योंकि बैलगाड़ी का रास्ता लगभग मोटरगाड़ियों के चलने लायक नहीं है।

कभी-कभी बाघ या तेंदुआ झुंडों पर हमला कर देते हैं; तो कभी किसान सुबह उठकर देखते हैं कि रात भर चरने वाले हाथियों ने उनके खेतों के कुछ हिस्सों को रौंद डाला है। जंगली सूअर और हिरण फसलों को मामूली नुकसान पहुंचाते हैं, लेकिन इन्हें छोटी-मोटी आपदाएँ माना जाता है और इन्हें अपरिहार्य भाग्य का नियम समझकर स्वीकार कर लिया जाता है।

इस 'महान पैंथर' का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यह अपने असाधारण रूप से बड़े आकार के कारण जाना जाता था। माना जाता था कि यह नीले पहाड़ों के दुर्गम इलाकों से आया था, शायद अनाइकुट्टी या सेगुर से, और मोयार नदी (जिसे आमतौर पर मैसूर खाई कहा जाता है) के पार से आया था। इसने गाँव के मवेशियों पर हमला करना शुरू कर दिया, और बाघ की तरह गर्दन तोड़कर उन्हें मार डाला, इसलिए कुछ समय तक इसे बाघ ही समझा जाता रहा।

फिर, बढ़ते साहस के साथ, यह पैंथर मेरे मित्र ह्यूगी हेलस्टोन की जागीर में मौजूद उत्तम दुधारू गायों के झुंड को परेशान करने लगी। यह जागीर, मोयार वैली रेंच, एक उत्कृष्ट फार्म है, जो स्वाभाविक ही है, क्योंकि इसके मालिक एक असाधारण व्यक्तित्व हैं। पेशे से एक प्रतिभाशाली इंजीनियर, उनका दिमाग एक आविष्कारक की तरह तेज़ है—तेज़ी से सोचने और मूल्यों का आकलन करने में माहिर—और अपनी चतुराई से उन्होंने कई उपकरण और यांत्रिक सुधार विकसित किए हैं। इसके अलावा, ह्यूगी जन्मजात शिकारी हैं। उन्हें जंगल और उसके जानवर बेहद पसंद हैं, और उन्हें बंदूक चलाने या उसमें कुछ बदलाव करने में सबसे ज़्यादा खुशी मिलती है। यांत्रिक प्रतिभा और जंगल के प्रति प्रेम के इस दुर्लभ संयोजन से मोयार वैली रेंच का जन्म हुआ; क्योंकि अथक परिश्रम और कौशल, दृढ़ संकल्प और हर बाधा को पार करने की इच्छाशक्ति के साथ, ह्यूगी ने सचमुच घने जंगल के बीचोंबीच अपना रेंच बनाया।

विशाल वन वृक्षों को काटना और साफ करना आवश्यक था। ह्यूगी ने इस स्थिति का फायदा उठाते हुए उन्हें कोयले में परिवर्तित किया और फिर उसे ट्रकों में भरकर दूर-दराज के शहरों में बेचा। ईंटें, तराशे हुए पत्थर, सीमेंट, गारा और भवन निर्माण में प्रयुक्त अन्य सभी वस्तुएं भी उन्हीं स्थानों से मंगाई जाती थीं। बढ़ई भी बाहर से मंगाए गए, जिन्होंने ह्यूगी के कुशल मार्गदर्शन में, जल्द ही बेहतर वन-लकड़ी का उपयोग भवन निर्माण कौशल में कर लिया। देखते ही देखते एक आधुनिक इमारत खड़ी हो गई। पवनचक्की बैटरी-चार्जर के साथ, घर में बिजली की रोशनी, एक रेफ्रिजरेटर और कई आधुनिक सुविधाएं थीं। इसके अलावा, कृषि मशीनरी भी आयात की गई, जिससे मोयार वैली रेंच देखते ही देखते एक समृद्ध फार्महाउस बन गया।

ह्यूगी के कई व्यावसायिक हित हैं और वे अक्सर विदेश यात्रा करते हैं। कभी-कभी वे कुछ हफ्तों में लौट आते हैं, लेकिन कभी-कभी वे महीनों तक अनुपस्थित रहते हैं, और यह कहानी उनकी एक लंबी अनुपस्थिति से संबंधित है। उन्होंने बड़ी विनम्रता से मुझे किसी भी समय अपने फार्म पर आने का सौभाग्य दिया था, और विशेष रूप से मुझसे अपने पशुओं पर नज़र रखने का अनुरोध किया था। इसलिए एक दिन, जब हमें ह्यूगी के देखभालकर्ता, वर्गीस नामक व्यक्ति का पत्र मिला, जिसमें बताया गया था कि एक बड़े पैंथर ने ह्यूगी के सबसे अच्छे अल्सेशियन कुत्ते को मार डाला है, तो कुछ करना आवश्यक हो गया।

उस समय मैं किसी बहुत ज़रूरी और अहम काम में डूबा हुआ था और अगले दो हफ्तों तक छुट्टी लेना नामुमकिन था। वर्गीस का पत्र गाँव की डाक से हम तक पहुँचने में छह दिन लग चुके थे। लेकिन मेरे बेटे डोनाल्ड ने पैंथर से निपटने का ज़िम्मा उठाया और मैंने खुशी-खुशी उसे यह काम सौंप दिया। स्टडबेकर कार का एक

एक्सल एक महीने पहले टूट गया था और मैं अभी भी बॉम्बे से उसके बदले एक्सल के आने का इंतज़ार कर रहा था, इसलिए डोनाल्ड अपने दोस्त के घर कार उधार लेने के लिए जल्दी से चला गया।

इस बिंदु से मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि डोनाल्ड खुद ही बाकी की कहानी सुनाए, क्योंकि अभियान से लौटने पर उसे खरी-खोटी सुनाने के अलावा मैंने इस मामले में कोई और भूमिका नहीं निभाई।

जब पिताजी ने मुझे मुडियानूर जाने को कहा, तो पहली समस्या यात्रा के लिए कार ढूंढने की थी, क्योंकि उनकी स्टैडबेकर कार खराब पड़ी थी। इसलिए मुझे स्कूल के एक दोस्त रुस्तम दुधवाला का ख्याल आया। रुस्तम एक अच्छा इंसान है और उसके पास तीन-चार कारें हैं। थोड़ी सी बातचीत में उसे राजी करने में मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई। यात्रा के लिए ज़रूरी सामान इकट्ठा करने और पिताजी का भाग्यशाली बाघ-आशीर्वाद उधार लेने में मुझे सिर्फ चार घंटे लगे, जो उन्हें सालों पहले बुधिया नाम के एक जंगली आदमी ने दिया था। मुझे पता है कि पिताजी इस आशीर्वाद के बारे में बात नहीं करते, क्योंकि उन्हें लगता है कि लोग उनका मज़ाक उड़ाएंगे, लेकिन मुझे यह भी पता है कि उन्हें इस पर बहुत विश्वास है। आशीर्वाद असल में बांस के एक छोटे टुकड़े में लिपटा हुआ है, जिसे हाथी की पूंछ के बाल से बांधा गया है। इसके अंदर क्या है, यह मुझे नहीं पता। इसे गले में पहना जा सकता है, क्योंकि बांस एक डोरी से बंधा हुआ है, लेकिन पिताजी आमतौर पर इसे अपनी जेब में रख लेते हैं।

जाने से ठीक पहले मैंने अपने एक और दोस्त, सेड्रिक बोन को साथ ले जाने का सोचा। वह एक शौकीन फोटोग्राफ़र और अच्छे स्वभाव का व्यक्ति है, और मुश्किल परिस्थितियों में भी शानदार ढंग से रह सकता है। सेड्रिक आने के लिए तैयार हो गया, और जल्द ही हम तीनों मुडियानूर के लिए निकल पड़े। मैं अपने साथ .423 मौउज़र राइफल ले गया, जो पिताजी की पुरानी .405 विंचेस्टर राइफल से कहीं बेहतर है। वह खुद यह जानते हैं, लेकिन सभी पुराने ख्यालों वाले लोगों की तरह, उन्हें भी पुरानी चीज़ों से चिपके रहना पसंद है। मैं अपने साथ .3006 स्प्रिंगफील्ड राइफल भी लाया था, जिसे मैं खाने के लिए हिरण का शिकार करने के लिए रिजर्व राइफल के रूप में रखता था। मेरे पिताजी मुझे हिरण मारने के खिलाफ उपदेश देते रहते हैं और मैं उनकी बात सुनने का नाटक करता हूँ। जब वह आस-पास होते हैं, तो बेशक, ऐसा करना वर्जित है; लेकिन जब वह नहीं होते, तो मामला बिल्कुल अलग होता है।

'मुदियानूर जाने वाले रास्ते के आखिरी सत्रह मील बहुत खराब थे, और हमें वहाँ पहुँचने में लगभग आठ घंटे लग गए। वर्गीस ने मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया, हालाँकि मुझे लगा कि वह थोड़ा निराश था क्योंकि पिताजी साथ नहीं आए थे। आजकल यही समस्या है। मेरे जैसे युवाओं की अक्सर कद्र नहीं की जाती और बड़े-बुजुर्ग हमें कुछ हद तक गैरजिम्मेदार समझते हैं। वे भूल जाते हैं कि वे भी कभी जवान थे।'

खैर, वर्गीस ने हमें बताया कि गाँव के मवेशियों के अलावा, उस बड़े पैंथर ने तीन दिन पहले श्री हेलस्टोन की एक गाय को भी मार डाला था। इसलिए तत्काल समस्या यह थी कि कुछ अधपके बैलों के रूप में जीवित चारा खरीदा जाए, और इस उद्देश्य के लिए रुस्तम बहुत काम आया।

'मैं आपको रुस्तम के बारे में कुछ बताता हूँ। वह बाईस साल का है और पारसी है, जो भारत में शुरुआती फ़ारसी प्रवासियों के वंशज हैं। वह एक बहुत अमीर परिवार से आता है, जिसके पास मुंबई में लाखों रुपये की संपत्ति है, जिससे एक दिन में इतनी आमदनी होती है कि मुझे कई बार खरीदा जा सकता है। इसके अलावा, रुस्तम के पिता एक चतुर व्यापारी हैं, जिनकी आमदनी संपत्ति से होने वाली मासिक आमदनी से

भी अधिक है। वह बहुत ही खेल प्रेमी हैं और अपने बेटे से बहुत प्यार करते हैं, लेकिन कभी-कभी रुस्तम को शिकार पर जाने देने के मामले में वे बेवजह सख्त हो जाते हैं। जब ऐसा होता है, तो रुस्तम और मैं आमतौर पर अपने पिता को श्री दुधवाला से मिलने के लिए आमंत्रित करने का जुगाड़ कर लेते हैं, क्योंकि जब ये बुजुर्ग मिलते हैं और एक-दो घंटे बातचीत करते हैं, तो हमारी शिकार यात्रा पक्की हो जाती है।'

खैर, मैं आपको जो बता रहा था, उस पर वापस आते हैं। रुस्तम चार जवान बैल लाया, जिन्हें हमने उस जगह के पास अलग-अलग जगहों पर बांध दिया, जहाँ हाल ही में उस बड़े पैंथर ने शिकार किया था। इनमें से पहला हमने जंगल की सीमा रेखा के पास बांधा, जो श्री हेलस्टोन की जागीर से सटी हुई है। दूसरा हमने लगभग एक चौथाई मील दूर, घने बांस के जंगल से घिरी एक छोटी झील के पास बांधा। तीसरा हमने मुडियानूर गाँव के बाहरी इलाके में बांधा, और आखिरी मुडियानूर में आने वाले बैलगाड़ी के रास्ते पर ही बांधा। पिताजी हमेशा चारे के साथ अपना मचान लगाते हैं; लेकिन चूंकि वर्गीस ने श्री हेलस्टोन के पोर्टेबल मचान का उपयोग करने की पेशकश की थी, इसलिए मैंने शिकार होने के बाद ही अपना मचान लगाने का फैसला किया।

हमने अपने शिकार को सुरक्षित रखने के लिए उसके पिछले पैरों को जमीन में गाड़े गए मजबूत खूंटों से बांध दिया, क्योंकि जीवित शिकार के गले में रस्सी डालना एक गलती होती है। कभी-कभी तेंदुआ, और खासकर बाघ, गले में रस्सी बंधे जानवर पर हमला करने से हिचकिचाते हैं। वे गर्दन पकड़कर मारते हैं, और रस्सी को लेकर वे संशय में रहते हैं, क्योंकि यह उनके रास्ते में बाधा बन सकती है।

आखिरी समय में वर्गीस ने हमें बताया कि पिछले दो दिनों से बंगले के आसपास एक बाघ मंडरा रहा था। इसलिए, मैंने रस्सी की जगह श्री हेलस्टोन की चेन का इस्तेमाल उनके बंगले के पास जंगल की सीमा पर बंधे चारे को सुरक्षित करने के लिए किया। ऐसा इसलिए क्योंकि मुझे लगा कि अगर बाघ इस बैल को मार देता है तो वह रस्सी तोड़कर उसे ले जा सकता है। चूंकि कोई और चेन नहीं थी, इसलिए बाकी तीन चारे रस्सी से ही बंधे रहने दिए गए।

रुस्तम उस रात मुडियानूर गाँव के आसपास के खेतों में जंगली सूअर का शिकार करने जाना चाहता था, लेकिन मैंने उसे रोक दिया, क्योंकि गोली चलने से पैंथर घबरा सकता था। अगली सुबह, हमारे चारों शिकार ज़िंदा थे और हम निराश हो गए। लेकिन जैसा कि पिताजी ने मुझे सिखाया है, शिकार धैर्य का खेल है, इसलिए मैंने रुस्तम को चुप रहने और एक-दो दिन तक किसी भी प्रगति की उम्मीद न करने को कहा। तीसरी रात को बड़े तेंदुए ने बंगले के पास जंगल की सीमा पर बंधे बैल को मार डाला। संयोग से उसी रात बाघ ने जंगल के तालाब के पास बांसों के बीच बंधे दूसरे शिकार को भी मार डाला।

अब मेरे सामने एक मुश्किल खड़ी हो गई थी। मैंने मन ही मन कहा, "पैंथर भाड़ में जाए, मैं बाघ को मारूंगा।" लेकिन कुछ और बातें भी ध्यान में रखनी थीं: रुस्तम ने मुझे याद दिलाया कि मेरा मकसद उस पैंथर को मारना था जिसने मिस्टर हेलस्टोन के मवेशियों को मार डाला था। इसलिए पैंथर का शिकार करना मेरी जिम्मेदारी थी। मुझे पता था कि वह सही कह रहा है और पिताजी भी यही कहते। फिर भी, बाघ का शिकार करने का मौका गंवाना मुझे थोड़ा मूर्खतापूर्ण लग रहा था, और मैंने रुस्तम को पैंथर का शिकार करने के लिए मनाने की बहुत कोशिश की। लेकिन उसमें अपने पिता की कुछ व्यावसायिक समझ थी, और वह अपनी पुरानी दलीलों पर अड़ा रहा। इसलिए, जब मुझे एहसास हुआ कि मैं फंस गया हूं, तो मुझे हार माननी पड़ी।

'सेड्रिक ने मेरे साथ आकर बैठने का फैसला किया, क्योंकि उसे लगा कि मेरे साथ रहने से बड़े पैंथर को देखने की संभावना रुस्तम के साथ जाने की तुलना में

अधिक है। उसे लगा कि रुस्तम बहुत शोर मचाएगा और बाघ के शिकार के पास आने से पहले ही उसे भगा देगा।'

तो मैंने काम शुरू किया और श्री हेलस्टोन का पोर्टेबल मचान उस पेड़ पर टांग दिया जो मरे हुए बैल से लगभग तीस गज की दूरी पर था। रुस्तम ने भी ग्रामीणों से उस पेड़ पर मचान लगवाया जो उस जगह के पास था जहाँ दूसरे बैल को बाघ ने मारा था। मैं यह बताना भूल गया था कि इन चारों चारों को बांधते समय मैंने सावधानी बरती थी और उन्हें पेड़ों के पास बांधा था, ताकि बाद में मचान लगाने में कोई परेशानी न हो।

दोनों दल शाम करीब 4 बजे बंगले से निकले। रुस्तम को लंबी दूरी तय करनी थी, इसलिए वह और वर्गीस, अपने साथ सैंडविच, पानी की बोतल, टॉर्च, गर्म मफ़लर, कंबल और अन्य सामान लेकर तेज़ी से चल पड़े। सेड्रिक और मैं अपने खाने के पैकेट और एक पानी की बोतल के साथ जंगल की सीमा तक धीरे-धीरे चलते रहे। हमें लगा कि कंबल की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि मौसम गर्म लग रहा था।

किसी मचान पर बैठना बहुत उबाऊ होता है, और मुझे हमेशा एक जगह स्थिर रहना मुश्किल लगता है। मेरे पिताजी ने मुझे कई बार कहा है कि मूर्ति की तरह बैठना बहुत ज़रूरी है, लेकिन वे ऐसा कैसे करते हैं, यह मुझे नहीं पता। मैं उनके साथ कई बार बैठा हूँ और उनका तरीका है कि वे अपने पैर मोड़कर आराम से बैठ जाते हैं, पाइप पीते हैं, थर्मस से थोड़ी सी चाय पीते हैं, और फिर पूरी रात मूर्ति की तरह बैठे रहते हैं। लेकिन मेरे साथ तो तरह-तरह की चीजें होती हैं। मेरे पैरों में झनझनी होने लगती है, मेरी पीठ अकड़ जाती है और दर्द करने लगती है, और मच्छर मुझे बहुत परेशान करते हैं: वे न सिर्फ मुझे काटते हैं, बल्कि मेरे कानों और नाक में भी घुस जाते हैं और उनसे छुटकारा पाने का एकमात्र तरीका है कि जब वे खून चूसने के लिए बैठें, तब उन्हें ज़ोर से थप्पड़ मार दिया जाए। पिताजी कहते हैं कि मचान पर ऐसा करना ठीक नहीं है; लेकिन शायद वे भूल जाते हैं कि मेरा खून, जवान होने के कारण, शायद मच्छरों को उनके खून से ज़्यादा आकर्षित करता है। मुझे पूरा यकीन है कि आप समझ जाएंगे कि बूढ़े लोगों को युवा लोगों को यह बताने में काफी आनंद आता है कि उन्हें क्या नहीं करनी चाहिए।

खैर, जब शाम सात बजे अंधेरा हुआ, तब तक मच्छर हम दोनों, सेड्रिक पर बुरी तरह से हमला कर रहे थे। मैंने सेड्रिक को मच्छरों को मारने से मना किया था, शायद इसीलिए जब मैंने ऐसा किया तो उसने मुझे एक-दो बार धक्का दिया। समय बीतता गया, और फिर लगभग पौने आठ बजे, हमने एक लंबी सी वस्तु देखी, जो अंधेरे में भूरे रंग की दिख रही थी, मानो कहीं से प्रकट हुई हो। मुझे यह स्पष्ट करना होगा कि, हालांकि चाँद नहीं था, चारों ओर तारों की हल्की रोशनी थी जो जंगल में हमेशा अधिक चमकते हुए दिखाई देते हैं। कम से कम इतनी रोशनी तो थी कि बड़े पेड़ और वह भूरी वस्तु दिखाई दे रही थी, लेकिन मुरा हुआ बैल नहीं, जो काला था। खैर, वह भूरी आकृति उस जगह की ओर बढ़ी जहाँ बैल पड़ा था, और थोड़ी देर बाद हमने ज़ंजीर की खड़खड़ाहट सुनी, उसके बाद खाने की आवाज़ और हड्डियों के चटकने की आवाज़ आई। धीरे-धीरे मैंने अपनी राइफल कंधे पर उठाई, लेकिन किस्मत से राइफल की नली से बंधी मेरी टॉर्च पेड़ से टकरा गई और हल्की सी आवाज़ हुई। शिकार की दिशा से एक ज़ोरदार गुर्राहट सुनाई दी और वही धूसर वस्तु जंगल की सीमा पार करके मेरी बाईं ओर चलने लगी। थोड़ी देर में वह गायब हो गई, और फिर लगभग दस मिनट बाद, मेरी दाईं ओर, लगभग हमारे नीचे, फिर से दिखाई दी। मुझे चाटने की आवाज़ सुनाई दी, और ऐसा लगा कि पैंथर वहाँ अपने पिछले पैरों पर बैठा है। इस बार मैंने राइफल को ठीक से निशाना बनाया और अपनी टॉर्च का स्विच

दबाया। तेज़ रोशनी से पैंथर ज़मीन पर कुत्ते की तरह बैठा हुआ दिखाई दिया, जो मुश्किल से बीस गज दूर था। उसने मेरी ओर देखा, और मैंने तुरंत निशाना साधकर ट्रिगर दबा दिया। मेरी सबसे अच्छी दोस्त, .432 राइफल, दहाड़ उठी, और पैंथर एक तरफ गिर गया। मुझे लगा कि अब वह मर चुका है, लेकिन फिर वह अचानक उठा और उस पेड़ के नीचे जंगल में कूद गया जहाँ हम बैठे थे।

यह सब होते हुए सेड्रिक बहुत उत्साहित था, क्योंकि पैंथर के गायब होते ही वह नीचे उतरने के लिए तैयार हो गया। मैंने उसे रोका, और उसने कहा, "चलो, उसके पीछे चलते हैं।" लेकिन मैंने उसे मूर्खता न करने के लिए कहा और कहा कि बेहतर होगा कि हम सुबह तक इंतज़ार करें।

हम वहाँ करीब एक घंटे और बैठे रहे। मच्छर इतने असहनीय हो गए कि हमने नीचे उतरकर बंगले में वापस जाने का फैसला किया। मैं पहले नीचे उतरा और सेड्रिक ने मुझे राइफल थमा दी। फिर वह पानी की बोतल लेकर मेरे पीछे आया। आखिरी छह फीट उसने छलांग लगाकर पार किए और जैसे ही वह धड़ाम से जमीन पर गिरा, पास से एक भयानक दहाड़ सुनाई दी। मैं मुड़ा और टॉर्च जलाकर राइफल को आवाज की दिशा में तान दिया, लेकिन हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। कुछ मिनट इंतजार करने के बाद, हम कुछ कदम आगे बढ़े, लेकिन वहां लैंटाना की झाड़ियाँ बहुत घनी थीं और अंधेरे में आगे बढ़ना असुरक्षित लग रहा था। फिर हम उस जगह गए जहां पैंथर बैठा था जब मैंने गोली चलाई थी, और खून के निशान ढूंढने लगे।

टॉर्च की रोशनी में कोई निशान नहीं दिख रहा थी और मेरे मन में यह चिंताजनक ख्याल आया कि शायद मेरी गोली पैंथर को पूरी तरह से चूक गई हो। मैंने दबी आवाज़ में सेड्रिक से इस बारे में बात की, लेकिन उसे पूरा यकीन था कि मेरी गोली पैंथर को लगी थी। फिर भी, मुझे संदेह था और आखिरकार हमने मचान पर वापस जाने का फैसला किया, इस बहुत कम संभावना के साथ कि शायद मेरी गोली चूक गई हो और पैंथर बाद में अपने शिकार के पास लौट आए।

मच्छरों और सुबह होते ही शुरू हो चुकी भीषण ठंड के कारण बाकी की रात बेहद असहज रही। फिर भी हमने हिम्मत नहीं हारी और भोर होते ही हम दोनों बेहद उदास और निराश हो गए। हम पेड़ से नीचे उतरे और लगभग एक घंटे तक नीचे हरी घास पर लेट गए, ताकि सूरज को उगने का मौका मिले और हमारी अकड़ी हुई मांसपेशियां ढीली हो जाएं। फिर, सात बजने के कुछ ही देर बाद, हमने गंभीरता से खून के निशान ढूंढना शुरू किया। थोड़ी देर में मुझे तसल्ली मिली जब मुझे कुछ बूंदें मिलीं जहाँ पैंथर लैंटाना में घुसा था, और फिर झाड़ियों के अंदर लगभग चालीस गज़ की दूरी पर काफी मात्रा में खून मिला। अब यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया था कि उसे बुरी तरह चोट लगी थी और वह यहीं लेट गया था; और यह भी कि पिछली रात जब सेड्रिक पेड़ से नीचे कूदा था, तब इतनी जोर से गुर्राने वाला वही पैंथर था। दरअसल, यह समझ में आया कि पैंथर ने उस समय हम पर हमला नहीं किया था और हमें सोते हुए पकड़ लिया था।

'सेड्रिक ने उस जगह की तस्वीर खींची। वह उन कैमरा प्रेमियों में से एक है जो लगभग हर चीज की तस्वीरें खींचते हैं।'

मैंने देखा कि इस बिंदु से सौ गज से भी अधिक दूरी तक खून का निशान दिखाई दे रहा था। इस दूरी के भीतर वह एक बार फिर लेट गया, जिससे यह पुष्टि हो गई कि उसे गंभीर चोट लगी थी। फिर खून का निशान धुंधला हो गया, शायद इसलिए कि वसा, या झिल्ली के एक टुकड़े ने गोली के छेद को ढक लिया था और बाहरी रक्तस्राव को रोक दिया था।

'झाड़ियाँ काफ़ी घनी थीं और हमने हर जगह ध्यान से तलाशा, लेकिन कोई पैंथर नहीं मिला। जंगल की सीमा रेखा आगे बढ़ती रही, और मैं उसके किनारे-किनारे चलता रहा, लैंटाना की झाड़ियों में झाँकते हुए उस जानवर को देखने की उम्मीद कर रहा था।'

मैं शायद सौ गज और आगे बढ़ गया था, सेड्रिक लगभग बीस कदम की दूरी पर अपने कैमरे के साथ जंगल की खुली सीमा के किनारे-किनारे चल रहा था, तभी अचानक यह घटना घटी। ज़ाहिर है, पैंथर खुले मैदान के दूसरी तरफ एक झाड़ी के नीचे छिपा हुआ था और मेरी नज़र से बच गया था। उसने मेरे गुज़र जाने का इंतज़ार किया और फिर, अपनी खास खाँसी भरी आवाज़ के साथ, मुझ पर हमला कर दिया। सेड्रिक लगभग उसी जगह पर था जहाँ पैंथर छिपा हुआ था, और यह एक रहस्य है कि कैसे पैंथर ने उसे नहीं देखा और मुझ पर हमला करने के बजाय उस पर हमला कर दिया, और यह सेड्रिक के लिए बहुत बड़ी किस्मत की बात है। शायद पैंथर मुझे देखने और अपने अचानक हमले की तैयारी में व्यस्त था। खैर, उसने हमला तो किया, लेकिन उस खाँसी भरी आवाज़ को सुनकर मैं समय रहते पलट गया और उसे आते हुए देख लिया। सौभाग्य से, पिछली रात मेरी चलाई गोली ने उसके दाहिने अगले पैर को चकनाचूर कर दिया था, जो घिसटता हुआ आगे बढ़ता गया।

मैंने अपनी राइफल को अपने बाएं कंधे पर रखा—जहां से मैं गोली चलाता हूं—मैंने ट्रिगर दबाया और गोली उसके गले में जा लगी। वह आगे की ओर सीने के बल गिर पड़ा, अभी भी जोर से गुर्रा रहा था, और इससे मुझे दूसरी गोली चलाने का समय मिल गया।

तभी मैंने देखा कि सेड्रिक मेरे ठीक पीछे था और उत्साह से झूम रहा था। वह मेरी सीधी गोलीबारी की चपेट में आ गया था, और हो सकता है कि मैंने पैंथर की जगह उसे ही गोली मार दी होती। लेकिन इस अद्भुत उत्साही ने हमले की तस्वीर खींच ली। सेड्रिक में इतनी हिम्मत कैसे आई कि उसने तस्वीर खींची, जबकि सौ में से निन्यानवे आदमी, जो उसके जैसे निहत्थे थे, दुम दबाकर भाग जाते, यह मेरी समझ से परे है। इससे बस यही पता चलता है कि फोटोग्राफी के प्रति उसके जुनून ने उसे बाकी सब कुछ भुला दिया। वह मुझे बताता है कि उसने बस कैमरा निशाना लगाया और बिना सोचे-समझे शटर दबा दिया।

जब हम खुशखबरी सुनाने के लिए बंगले पर लौटे, तो हमने पाया कि रुस्तम और वर्गीस पहले ही वापस आ चुके थे, वे लगभग 2 बजे तक जागे रहे थे। इस समय तक मच्छर उन पर हावी हो चुके थे, और चूंकि बाघ दिखाई नहीं दिया था, इसलिए रुस्तम और उसके साथी ने दिन का काम समाप्त करने और झपकी लेने के लिए बंगले पर वापस जाने का फैसला किया था।

'हम पैंथर को नौ बजे तक अंदर ले आए और लगभग एक घंटे में उसकी खाल उतार ली। यह काफी बड़ा नर पैंथर निकला, जिसकी नाक से पूंछ तक की लंबाई 7 फुट 8 इंच थी।'

दोपहर का भोजन जल्दी करने के बाद, मैंने रुस्तम से कहा कि हमें उस बैल को देखने जाना चाहिए जिस पर वह बैठा था। मैं आपको यह बताना नहीं भूलूंगा कि इस बीच, वर्गीस ने तीसरे और चौथे जानवर का पता लगाने के लिए कुछ लोगों को भेजा था। वे लोग लौटकर हमें यह सूचना देने आए कि दोनों जानवर अभी भी जीवित हैं।

जब हम रुस्तम के मचान पर पहुँचे, तो हमने पाया कि बाघ अपने शिकार के पास लौट आया था, संभवतः रुस्तम के नीचे उतरने के बाद सुबह तड़के। शायद वह देख रहा था और उसे पता चल गया था कि रुस्तम ऊपर है। बाद में जब आसपास

कोई नहीं था, तो वह देर रात का भोजन करने वापस आया था। बैल का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा खा चुका था।

रुस्तम बेहद निराश था, लेकिन उसने फिर से उठने का पक्का इरादा कर लिया था। तभी मुझे एक विचार आया। समझदारी से, या नासमझी से, मैंने वर्गीस को एक आदमी के साथ हमारा चौथा चारा लाने भेजा, जिसे मुडियानूर गाँव की ओर जाने वाले रास्ते पर बाँधा गया था। उस जानवर को लाने में लगभग दो घंटे लगे, और हमने उसे पुराने शिकार के अवशेषों से लगभग तीस कदम दूर बाँध दिया। ऐसा करने के पीछे मेरी यह उम्मीद थी कि अगर बाघ पुराने शिकार पर लौटने में हिचकिचाए, जो दो दिन से मरा पड़ा था और बुरी तरह बदबू मार रहा था, तो शायद वह उस पर हमला कर दे। रुस्तम ने इस योजना का विरोध किया, क्योंकि उसे लगा कि बाघ एक दिन पहले मरे हुए बैल की जगह एक ज़िंदा बैल को देखकर डर जाएगा। लेकिन मुझे लगा कि जोखिम लेना उचित होगा।

शाम करीब 5:30 बजे, हम तीनों, रुस्तम, सेड्रिक और मैं, मचान में घुस गए। हमने पहले से ही छिपने के लिए ताज़ी हरी पत्तियाँ बिछा रखी थीं, क्योंकि पिछली रात की पत्तियाँ गर्मी से मुरझा गई थीं। रुस्तम को पहली तस्वीर लेनी थी, और मैं उसके बाद। सेड्रिक ने एक और रोमांचक तस्वीर लेने की उम्मीद में अपने प्यारे कैमरे में फ्लैश बल्ब और रिफ्लेक्टर लगा रखा था।

शाम ढलते ही पास के तालाब से तरह-तरह के अनगिनत कीड़े-मकोड़े निकलकर हमारी ज़िंदगी को मुश्किल बना देते थे। लेकिन हम जवान थे और बेहद उत्सुक थे। रुस्तम लंबे समय से बाघ का शिकार करने के मौके का इंतजार कर रहा था।

आठ बज गए, फिर नौ और दस, लेकिन थोड़ी देर बाद हमें बाघ की कराहने की आवाज सुनाई दी, जो तालाब से लगभग एक मील दूर पहाड़ी से नीचे उतर रहा था। लगभग पैंतालीस मिनट बीत गए, तभी हमारे बाईं ओर घने बांसों के बीच से एक ककार ने कर्कश आवाज़ निकाली। यह स्पष्ट था कि बाघ आ रहा था, और हम सभी तीव्र उत्साह से भर गए थे।

हम इंतज़ार करते रहे। यहाँ पिछली रात मेरे मचान की तुलना में बहुत ज़्यादा अँधेरा था, क्योंकि यहाँ बाँस थे। मैंने रुस्तम से फुसफुसाकर कहा कि वह तब तक इंतज़ार करे जब तक बाघ या तो ज़िंदा बैल पर हमला न कर दे या अपने पुराने शिकार के पास वापस न आ जाए, तब मैं टॉर्च से निशाना लगाने में उसकी मदद करूँगा। सौभाग्य से, ज़िंदा बैल सफ़ेद रंग का था, और हम उसे धुंधला-सा देख पा रहे थे, और उसकी गुर्राहट और छटपटाहट सुन पा रहे थे, क्योंकि वह अपने पैर को रस्सी से छुड़ाने की कोशिश कर रहा था। यह स्पष्ट था कि उस जानवर को आने वाले खतरे और अपने अंजाम का कुछ आभास ज़रूर हो गया होगा।

दस मिनट तक सन्नाटा छाया रहा। फिर एक गहरी "भौंक" की आवाज़ आई और बाघ ज़िंदा बैल पर झपटा। रुस्तम दबी हुई उत्तेजना से काँप रहा था, लेकिन मैंने उसे शांत रखने के लिए उसका कंधा कसकर पकड़ लिया। उसके बाद बैल के गले से एक कर्कश गड़गड़ाहट की आवाज़ आई और उसकी गर्दन की हड्डियाँ चटक गईं और शव ज़मीन पर गिर पड़ा।

मैंने रुस्तम के कंधे पर अपनी पकड़ बनाए रखी। लगभग दस मिनट तक सन्नाटा छाया रहा, फिर बाघ ने बैल के पिछले हिस्से को काटना शुरू कर दिया, ताकि उसके अंदरूनी अंगों को फाड़कर बाहर निकाल सके।

फिर भी हम इंतजार करते रहे, और तभी हमें झिल्ली फटने की खरोंच जैसी आवाज सुनाई दी, जब बाघ ने बैल की आंतें बाहर निकालना शुरू किया। मैंने

अनुमान लगाया कि अब तक उसका पूरा ध्यान अपने शिकार पर केंद्रित हो गया होगा; इसलिए मैंने धीरे से रुस्तम के कंधे से अपनी पकड़ ढीली की और उसे गोली चलाने के लिए तैयार होने का इशारा किया।

'उसने अपनी राइफल उठाई, जैसे मैंने उठाई। लगभग दस सेकंड बाद मैंने अपनी टॉर्च का बटन दबाया। जैसे ही रोशनी निकली, बाघ, जो अपने शिकार पर हमारी ओर करवट लेकर लेटा हुआ था, मुड़ा और ऊपर देखा। उसी क्षण रुस्तम ने भी अपनी टॉर्च जला दी, और दोनों किरणों में बाघ साफ दिखाई दे रहा था, जैसे वह हमें घूर रहा हो। सेकंड बीतते गए, और मैं सोचने लगा कि क्या रुस्तम गोली चलाने वाला है। तभी, जैसे ही मैं ट्रिगर दबाने वाला था, दो बैरल वाली .405/400 राइफल की दहाड़ ने रात को चीर दिया।'

रुस्तम ने दोनों बैरल एक साथ चलाए थे, और उस भारी हथियार का झटका काफी जोरदार रहा होगा; मैंने उसे ज़ोर से पीछे की ओर गिरते हुए महसूस किया। फिर भी, दोनों गोलियां निशाने पर लगीं और कंधे के ठीक ऊपर बाघ की गर्दन में जा लगीं। जानवर ज़ोर से कांप उठा और फिर आगे की ओर गिर गया, मानो सो रहा हो। पूंछ कुछ बार फड़फड़ाई और फिर स्थिर हो गई। रुस्तम ने अपना पहला बाघ मार गिराया था।

'हमने आधे घंटे और इंतज़ार किया, लेकिन जानवर में कोई हलचल नहीं हुई; इसलिए हम मचान से नीचे उतर गए, टॉर्च की रोशनी बाघ पर ही टिकाए रखी। लेकिन वह ज़रा भी नहीं हिला। यह स्पष्ट था कि बाघ मर चुका था। जाँच करने पर रुस्तम यह देखकर बहुत खुश हुआ कि उसने एक शानदार नर बाघ को मार गिराया था, जिसकी लंबाई नाक से पूँछ तक 9 फुट 4 इंच थी।'

और इस तरह हम बेहद खुश होकर बैंगलोर लौट आए। रुस्तम को उसका बाघ मिल गया था, और मैं श्री हेलस्टोन के जानवरों को परेशान कर रहे पैंथर को मारने में कामयाब हो गया था। लेकिन हम तीनों में से मुझे लगता है कि सेड्रिक बोन सबसे ज्यादा खुश था क्योंकि उसने एक बेहद भाग्यशाली तस्वीर खींची थी और एक भयानक हमले से बाल-बाल बच गया था, अगर पैंथर ने मुझ पर हमला करने के बजाय उस पर हमला किया होता तो उसकी जान भी जा सकती थी।

मैंने पिताजी को पूरी कहानी सुनाई और उन्होंने हम दोनों को बधाई दी। लेकिन उस समय उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि सेड्रिक पैंथर और मेरी राइफल की गोली से बाल-बाल कैसे बचा था।

अगले दिन, जब उन्होंने तस्वीर देखी, तो उन्होंने बहुत सी अपमानजनक बातें कहना शुरू कर दिया। उस समय मुझे लगा कि वे कुछ ज्यादा ही कठोर और अनुचित थे; लेकिन अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि वह बूढ़ा आदमी सही था।

'मैंने दो बड़ी गलतियाँ की थीं। पहली, मैंने झाड़ियों में ठीक से नहीं देखा था और पैंथर को देखे बिना ही उसके पास से गुजर गया था। दूसरी, उत्तेजना में मैंने सीधे अपनी गोली की दिशा में लगभग बीस कदम की दूरी पर खड़े एक इंसान पर गोली चला दी थी। कहते हैं कि किस्मत नौसिखिए का साथ देती है, और इस मामले में भी ऐसा ही हुआ।'

आठ

राजनगर का हमलावर

इस कहानी को सुनाए जाने के समय (नवंबर 1995), वह 'खूंखार जानवर' अभी भी जीवित है, और उसे पकड़ने के मेरे सभी प्रयासों को विफल कर चुका है। न केवल मेरे प्रयासों को, बल्कि दो साल से अधिक समय तक कई अन्य शिकारियों के प्रयासों को भी।

यह हमलावर बाघ अपने आप में एक अनोखा बाघ है, क्योंकि इसकी आदतें बाघों से बिल्कुल अलग हैं और यह ऐसे इलाकों में रहता है जहाँ कई सालों से किसी बाघ के होने का कोई आभास नहीं है। इसकी आदतें बाघों से अलग इसलिए हैं क्योंकि इसके पहले के रिकॉर्ड में केवल मनुष्यों को अपने अगले पैरों से खरोंचकर घायल करने तक ही सीमित हैं। इस बाघ द्वारा किए गए ऐसे हमलों के तैंतीस मामले दर्ज हैं, जिनमें इसके शिकार मुख्य रूप से चरवाहे थे। किसी भी मामले में इसने अपने शिकार को न तो काटा और न ही मारा। हर मामले में इसने आदमी के सिर से लेकर चेहरे और गर्दन तक, और छाती और पीठ पर बुरी तरह खरोंचें मारीं।

इस व्यवहार को देखकर पहले तो मुझे लगा कि जिसे बाघ कहा जा रहा था, वह असल में एक 'तेंदुआ' ही था। लेकिन बाद में जब मैंने उसके कई पीड़ितों से पूछताछ की, तो उन सभी ने पुष्टि की कि हमला करने वाला बाघ ही था, न कि कोई तेंदुआ।

मुझे यह भी लगा कि जानवर के जबड़े, मुंह या चेहरे के किसी हिस्से में चोट लगी होगी, जिससे वह अपने शिकार को काटकर पूरी तरह से हमला नहीं कर पाया होगा। चरवाहों ने इस सिद्धांत को पूरी तरह से खारिज कर दिया और बताया कि दो साल के दौरान उसी बाघ ने उनके दो सौ से अधिक मवेशियों को मारकर खा लिया था। उन्होंने घटना के बाद कई शिकारों की जांच की थी और किसी भी मामले में ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जिससे यह पता चले कि बाघ अपने दांतों का ठीक से इस्तेमाल करने में असमर्थ था। उसने न केवल बाघों की तरह गर्दन तोड़कर अपने शिकार को मारा था, बल्कि प्रत्येक जानवर को बहुत ही सामान्य और पूरी तरह से खाया था।

इस जानवर के बारे में अगली अजीब बात यह थी कि उसने अपने शिकार की शुरुआत जंगल के एक ऐसे हिस्से से की थी जो बाघों के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त था, जिसमें छोटी झाड़ियाँ और कांटेदार वनस्पतियाँ थीं: पथरीली, लहरदार पहाड़ियाँ

जिनके बीच-बीच में पत्थरों से भरी हुई खड़ी ढलान वाली छोटी नादेयाँ बहती थीं, जिनके किनारों पर लंबी घास और कहीं-कहीं बांस के झुंड थे। यह ज्ञात था कि इस क्षेत्र में अक्सर पैंथर घूमते थे, और उन्हें यहाँ से गुज़रने वाली मुख्य सड़क पर भी देखा गया था; लेकिन बाघ के बारे में मौजूदा पीढ़ी को कोई जानकारी नहीं थी।

यह वन क्षेत्र उत्तरी कोयंबटूर जिले में डिंबम ढलान के ठीक दक्षिण में स्थित है। डिंबम से 2,500 फीट से अधिक की तीव्र ढलान आपको इस शुष्क झाड़ीदार क्षेत्र में ले जाती है, जहाँ जगह-जगह ताड़ के पेड़ दिखाई देते हैं और मुख्य रूप से कांटेदार झाड़ियाँ और लैंटाना झाड़ियाँ पाई जाती हैं। अन्य वन्यजीव भी दुर्लभ हैं, जिनमें कुछ मोर और कभी-कभार दिखने वाली जंगली भेड़ें ही शामिल हैं। यह क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा है, उत्तर से दक्षिण तक लगभग पाँच मील और पूर्व से पश्चिम तक लगभग तीस मील लंबा है, जहाँ यह भवानी नदी से मिलता है, जो अंततः कावेरी नदी में मिल जाती है।

हमें बताया गया है कि यह बाघ मूल रूप से नीलगिरी के जंगलों से आया था, भटकते हुए मोयार नदी तक पहुंचा और फिर इस क्षेत्र में बस गया। इस इलाके के प्रति इसका लगाव आसानी से समझा जा सकता है, क्योंकि यह क्षेत्र छोटे-छोटे पशुपालन के बाड़ों से भरा हुआ है और सैकड़ों मवेशियों को चराने के लिए पूरी तरह से समर्पित है। इसलिए, प्राकृतिक जंगली जानवरों की कमी की भरपाई पालतू जानवरों की बड़ी संख्या से हो जाती है, जो किसी भी बाघ के लिए कहीं अधिक आसान शिकार होते हैं।

कहा जाता है कि शुरुआती दौर में बाघ सामान्य रूप से शिकार करता था, अपने शिकार को सामान्य रूप से खाता था और जब क्रोधित चरवाहे उसे उसके शिकार से भगा देते थे, तो वह सामान्य रूप से भाग जाता था। लेकिन, जैसा कि पुरानी कहावत है, 'किसी भी चीज़ की अति बुरी होती है!' या कम से कम, इस बाघ को ऐसा ही लगता था। चरवाहों ने स्पष्ट रूप से उसके लिए बहुत अधिक परेशानी खड़ी कर दी थी, क्योंकि वे बार-बार उसे उसके शिकार से भगाते थे।

पहला हमला, जैसा कि अक्सर होता है, एक चरवाहे लड़के पर हुआ जिसने दुस्साहस करते हुए बाघ पर पत्थर फेंका था, ठीक उसी समय जब बाघ एक अच्छी-खासी मोटी गाय को मारकर घसीट रहा था। बताया जाता है कि पत्थर बाघ के पेट में लगा; बाघ ने गाय को छोड़ दिया और लड़के पर हमला कर दिया, जिसके चेहरे और छाती पर उसने बुरी तरह खरोंचें मारीं। फिर वह वापस गया और गाय को ले आया, जिसे उसने बाद में शांति से खाया।

बाद में कई बार चरवाहों और लड़कों ने उसे उन जानवरों से दूर भगाने की कोशिश की जिन्हें उसने मार डाला था, या ले जा रहा था, या खा रहा था। हर बार बाघ ने घुसपैठिए पर हमला किया और उसे खरोंच दिया।

स्वाभाविक रूप से, जैसे-जैसे ऐसे हमले बढ़ते गए, वह और भी अकेला होता चला गया। वह स्पष्ट रूप से एक बहुत ही बुद्धिमान बाघ था और इस निष्कर्ष पर पहुँच गया था कि घुसपैठियों को मारना नहीं, बल्कि उन्हें खरोंचना उसके लिए अधिक लाभदायक था; क्योंकि इसके बाद वे उसे बिना किसी बाधा के अपने शिकार को खाने के लिए छोड़ देते थे।

और इस तरह समय बीतता चला गया। लगभग दो साल बीत चुके थे और उसके खरोंचों के शिकार लोगों की संख्या बढ़कर तैंतीस हो गई। इनमें से ग्यारह लोगों की मौत बाघ के पंजों में मौजूद सड़े हुए पदार्थ से उत्पन्न रक्त विषाक्तता के कारण हुई। लेकिन इन मौतों को निश्चित रूप से बाघ द्वारा जानबूझकर की गई मौत नहीं माना जा सकता। ये तो हमले का केवल एक अप्रत्यक्ष परिणाम थीं।

और फिर, जुलाई 1955 में, पहला व्यक्ति वापस नहीं लौटा। यह ज्ञात था कि उस पर बाघ ने हमला किया था, क्योंकि उसकी मदद के लिए चीखों ने पास खड़े एक अन्य चरवाहे को यह जानकारी दी थी। यह व्यक्ति स्वाभाविक रूप से भाग गया था। पहले के मामलों में, पीड़ित आमतौर पर लड़खड़ाते हुए मुख्य सड़क या मवेशी गांव तक पहुंचने में कामयाब हो जाते थे, जो भी पास होता था। लेकिन यह पीड़ित वापस नहीं लौटा। लगभग दो घंटे बाद एक खोज दल उसकी तलाश में निकला। वे उस स्थान पर पहुंचे जहाँ हमला हुआ था। इस बार उन्हें मरी हुई गाय तो मिली, लेकिन चरवाहा नहीं मिला। दल में आगे खोज करने का साहस नहीं था, और चरवाहा फिर कभी नहीं मिला।

लगभग आधा दर्जन और हमले हुए, जिनमें से तीन में पीड़ित हमेशा की तरह बुरी तरह से खरोंचे हुए मिले। लेकिन बाकी तीन नहीं मिले। और न ही उन्हें फिर कभी देखा गया। इसलिए, जिस समय मेरी कहानी वास्तव में शुरू होती है, उस समय आधिकारिक आंकड़ा चार हत्याओं और छत्तीस घायलों का था; हर मामले में घायल केवल खरोंचों से ही हुए थे। क्या बाघ ने वास्तव में उन चार आदमियों को खाया था जिन्हें उसने संभवतः मार डाला था, या केवल उन्हें जंगल के किसी दूरदराज़ के हिस्से में घसीट कर ले गया था, जहां बाद में उन्हें सियार, लकड़बग्घे और गिद्धों ने खा लिया था, यह जानने का कोई साधन नहीं था।

मैंने अखबारों में कभी-कभार इस जानवर की हरकतों के बारे में पढ़ा था, लेकिन वन अधिकारियों से आधिकारिक रिपोर्ट मिलने तक मुझे कोई विस्तृत जानकारी नहीं थी। लगभग इसी समय मेरे पास कुछ दिनों की छुट्टी भी बची थी और मैंने सोचा कि इस बाघ को पकड़ने की कोशिश में इसका सदुपयोग करना सबसे अच्छा रहेगा।

मेरे पास मौजूद वन मानचित्र और प्राप्त जानकारी के आधार पर, यह संकेत मिला कि मेरा मुख्यालय बनाने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान राजनगर नामक छोटा सा गाँव होगा, जहाँ एक छोटा सा वनगृह था जो मुझे और मेरे सामान को आश्रय प्रदान करेगा। यह स्थान, डिंबुम होते हुए, बैंगलोर से ठीक 147 मील दूर है, और सड़क अच्छी होने के कारण, मैं अपनी स्टैंडबेकर कार से लगभग चार घंटे में, शाम लगभग चार बजे वहाँ पहुंच गया।

मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि आगे कितना रोमांचक समय आने वाला है। मैं राजनगर से सिर्फ दो मील दूर था और सूखे झाड़ीदार इलाके से होते हुए सड़क पर गाड़ी चला रहा था, तभी मैंने अपने सामने तीन आदमियों को देखा, जिनमें से एक को बाकी दो सहारा दे रहे थे। जैसे ही मैं उनके पास पहुंचा, मैंने देखा कि बीच वाला आदमी खून से लथपथ था। कारण जानने के लिए रुकने पर मुझे पता चला कि कुछ ही मिनट पहले उस पर एक अनजान बाघ ने हमला किया था और उसे बुरी तरह खरोंच दिया था। और पूछताछ करने पर पता चला कि बाघ ने छुपकर उस पर हमला किया था। पीड़ित ने बताया कि इससे पहले कि उसे पता चलता कि वह खतरे में है, उसने एक धीमी सी गुर्राहट सुनी; फिर बाघ उसके बगल में प्रकट हुआ, अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और उसके चेहरे और छाती पर बुरी तरह खरोंच दिया। वह बाघ के ऊपर गिर पड़ा और मदद के लिए चिल्लाया। फिर बाघ उसे छोड़कर आसपास घूम रहे मवेशियों की ओर दौड़ पड़ा। जब वह खून से लथपथ जमीन पर पड़ा था, तब उसने देखा कि बाघ ने एक अधेड़ भूरे बैल को मार डाला और फिर उसे घसीटकर ले गया। चूंकि कोई उसकी सहायता के लिए नहीं आया, इसलिए वह किसी तरह उठ खड़ा हुआ और मदद के लिए चिल्लाते हुए सड़क की ओर लड़खड़ाता हुआ बढ़ा। उसके दोनों साथी थोड़ी देर बाद उसके पास आ पहुंचे।

मैंने इस अवसर को ईश्वर का वरदान समझा और तुरंत कारवाई करने का निर्णय लिया। मैंने उससे अपने साथियों को हमले की सही जगह बताने को कहा। उसने मुझे जगह बता दी, और फिर मैंने एक व्यक्ति को अपने साथ घटनास्थल पर चलने के लिए कहा, जबकि दूसरा पीड़ित को लेकर राजनगर चला गया।

अब उन दोनों के बीच तीखी बहस छिड़ गई, दोनों ने गांव में ज़रूरी काम होने का बहाना बनाया। यह साफ़ था कि दोनों में से कोई भी बाघ से सामना करने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। इसके लिए मैं उन्हें दोष नहीं दे सकता था, क्योंकि बाघ अपनी क्रूरता पहले ही दिखा चुका था, जबकि मैं उनके लिए बिल्कुल अजनबी था। उन्हें इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि बाघ के आने पर मैं भाग नहीं जाऊंगा और अपने साथी को उसके चंगुल में नहीं छोड़ दूंगा।

बहुत मिन्नतें करने, दबाव डालने और यहां तक कि धमकियों के बाद, आखिरकार मैंने एक आदमी को बहुत अनिच्छा से मेरे साथ आने के लिए राजी कर लिया, जबकि दूसरा घायल आदमी के साथ आगे बढ़ गया।

फिर मैं और मेरा साथी सड़क छोड़कर जंगल में चले गए। पूरे रास्ते हमें हाल ही में घायल हुए उस आदमी के खून के छींटे दिखाई दिए। चट्टानी इलाके को पार करते समय ये छींटे बहुत अधिक थे, जिससे मुझे एहसास हुआ कि मेरी जल्दबाजी में हुई बातचीत के दौरान मैंने जितना सोचा था, उससे कहीं अधिक गंभीर रूप से वह घायल हुआ था। मुझे लगने लगा कि मुझे उसे अपनी कार में सत्यमंगलम ले जाना चाहिए था, जहाँ अस्पताल था, बजाय इसके कि उस बेचारे को जैसे-तैसे वहाँ पहुंचने के लिए छोड़ दूं। हालांकि, मेरी इस लापरवाही के बावजूद, मेरे पास उस बाघ से आमने-सामने मिलने और हिसाब बराबर करने का एक अनूठा अवसर था।

थोड़ी देर बाद हम उस जगह पर पहुँचे जहाँ बाघ ने उस आदमी पर हमला किया था। पगडंडी पर पड़ी रेत खुद ही कहानी बयां कर रही थी। हम उस जगह को खोजने लगे जहां बाघ ने भूरे बैल को मारा था, और जल्द ही वह जगह लगभग तीस गज दूर मिल गई। मेरा साथी अब आगे जाने से मना कर रहा था, और मैं भी नहीं चाहती था कि वह जाए, क्योंकि वह स्वाभाविक रूप से बहुत डरा हुआ था और आगे जाना उसके लिए मददगार से कहीं ज़्यादा बोझ होता। इसलिए मैंने उसे घबराया हुआ वहीं छोड़ दिया और बाघ द्वारा बनाए गए घसीटने के निशान का पीछा करने लगा। बाघ उस भूरे बैल को घसीटते हुए नीचे की ओर उस खाई की तरफ ले गया था जो उस छोटी पहाड़ी और एक चौथाई मील दूर स्थित एक और ऊँची पहाड़ी के बीच थी।

दुर्भाग्य से, मैंने इतनी जल्दी कारवाई की उम्मीद नहीं की थी, और शिकार के लिए मैं जिन रबर के तले वाले बूटों को पसंद करता था, उनके बजाय मैंने साधारण चमड़े के जूते पहने हुए थे। लाख कोशिश करने के बावजूद, ये जूते कठोर ज़मीन और बिखरे हुए पथरीले पत्थरों पर आवाज़ कर रहे थे। फिर भी, मैं जितना हो सके चुपचाप चलता रहा, जब तक कि मैं नाले के पास नहीं पहुँच गया। फिर मैं रुका और चारों ओर देखा। यहाँ झाड़ियाँ बहुत घनी थीं, और जहाँ नाला वास्तव में घुमावदार था, वहाँ और भी घनी हो गई थीं। मेरी नज़र सामने वाली छोटी पहाड़ी की ढलानों पर पड़ी, जो काफ़ी खुली हुई थीं। बाघ या बैल का कोई निशान दिखाई नहीं दिया, और यह स्पष्ट था कि उसने उसे नाले में कहीं छिपा रखा होगा, और संभवतः इस समय उसे खा रहा होगा। अगर वह वास्तव में उसे नहीं खा रहा था, तो वह निश्चित रूप से आसपास कहीं लेटा होगा।

मेरे जूतों ने मुझे बहुत नुकसान पहुंचाया था और वे उस नाले की ओर मेरी प्रगति में बाधक साबित हो सकते थे। अगर मैं उन्हें उतारकर मोजे पहने हुए आगे बढ़ने की कोशिश करता, तो लगभग निश्चित रूप से किसी कांटे पर पैर पड़ जाता,

और चारों ओर बिखरे नुकीले पत्थरों को तो बात ही छोड़िए। उसी समय, मुझे एहसास हुआ कि यह अवसर इतना अच्छा था कि इसे गंवाना नहीं चाहिए था, और इसे हर हाल में भुनाना चाहिए था। यह हज़ारों में एक मौका था, जो शायद मुझे दोबारा कभी न मिले। शाम के ठीक 5 बज रहे थे और सूर्यास्त में डेढ़ घंटा बाकी था।

जब मैं हालात पर विचार कर रहा था, तभी बाघ ने पहला वार किया। उसने मुझे साफ़-साफ़ सुन लिया था; शायद उसने मुझे देख भी लिया था। खैर, एक महान सेनापति की तरह उसने बगल से हमला करने का फैसला किया। मुझे ज़रा भी शक नहीं हुआ, वह उसी ढलान पर चढ़ गया था जहाँ से मैं नीचे आ रहा था, लेकिन थोड़े अलग कोण से, जिससे वह उस जगह के ऊपर और पीछे आ गया जहाँ मैं सोच रहा था। फिर वह पेट के बल रेंगता हुआ मेरी तरफ़ आया और मुझसे मुश्किल से दस फीट दूर एक बड़ी झाड़ी के पीछे छिप गया, और मुझे इसका बिल्कुल भी पता नहीं चला। इस मामले में, आने वाले खतरे को भांपने की मेरी छठी इंद्री बिल्कुल नाकाम रही। मैंने नाले की तरफ बढ़ने का फैसला ही किया था कि मेरे पीछे एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी और बाघ उछल पड़ा; मैं घूमा और एकदम करीब से गोली चलाई, लेकिन निशाना चूक गया।

शायद धमकि की आवाज़, शायद किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने की अजीब स्थिति जो स्पष्ट रूप से चरवाहा नहीं था, या शायद मेरे पहने हुए चमकीले लाल और नीले रंग के चेक वाले कोट ने उसे डरा दिया। क्योंकि ज़ोर-ज़ोर से भौंकते हुए वह झाड़ियों में और नाले की ओर भागा। मैं भी जितनी तेज़ी से हो सकता था उसके पीछे भागा और नाले के तल पर पहुँच गया, जहाँ मैं लगभग भूरे बैल पर गिर पड़ा। जाँच से पता चला कि बाघ ने मेरे आने की आहट या आभास होने से पहले ही अपना भोजन शुरू कर दिया था और हमले के लिए खुद ही आगे बढ़ गया था।

आस-पास कोई पेड़ नहीं थे, इसलिए मैं घनी झाड़ी के नीचे अंधेरा होने तक बैठा रहा, इस उम्मीद में कि शायद बाघ दोबारा दिखाई दे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, और 6:15 बजे मैं सावधानी से उसी रास्ते से वापस लौट आया। उस जगह पहुँचकर जहाँ मैंने अपने साथ आए चरवाहे को छोड़ा था, मैंने उसे वहाँ नहीं पाया और यह निष्कर्ष निकाला कि वह घर चला गया होगा। इसलिए मैं उस सड़क पर चला गया जहाँ मेरी स्टुडेबेकर कार खड़ी थी, और थोड़ी देर बाद राजनगर पहुँच गया।

यहां काफी भीड़ जमा थी, और उनमें से एक वन रक्षक से मुझे पता चला कि घायल चरवाहा अपनी पत्नी और भाई के साथ सत्यमंगलम् अस्पताल के लिए रवाना हो चुका था। मेरे साथ आया चरवाहा, जिसे मैंने बाघ के हमले वाली जगह पर छोड़कर अकेले ही घसीटने के निशान का पीछा किया था, वापस नहीं लौटा था।

मुझे पता था कि वह उस जगह पर नहीं था जहाँ मैंने उसे छोड़ा था, और यह भी कि मेरे जाने के बाद बाघ भाग गया था। चरवाहा कहाँ चला गया? हम सभी समझ गए थे कि वह जंगल में या सड़क पर, उस बाघ के आतंक से घिरे इलाके में नहीं रुकेगा। उसका क्या हुआ होगा? मैं इस सवाल पर सोच रहा था, जबकि उसकी पत्नी और परिवार, जो भीड़ में मौजूद थे और मेरी बातें सुन चुके थे, रोने-बिलखने लगे।

अब काफी अंधेरा हो चुका था, और लापता आदमी को खोजना नामुमकिन था, क्योंकि अगर बाघ उसे ले गया होता तो उसके कोई निशान नहीं मिलते। फिर भी, मैंने वन रक्षक को अपने साथ चलने के लिए कहा और वापस उसी जगह पर गाड़ी चलाकर गया जहाँ मैंने पहले गाड़ी छोड़ी थी। वहाँ हम थोड़ी देर रुके और मैंने वन रक्षक को उस आदमी को नाम से पुकारने का निर्देश दिया। इससे कोई नतीजा नहीं निकला। हम सड़क पर एक मील और आगे गए और फिर गाँव लौट आए। अब मुझे यह स्पष्ट हो गया था कि पिछली शाम का मेरा साथी बाघ ले गया था। जाहिर है, जब मैं

एक घंटा नाले में बैठकर बाघ के भूरे बैल के शव के पास लौटने का इंतजार कर रहा था, तब बाघ ने खुद ही कुछ शिकार किया और उस बेचारे चरवाहे को उठा ले गया।

उस रात हमें ज़्यादा नींद नहीं आई, क्योंकि जंगल में बने धर्मशाला के दरवाज़े पर बैठे उस आदमी के परिवार के रोने-धोने की आवाज़ें लगातार सुनाई दे रही थीं। आंसुओं से भरी उनकी आवाज़ों ने मुझे याद दिलाया कि मैं उसकी मौत के लिए ज़िम्मेदार था। यह बात मेरे अंतरात्मा पर बहुत गहरा असर डाल रही थी, क्योंकि अगर मैंने उस बेचारे को ज़बरदस्ती अपने साथ न लाया होता, तो वह आज ज़िंदा होता।

भोर होते ही मैं उस जगह की ओर वापस चल पड़ा जहाँ मैंने उसे छोड़ा था। वहाँ पहुँचकर मैंने संघर्ष के किसी भी निशान या बाघ के हमले के अन्य निशानों की तलाश शुरू की। लेकिन ज़मीन पर कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

अपनी खोज के दौरान मैं चारों ओर बड़े-बड़े घेरे बनाता चला गया, लेकिन फिर भी कुछ नहीं मिला। उसका क्या हुआ, यह एक रहस्य था। मुझे पता था कि पिछली शाम जब मैं बाघ का पीछा कर रहा था, तब वह मेरे पीछे नहीं आया था। ज़्यादा संभावना यही थी कि अकेले खड़े रहने के डर से वह सड़क की ओर वापस चलने लगा हो। इसी अनुमान पर चलते हुए, मैं अब पीछे मुड़ा और धीरे-धीरे अपने कदमों के निशान पर चलने लगा, चारों ओर उसके किसी निशान की तलाश करने लगा।

जहां मैंने उसे छोड़ा था, उससे लगभग तीन सौ गज दूर मुझे पहला सबूत मिला - एक अजीब चमड़े की चप्पल, और उससे थोड़ी ही दूर पर उसकी दूसरी चप्पल। इस जगह पर सूखी घास फैली हुई थी, इसलिए कोई पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे। लेकिन चप्पलों की स्थिति से मुझे स्पष्ट हो गया कि उसने उन्हें उतार फेंका था, ज़ाहिर तौर पर तेजी से भागने के लिए। चलते हुए चारों ओर खोजते हुए, मैंने अपने बाईं ओर एक झाड़ी के नीचे हवा में कुछ सफेद फड़फड़ाते हुए देखा। यह उस आदमी की धोती थी, जिसे भारत में लंगोटी कहते हैं। घास पर और झाड़ियों पर खून के छोटे-छोटे छींटे थे, और करीब से देखने पर पता चला कि बाघ झाड़ियों के बीच से होकर अपने शिकार तक कैसे पहुंचा था। यहां से बाघ उस आदमी को सड़क के लगभग समानांतर उसी नाले की ओर घसीटता हुआ ले गया, जहां मैं पिछली शाम बैठा था, लेकिन उस जगह से काफी आगे जहां उसने भूरे बैल को छिपाया था।

लगभग एक चौथाई मील चलने के बाद मैं अंततः इस छोटी नदी के पथरीले तल पर पहुंचा। वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था और पूरी तरह सन्नाटा था। मुझे पता था कि बाघ ने अवशेष कहीं आस-पास ही छिपाए होंगे।

चुपचाप देखते हुए, लगभग सौ गज़ नीचे की ओर एक जगह से दो मैनाओं ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। वे एक कंटीले बबूल के पेड़ की चोटी पर बैठी थीं, जहाँ वे उत्साह से चहचहा रही थीं और बार-बार नीचे की ओर देख रही थीं। जंगल के संकेत उन लोगों के लिए बहुत स्पष्ट होते हैं जो उन्हें समझ सकते हैं। मैनाओं ने या तो शव को ढूंढ लिया था, या वे बाघ को देख रही थीं, जो शायद मुझे देख रहा था।

नाले के बीचोंबीच चलते हुए, मैं दबे पांव आगे बढ़ने लगा, इस बार मैंने जो रबर के जूते पहने थे, उनसे चट्टानों पर कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। बबूल के पेड़ तक आधे रास्ते में ही, मैनाओं ने मुझे देखा, उनकी चहचहाहट बंद हुई और वे उड़ गईं।

मैंने उस जगह को चिह्नित कर लिया था जहां वे बैठे थे, और सावधानी से आगे बढ़ा। बबूल के पेड़ के ठीक नीचे, नदी के किनारे से एक छोटी, लंबी, काली चट्टान निकली हुई थी, और इस चट्टान के पीछे लापता मुनियाप्पा के आंशिक खाए हुए अवशेष पड़े थे। उस जगह की नरम रेत पर बाघ के पदचिह्न भी दिखाई दिए, और उनकी

सरसरी जाँच से पता चला कि वह जानवर एक नर बाघ था, जिसका आकार और बनावट बहुत बड़ी नहीं थी।

एक बार फिर, आस-पास कोई ऐसा पेड़ नहीं था जिस पर मैं बैठ सकूँ, सिवाय उस बबूल के पेड़ के, जो काँटों से भरा होने के कारण बैठने लायक नहीं था। संयोगवश, वहाँ कोई बड़ी झाड़ियाँ या बाँस के झुंड भी नहीं थे जिनके नीचे मैं शरण ले सकूँ। हर तरह से, वह जगह बैठने के लिए सबसे अनुपयुक्त, बल्कि असंभव ही थी, जितनी मैंने कभी देखी थी। फिर भी, मुझे कुछ तो करना ही था, क्योंकि अब तक मेरे मन में कोई संदेह नहीं रह गया था कि मैं, कम से कम अप्रत्यक्ष रूप से, और संभवतः प्रत्यक्ष रूप से, बेचारे मुनियाप्पा की मृत्यु का कारण था।

मुझे पता था कि बाघ दोपहर से पहले अपने भोजन के लिए वापस नहीं आएगा। अगर मैं शव को ऐसे ही छोड़ देता, तो गिद्ध उसे कुछ ही घंटों में देख लेते और सारा मांस नोच लेते। इसलिए मैंने अपना खाकी कोट उतारकर शव पर फैला दिया और आसपास पड़े छोटे-छोटे पत्थरों से उसे थोड़ा दबा दिया। फिर मैं गाड़ी में वापस गया और राजनगर लौट आया।

यहाँ मुझे बुरी खबर देनी पड़ी, जिससे न केवल फिर से रोना-धोना शुरू हो गया, बल्कि शोक संतप्त पत्नी ने अपने पति के शव को तुरंत अंतिम संस्कार के लिए वापस लाने की माँग भी की। उसे मनाने में हमें पूरा एक घंटा लग गया कि वह मुझे उस शाम शव के पास बैठकर बाघ की तस्वीर लेने का मौका दे, जो उसकी मनमानी में पूरी तरह से हाथ से निकल जाता। आखिरकार, उसने बड़ी अनिच्छा से सहमति दी।

नाश्ते के बाद, मैंने एक 'युद्ध परिषद' बुलाई, जिसमें गाँव का पटेल, वन रक्षक और मैं शामिल थे। मैंने उन्हें शव की स्थिति समझाई और बताया कि मैं दोपहर को वापस आऊँगा और बाघ के लौटने का इंतज़ार करते हुए शव के पास बैठ जाऊँगा। उन्हें यह विचार मूर्खतापूर्ण लगा और मैं भी उनसे पूरी तरह सहमत था। लेकिन चूँकि कोई बेहतर सुझाव नहीं दे सका, इसलिए मेरे पास इसे करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, अन्यथा शव को गाँव वापस लाना पड़ता और बाघ पर हमला करने का मौका हाथ से निकल जाता।

दोपहर के कुछ ही समय बाद, मैं शव से कुछ ही गज़ की दूरी पर बैठा था, जिससे एक बेहद अप्रिय गंध आ रही थी। दरअसल, लाखों मक्खियाँ मेरे कोट पर बैठ चुकी थीं, और जैसे ही मैंने उसे उतारा, वे शव पर टूट पड़ीं।

मैंने अप्रिय स्थिति के लिए तैयारी कर ली थी, अपनी नाक में रुई के छोटे-छोटे टुकड़े ठूंस लिए थे; लेकिन इन उपायों के बावजूद वह भयानक दुर्गंध मेरे अंदर तक घुस गई, और कुछ समय बाद मुझे उल्टी जैसा महसूस होने लगा। गर्मी असहनीय थी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, सिवाय आसपास की झाड़ियों की शाखाओं से आती झींगुरों की चहचहाहट के।

तीन बज गए, फिर चार और फिर पाँच। साढ़े पाँच बजे एक मोर नदी के किनारे आकर बैठ गया। मैं वहाँ बिल्कुल स्थिर बैठा था, उसने मुझे देखा तक नहीं, जिससे यह साबित होता है कि जंगल में बिल्कुल शांत रहना कितना ज़रूरी है। वह नदी के किनारे ऊपर की ओर बढ़ा और जब वह दस फीट दूर था, तभी उसे अपने सामने दो अजीब चीज़ों का एहसास हुआ। वह तेज़ी से और भारी-भरकम तरीके से हवा में उठा, उड़ने से पहले उसने अपने पंखों को ज़ोर से फड़फड़ाया ताकि उसे गति मिल सके।

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, उस समय मैं अत्यधिक उत्तेजना और उससे भी अधिक भय की स्थिति में था, और इसके अलावा, आधे खाए हुए आदमी से उठ रही भयानक दुर्गंध के कारण मुझे उल्टी आने वाली थी।

फिर पंद्रह मिनट तक पूर्ण सन्नाटा छाया रहा; एक ऐसा सन्नाटा जो सर्वव्यापी था, जो हमें घेर लेता था, जो हर जगह मौजूद था, यहाँ तक कि हवा में भी। न तो जंगली झींगुर की हल्की सी आवाज़ थी, न ही किसी नन्हे पक्षी की चहचहाहट, और न ही ज़मीन पर गिरते सूखे पत्ते की हल्की सी सरसराहट। बस एक पूर्ण और परम शांति। सन्नाटा ऐसा ही महसूस होता है, जब कोई आदमखोर के प्रकट होने का इंतज़ार कर रहा होता है।

हालांकि मैं बिल्कुल स्थिर बैठा था, मेरी आंखें सामने और दोनों ओर की झाड़ियों को बारीकी से देख रही थीं। मेरी सभी इंद्रियां पूरी तरह से सचेत थीं, लेकिन उन पर न तो कोई दृश्य और न ही कोई ध्वनि दर्ज हो रही थी।

नाले में थोड़ी दूर पर एक जंगली मुर्गे की मधुर बांग ने तनाव को कुछ हद तक कम कर दिया। छह बज गए, फिर छह बजकर पंद्रह मिनट हो गए। एक चिड़िया ने अपनी अनोखी चहचहाहट शुरू कर दी। मैं समझ गया कि अब मुझे जाने का समय आ गया है। थोड़ी देर में पूरी तरह अंधेरा हो जाएगा, और फिर खुले में आदमखोर के सामने बैठे रहना सचमुच आत्महत्या के समान होगा।

मैं लड़खड़ाते हुए उठा और वापस कार की ओर चला, जहाँ मैंने पहले से ही कुछ लोगों को बुलाया था ताकि वे दुर्भाग्यशाली मुनियाप्पा के अवशेष वापस ला सकें। जब मैंने उन्हें इकट्ठा किया तब तक काफी अंधेरा हो चुका था। लेकिन मुझे पता था कि मेरी टॉर्च की रोशनी और उनकी संख्या हमें बाघ के किसी भी हमले से बचा लेगी। हम वापस खाई में गए, जहाँ हमने उस अभागे चरवाहे के अवशेषों को एक पुराने कंबल में लपेटा, जिसे वे लोग इसी उद्देश्य से अपने साथ लाए थे। फिर, जब छोटा जुलूस राजनगर की ओर बढ़ रहा था, मैं अपनी कार से वापस सड़क पर चल पड़ा।

अगले दिन सुबह-सुबह मैं फिर से उस छोटे नाले के पास मंडरा रहा था। बाघ उस जगह पर नहीं लौटा था जहाँ शव था, क्योंकि वहाँ कोई पदचिह्न नहीं थे। तब मैंने उस नाले के किनारे-किनारे उस जगह की ओर चलने का फैसला किया जहाँ दो दिन पहले भूरे बैल को छोड़ा गया था। मैं बहुत सावधानी से चल रहा था, क्योंकि नाले का किनारा कहीं-कहीं छह फुट से भी कम चौड़ा था और कहीं-कहीं पत्थरों का ढेर था या पूरी तरह से लैंटाना झाड़ियों से ढका हुआ था। भूरे बैल को उस जगह से आधे मील से भी ज़्यादा दूर छिपाया गया था जहाँ उस आदमी को खाया गया था। उसे एक झुकी हुई झाड़ी के नीचे अच्छी तरह से छिपाया गया था, जिसके बारे में मुझे पता था कि वह गिद्धों से सुरक्षित है। लेकिन जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मैंने पाया कि बाघ रात में लौट आया था और उसे पूरी तरह से नष्ट कर चुका था। शायद उसने अपने शिकार में रुचि खो दी थी या हो सकता है कि उसने मुझे शाम को उसके पास बैठे हुए देखा हो और उसे शक हो गया हो। खैर, बात यह थी कि वहाँ कुछ भी नहीं बचा था और मुझे बाघ से मिलने के लिए दूसरे तरीके आज़माने होंगे।

उस दिन दोपहर तक और फिर शाम को भी मैं पहाड़ियों और घाटियों में, नदियों के किनारे-किनारे घूमता रहा। कई बार मुझे बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए, लेकिन मैंने उसे एक बार भी नहीं देखा, न ही आसपास उसकी उपस्थिति का कोई संकेत मिला।

मैंने इस तरह तीन दिन बिताए, लेकिन परिणाम पूरी तरह से नकारात्मक रहे। मैंने केवल एक सप्ताह की छुट्टी ली थी और बाघ का शिकार करने के लिए मेरे पास मुश्किल से चार दिन बचे थे।

अगली सुबह मैंने नई रणनीति अपनाई। इलाके के बीचोंबीच स्थित एक बड़ी पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर, मैंने बाघ की तरह पूरी ताकत से आवाज़ लगाई। हर दस मिनट में मैं यही आवाज़ दोहराता रहा, इस उम्मीद में कि कोई जवाब मिलेगा। दो घंटे

बाद मैंने पास की एक पहाड़ी पर भी यही किया। कोई आवाज़ नहीं आई। शाम को भी मैंने यही तरीका अपनाया, लेकिन बाघ ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। तब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि वह आस-पास कहीं नहीं था।

पाँचवें दिन चरवाहे अपने मवेशियों के साथ फिर निकले। आप, जो इसे पढ़ रहे हैं, शायद इसे उनकी ओर से एक बहुत ही साहसी कार्य मानें, और निस्संदेह यह था भी। लेकिन आपको यह भी समझना होगा कि मवेशी अपने भोजन के लिए पूरी तरह से चरागाह पर निर्भर थे। चरागाह न होने का मतलब भोजन न होना था, क्योंकि किसी भी मवेशी गाँव में चारे के भंडार की व्यवस्था नहीं की गई थी।

उस सुबह मैं चरवाहों के साथ उनके जानवरों के बीच घूमने लगा, और शाम को भी मैंने यही किया। लेकिन रात हो गई और बाघ का कोई अता-पता नहीं चला। छठी सुबह मैं बहुत निराश था, क्योंकि मुझे लगा कि जिस जानवर की मैं तलाश कर रहा था, वह कहीं दूर चला गया है और मुझे उसे पकड़ने का दूसरा मौका नहीं देगा। लेकिन मैं और कुछ नहीं कर सकता था, सिवाय इसके कि उस इलाके में चर रहे मवेशियों के अलग-अलग झुंडों के साथ मिल जाऊं।

उस सुबह मैंने कई मील की दूरी तय की और मुनियाप्पा की हत्या के स्थान से लगभग आठ मील दूर था, तभी दोपहर के आसपास पुरुषों का एक समूह झाड़ियों से दौड़ता हुआ मेरे पास आया और मुझे बताया कि तीन मील दूर एक अन्य चरवाहे पर हमला हुआ है।

मैं उनके साथ जल्दी से उस जगह पहुँचा जहाँ वह आदमी लेटा हुआ था। मुझे एक बार फिर वही जाने-पहचाने निशान दिखाई दिए: चेहरे, छाती और बगल में गहरे खरोंच के निशान, लेकिन काटने का कोई निशान नहीं था। उस आदमी का बहुत खून बह चुका था और वह चलने में बहुत कमजोर था, इसलिए मैं जल्दी से अपनी कार में वापस गया और आदमियों को उसे सड़क तक ले जाने का निर्देश दिया। वहाँ से मैं उसे सत्यमंगलम ले गया, जहाँ मैंने उसे स्थानीय अस्पताल में बहुत बुरी हालत में छोड़ दिया। फिर मैं वापस सड़क पर उस जगह पर भागा जहाँ उसे ले जाया गया था, कार वहीं छोड़ दी और वापस जंगल में चला गया। उसके पीछे छोड़े गए खून के निशानों का पीछा करने में कोई कठिनाई नहीं हुई, और इसी निशान ने मुझे हमले की जगह तक पहुंचा दिया।

इस मामले में मुझे पता चला कि बाघ मवेशियों में से किसी को भी मारने में सफल नहीं हुआ था, जो भगदड़ मचाते हुए सड़क की ओर भाग गए थे। इसलिए बाघ की तलाश एक बार फिर निष्फल प्रयास प्रतीत हुई। मैं इधर-उधर भटकता रहा और बीच-बीच में बाघ की तरह आवाजें निकालता रहा, इस उम्मीद में कि वह मेरी ओर आकर्षित हो। कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली और इस तरह एक और दिन समाप्त हो गया।

उस रात मैंने सोचा कि झाड़ियों से होकर गुजरने वाली लगभग पाँच मील लंबी सड़क पर गाड़ी चलाकर, स्पॉटलाइट का इस्तेमाल करते हुए, बाघ की आँखों को देखने की कोशिश करूँ, अगर वह कहीं आस-पास से गुजरे। मैंने रात लगभग 10 बजे इस योजना पर अमल करना शुरू किया, धीरे-धीरे गाड़ी चलाते हुए, हर चक्कर के अंत में पंद्रह मिनट का ब्रेक लेते हुए। इस नीरस प्रक्रिया के छह घंटे बाद मैं बुरी तरह से नींद में था और पेट्रोल भी बहुत कम बचा था।

इस तरह मेरी छुट्टी का सातवाँ और आखिरी दिन शुरू हुआ। हाल ही में हुए हमले के बाद चरवाहे अपने मवेशियों के साथ बाहर नहीं निकले थे, इसलिए आखिरी बार मैं अकेले झाड़ियों के बीच भटकता रहा, इस उम्मीद में कि शायद मुझे वह

मायावी बाघ मिल जाए। दोपहर तक मैं अपनी कार से लगभग छह मील दूर था, तभी मैं मुड़ा और वापस लौटने लगा।

मैं पहाड़ी से नीचे उतर रहा था और उसके तल पर बने छोटे गड्ढे तक पहुँच ही गया था कि मेरे सामने एक और पहाड़ी खड़ी हो गई। इस घाटी में कोई धारा नहीं बहती थी, और यहाँ कुछ बौने बबूल के पेड़ थे, जो आम लैंटाना और अन्य झाड़ियों के बीच उग रहे थे। लगभग पचास गज आगे, बाघ अचानक प्रकट हुआ। हम दोनों ने एक ही क्षण में एक-दूसरे को देखा, और फिर एक छोटी सी छलांग लगाकर वह लैंटाना के झुंड के पीछे गायब हो गया।

राइफ़ल को कंधे पर उठाकर मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा, इस उम्मीद और आशा के साथ कि वह मुझ पर हमला करेगा और मेरी नज़र में आ जाएगा। उसी समय मैं बुरी तरह डरा हुआ था और मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

हमला हुआ ही नहीं! मानो उसकी छठी इंद्री ने उसे बता दिया था कि यहाँ कोई पीड़ित नहीं, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति है जो जानबूझकर उसे नष्ट करने आया है। वह मेरे झाड़ी के पास पहुँचने से पहले ही भाग गया होगा, क्योंकि वह वहाँ बिल्कुल नहीं था। मैंने उसके चारों ओर घूमकर हर जगह तलाशा, लेकिन वह मुझे फिर कभी नहीं मिला।

इस प्रकार मेरा सातवां और अंतिम दिन समाप्त हुआ। अब मेरे लिए बैंगलोर और अपने कर्तव्य पर लौटने का समय आ गया था।

हालांकि यह एक असफल शिकार की कहानी है—वास्तव में, पूरी तरह से नाकामयाबी की कहानी—मैंने इसे इसलिए बताया है ताकि पाठक यह समझ सकें कि ऐसे रोमांच हमेशा सफलता से परिपूर्ण नहीं होते। नाकामयाबी और निराशा कहीं अधिक आम हैं। लेकिन कड़ी मेहनत, अथक प्रयास, शिकार का रोमांच, मानवीय बुद्धि और पशु प्रवृत्ति के बीच संघर्ष—ये सभी कारक मौजूद हैं, और काफ़ी हद तक उत्साही व्यक्ति को उसकी नाकामयाबी की भरपाई करते हैं। हालांकि मुझे वास्तव में दुख हुआ कि मुझे चरवाहों को, कम से कम कुछ समय के लिए, इस जानवर के लगातार हमलों के भरोसे छोड़ना पड़ा, फिर भी मुझे इस बात का संतोष था कि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया और मैं वापस लौटने की उम्मीद कर रहा था, जब शायद मुझे बेहतर किस्मत मिले।

मैंने मुनियाप्पा की विधवा को एक चेक सौंपा और बैंगलोर लौटने की अपनी यात्रा के शुरुआती बिंदु पर उस पांच मील लंबे रास्ते पर चल पड़ा। जैसे ही कांटेदार झाड़ियाँ कार के पीछे से गुज़रती गईं, मैंने उस बेहद चालाक और असाधारण बाघ को अस्थायी विदाई दी, जिसने न केवल हर मुठभेड़ में मुझे मात दी थी, बल्कि अपने शिकारों को काटने के बजाय केवल खरोंचने की अपनी विचित्र आदत का कारण भी सफलतापूर्वक छिपा रखा था—सिवाय उन लोगों के जिन्हें उसने वास्तव में मार डाला था।

Called upon to rid the affected locality of the prowling man-eaters, Anderson the hunter rises to the occasion. Step by step he takes the reader through the adventure, explaining his modus operandi and the terrible excitement and lurking danger. Stirring tales of wild animal's cunning pitted against human wit and presence of mind told by the ace hunter and master story-teller himself.

Kenneth Anderson (1910-74) hailed from a Scottish family settled in India for six generations. His love for the denizens of Indian jungle led him to big game hunting and eventually to writing real-life adventure stories. His book are hailed as classics of jungle lore.